1 आधुनिक काल में विश्व

अभ्यास

(क) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. नए सामुद्रिक मार्गों की खोज-जिज्ञासा की जिस भावना ने यूरोप में पुनर्जागरण काल के लोगों को साहित्य, विज्ञान, कला और धर्म के क्षेत्रों में नए विचार व्यक्त करने के लिए प्रेरित किया था। इसी भावना ने कुछ साहसी खोजी लोगों को नए देशों को खोजने की प्रेरणा दी। इन साहसिक यात्राओं का प्रमुख उद्देश्य पूर्व के देशों के साथ व्यापार करके मुनाफा कमाना था। ये लोग पूर्व की समृद्धि से बहुत आकर्षित थे। पुर्तगाली नाविक वास्को डिगामा अफ्रीका के दक्षिणी छोर का चक्कर लगाकर 1498 ई० में भारत के कालीकट (केरल) बंदरगाह पहुँच गया। इटली का नाविक कोलंबस 1492 ई० में पश्चिम की ओर यात्रा करते हुए अटलांटिक महासागर को पार कर बहामास द्वीपों तक पहुँच गया, जिन्हें वह मृत्युपर्यंत भारतीय द्वीप समझता रहा। मैगलन ने 1520 ई० में मैगलन जल-संयोजक पार कर विश्व का चक्कर लगाने का बीड़ा उठाया। इन महान खोज यात्राओं का उद्देश्य यद्यपि लाभ कमाना था, फिर भी इन खोजों ने संसार के विषय में मनुष्य की धारणा बदल दी, व्यापार में क्रांति ला दी और उपनिवेशवाद का सूत्रपात किया।

यूरोप में परिवर्तन–इसी दौरान यूरोप में धर्म-सुधार आंदोलन ने धर्म क्षेत्र में नए मूल्यों का प्रसार किया। मध्यकालीन चर्च का राजनीतिक वर्चस्व समाप्त हो गया। उदारतावादी धारणाओं तथा विचारों की प्रगति हुई। प्रिंटिंग मशीन के आविष्कार ने शिक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन किए। विश्वविद्यालयों में आधुनिक विज्ञान की नींव रखी गई। इससे तर्क व प्रयोगों के आधार पर जिज्ञासु प्रवृत्ति को प्रोत्साहन मिला।

मध्य युग में यूरोप में सामंतवाद की राजनीतिक-आर्थिक व्यवस्था प्रचलित थी, जो पंद्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में 'गुलाबों का युद्ध' के साथ समाप्त हो गई। सोलहवीं शताब्दी में इंग्लैंड एक शक्तिशाली राजतंत्र बन गया। स्पेन, पुर्तगाल व हॉलैंड भी राष्ट्र-राज्यों के रूप में विकसित

होने लगे। यूरोप में प्रत्येक राज्य में राष्ट्रीयता की भावना प्रबल होने लगी, किंतु राष्ट्र-राज्यों के शासक निरंकुश थे। जनता ने राजाओं के निरंकुश अधिकारों का विरोध करना तथा राजसत्ता में भागीदारी की माँग शुरू कर दी, जिसके फलस्वरूप सत्रहवीं शताब्दी में इंग्लैंड में क्रांति हुई। यह एक गौरवमयी रक्तहीन क्रांति थी।

1500-1700 ई० के मध्य यूरोप के इतिहास में जबरदस्त परिवर्तन हुए। अनेक यूरोपीय देशों में सामंतवादी व्यवस्था का विघटन हो गया। उसके स्थान पर एक नई समाज-व्यवस्था उदित हुई। पुनर्जागरण के साथ जन्में नए मानसिक दृष्टिकोण की अभिव्यक्ति कला, साहित्य, धर्म तथा साहसिक खोज अभियानों के रूप में हुई। नए देशों की खोज के बाद वहाँ उपनिवेश बनाए गए। इससे व्यापार बढ़ा और पूँजीवाद विकसित हुआ।

2. आधुनिक काल में दो उल्लेखनीय क्रांतियाँ हुई थीं, जो निम्नलिखित हैं–

(i) **अमेरिकी क्रांति–**उत्तरी अमेरिका में इंग्लैंड से आए अनेक लोग बस गए थे, परंतु उन्हें वे अधिकार नहीं दिए गए थे जो इंग्लैंड में बसे हुए अंग्रेजों को मिले हुए थे। इंग्लैंड सरकार ने इन क्षेत्रों को अपना उपनिवेश बना लिया था। उत्तरी अमेरिका में बसे हुए ये लोग इंग्लैंड की सरकार के अधीन थे। अंग्रेजी सरकार उनसे कर वसूल करती थी। करों में वृद्धि होती गई और वाणिज्य व्यवस्था तथा प्रशासन पर अनेक प्रकार के प्रतिबंध लगाए गए तो उपनिवेशों में रहने वाले लोग विरोध करने लगे। वे अपने को अमेरिकी मानने लगे और माँग करने लगे कि उनका राष्ट्र इंग्लैंड से स्वतंत्र होना चाहिए। 4 जुलाई, 1716 ई० को तेरह उपनिवेशों के प्रतिनिधि आपस में मिले और उन्होंने स्वतंत्रता की घोषणा की और इस घोषणा में कहा गया कि सभी मनुष्य जन्मजात समान हैं तथा मनुष्य को कतिपय जन्मसिद्ध अधिकार प्राप्त हैं, उन्हें कोई नहीं छीन सकता। अतः इन्हें स्वतंत्रता मिली और उन्होंने गणतंत्र प्रणाली की सरकार स्थापित की। अतः इस प्रकार संयुक्त राज्य अमेरिका बना।

(ii) **फ्रांसीसी क्रांति–**स्वतंत्रता के पूर्व फ्रांस सत्ता वर्ग के विशेषाधिकारों तथा निरंकुश शासन से ग्रस्त था। राजा लुई चौदहवाँ अनेक कमजोरियों के बावजूद अपनी प्रजा के हित का ध्यान रखता था। उसके उत्तराधिकारी कमजोर व अयोग्य थे, जो केंद्रीकृत बादशाही सरकार चलाने में नितांत अक्षम थे। फ्रांस के समाज में विषमता का बोलबाला होने से एकता का

अभाव था। विशेषाधिकारयुक्त कुलीन व चर्च के धर्माधिकारी वर्गों को राज्य के प्रति किसी कर्तव्य के बिना सभी अधिकार प्राप्त थे। इसके विपरीत मध्यम वर्ग (बूर्जुआ), किसान, मजदूर आदि के पास कोई विशेषाधिकार न थे। फ्रांस की अर्थव्यवस्था की दशा भी अच्छी न थी। बार-बार युद्धों तथा राजा व उसके उच्चाधिकारियों द्वारा अनाप-शनाप धन व्यय होने से राज्य का खजाना खाली था। विशेषाधिकारयुक्त वर्गों पर कोई कर नहीं लगता था, जबकि निर्धन, निम्न वर्ग करों के भार से झुके थे। फ्रांस जब अमेरिका के स्वतंत्रता संग्राम में कूदा, तो राजकीय कोष पर गहरा आर्थिक संकट छा गया। इसकी भरपाई के लिए लुई सोलहवें ने 1789 ई० में सभी वर्गों की आमसभा बुलाई, जिससे आर्थिक संकट का कोई हल निकल सके।

लुई सोलहवें के आह्वान पर आमसभा 176 वर्ष बाद आयोजित हुई, इसमें तीन स्तरों के लोग सम्मिलित थे–चर्च के पादरी, कुलीन और साधारण लोगों के चुने हुए प्रतिनिधि। इनमें तृतीय वर्ग का प्रतिनिधित्व कम होने के कारण भी विषय पर उनके मत का कोई महत्त्व नहीं होता था। इसलिए तीसरे वर्ग ने यह माँग रखी कि उसके प्रत्येक सदस्य को एक मत देने का अधिकार मिलना चाहिए। प्रथम दो वर्गों ने इस माँग को खारिज कर दिया, जिससे क्रुद्ध होकर तीसरे वर्ग ने 17 जून, 1789 ई० को स्वयं को राष्ट्रीय सभा घोषित कर दिया। इस दबाव के कारण राजा ने असेंबली हॉल के दरवाजे बंद करा दिए, जिससे तीसरे वर्ग के लोग क्रांतिकारी गतिविधियाँ न कर सकें। तब तीसरे वर्ग के सदस्यों ने निकटवर्ती टेनिस कोर्ट में एकत्रित होकर शपथ ली कि जब तक नया संविधान नहीं बनेगा, तब तक वे नहीं हटेंगे। अंततः उनकी विजय हुई तथा राष्ट्रीय सभा का निर्माण हुआ। आंदोलनकारियों ने राजकीय जेल बेस्टील के दरवाजे तोड़कर कैदियों को रिहा कर दिया। बेस्टील का पतन फ्रांस की स्वतंत्रता का सूचक था। पेरिस में एक नागरिक सरकार की स्थापना की गई तथा व्यवस्था कायम रखने के लिए 'राष्ट्रीय गार्ड' का गठन किया गया और शीघ्र ही अन्य प्रांतों में भी क्रांति फैल गई। कुलीनों ने अपने विशेषाधिकार स्वेच्छा से त्याग दिए। समानता के सिद्धांत की विजय हुई तथा पुराने शासन का अंत हुआ।

राष्ट्रीय सभा ने संविधान सभा का गठन किया। अधिकारों का घोषणा-

पत्र तैयार किया गया। इसमें घोषणा की गई कि सभी मनुष्य स्वतंत्र हैं और उनके समान अधिकार हैं तथा यह भी कहा गया कि राज्य की संप्रभुता उसके लोगों में है। राजा से भी शक्तियाँ छीन ली गईं तो उसने सपरिवार फ्रांस से भागने की कोशिश की, किंतु वह असफल रहा। फ्रांस में गणतंत्र की स्थापना हुई, 21 दिसंबर, 1792 ई० को राष्ट्रीय कन्वेशन बुलाया गया और राजा पर मुकदमा चलाकर उसे फाँसी दे दी गई।

3. औद्योगिक क्रांति के अनेक प्रत्यक्ष तथा परोक्ष प्रभाव हुए, जिन्हें निम्नलिखित संदर्भों में देखा जा सकता है–

(i) नगरीकरण की वृद्धि–औद्योगिक क्रांति के पूर्व अधिकांश जनसंख्या गाँवों में खेती द्वारा जीवन यापन करती थी। प्रायः ये गाँव आत्मनिर्भर इकाई होते थे। कस्बे और शहर शिल्प तथा प्रशासन के केंद्र होते थे। व्यापार देश के अंदर ही होता था, किंतु औद्योगिक विकास होने पर शहर आर्थिक विकास के केंद्र बन गए। अनेक नगर औद्योगिक विकास के फलस्वरूप विकसित हुए। ये शहर घनी आबादी के केंद्र होते थे। आज भी यूरोप तथा अमेरिका की 80% या अधिक आबादी शहरों में रहती है। एशियाई देशों की स्थिति भिन्न है। वही औद्योगिक विकास कम होने के कारण अधिकांश आबादी आज भी भूमि (कृषि) पर निर्भर है।

(ii) पूँजीवाद का उदय–औद्योगिक क्रांति के बाद औद्योगिक पूँजीवाद का उदय हुआ। यह एक ऐसी सामाजिक अर्थव्यवस्था है, जिसमें पूँजी अर्थात् उत्पादन के समस्त साधनों का संकेंद्रण कुछ ही लोगों (कारखाना मालिकों) के हाथ में होता है। ये पूँजीपति लोग बहुधा मजदूरों का निर्माण करते हैं। इससे समाज में आर्थिक असमानताएँ पैदा होती हैं। मजदूरों का जीवन शोचनीय हो जाता है। इन आर्थिक असमानताओं के कारण वर्ग-संघर्ष पैदा होता है। विभिन्न औद्योगिक देशों में कई प्रकार के वर्ग-संघर्ष होते रहे हैं।

(iii) नए राजनीतिक विचारों का उदय–रॉबर्ट ओवेन, सेंट साइमन तथा कार्ल मार्क्स जैसे राजनीतिक चिंतकों ने समाजवाद तथा साम्यवाद के सिद्धांतों को जन्म दिया। उनका यह निश्चित मत था कि जीवन में बुनियादी सुधार लाने के लिए समाज की पुनर्रचना अति आवश्यक है।

(iv) साम्राज्यवाद का प्रसार–15वीं शताब्दी से ही पुर्तगाल, हालैंड, इंग्लैंड, फ्रांस और डेनमार्क आदि यूरोपीय देशों के नाविक तथा व्यापारी एशियाई देशों से मसाले, वस्त्र, चाय, चीनी, रेशम आदि का व्यापार

करते थे। औद्योगिक क्रांति होने पर यूरोपीय देशों के कारखानों में सामान का उत्पादन बड़ी मात्रा में होने लगा तब उन्हें अधिकाधिक कच्चे माल के स्रोतों तथा तैयार माल को बेचने के लिए बाजारों की आवश्यकता हुई। वस्त्र उद्योग के लिए कपास की बहुत आवश्यकता हुई, जो एशिया के उष्ण कटिबंधीय क्षेत्रों की उपज थी। अतएव यूरोपीय देश एशिया तथा अफ्रीका के देशों से अधिकाधिक व्यापार करने लगे। इन देशों ने एशियाई बाजारों पर अपना नियंत्रण स्थापित करना शुरू कर दिया। बाजारों पर नियंत्रण के लिए यूरोपीय देशों में परस्पर गहरी स्पर्द्धा रहती थी। इस स्पर्द्धा में इंग्लैंड का वर्चस्व था। भारत, श्रीलंकासहित अनेक देशों में इंग्लैंड ने अपनी प्रभुता स्थापित कर ली।

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. 1500-1700 ई० के मध्य यूरोप के इतिहास में जबरदस्त परिवर्तन हुए। अनेक यूरोपीय देशों में सामंतवादी व्यवस्था का विघटन हो गया और उसके स्थान पर एक नई समाज-व्यवस्था उदित हुई। पुनर्जागरण के साथ जन्में नए मानसिक दृष्टिकोण की अभिव्यक्ति कला, साहित्य, धर्म तथा साहसिक खोज अभियानों के रूप में हुई। नए देशों की खोज के बाद वहाँ उपनिवेश बनाए गए। इससे व्यापार बढ़ा और पूँजीवाद विकसित हुआ।

2. ब्रिटेन में औद्योगिक क्रांति होने पर भारत में कृषि का व्यापारीकरण प्रारंभ हुआ। चूँकि ब्रिटेन अपने वस्त्राद्योग के लिए भारतीय कपास पर निर्भर था; अतः उसने भारत में कपास की खेती के विकास में विशेष रुचि ली। नील, चाय, कहवा तथा जूट की बागानी खेती को भी प्रोत्साहन दिया गया। ये बागान ब्रिटिशों द्वारा नियंत्रित थे। बागानी फसलों के अंतर्गत क्षेत्र में वृद्धि होने से खाद्यान्नों के अंतर्गत क्षेत्रफल बहुत घट गया। अतएव भारतीय किसानों को इस नीति से अत्यधिक कष्टों का सामना करना पड़ा।

भारतीय हस्त-निर्मित सूती व रेशमी वस्त्रोद्योग को हानि होने लगी। बंगाल, बिहार व उड़ीसा के वस्त्र-कारीगर बेकार होने लगे।

3. आधुनिक भारत के प्रमुख स्रोतों को मुख्यतया दो समूहों–प्राथमिक स्रोतों तथा द्वितीयक अथवा गौण स्रोतों में विभाजित किया गया है। प्राथमिक स्रोतों में मूल दस्तावेज जैसे साहित्यिक स्रोत, मुद्रित दस्तावेज, सरकारी विज्ञप्तियाँ, चित्रकारी तथा श्रव्य टेप शामिल हैं। द्वितीयक अथवा गौण

स्रोतों में पुस्तकें, लेख तथा उन विद्वानों एवं इतिहासकारों के पुनरावलोकन सम्मिलित हैं, जिन्होंने प्राथमिक स्रोतों का विश्लेषण किया है। ये हमारे लिए विज्ञप्तियों, पुनरावलोकन, लेखों तथा पुस्तकों के रूप में उपलब्ध हैं।

(ग) अतिलघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. भारत के कालीकट बंदरगाह पर पहुँचने वाला नाविक वास्कोडिगामा था।

2. फ्रांसीसी क्रांति के तीन प्रमुख आधार थे–स्वतंत्रता, समानता तथा बंधुत्व।

3. औद्योगिक क्रांति से भारत को हस्तनिर्मित सूती वस्त्र व रेशमी वस्त्रोद्योग को हानि होने लगी।

(घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

I. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

उत्तर– 1. (i) इटली 2. (iii) 1500-1700 के मध्य

परियोजना कार्य

छात्र स्वयं करें।

2 भारत में ब्रिटिश शक्ति का उत्थान

अभ्यास

(क) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. फ्रांसीसियों तथा ब्रिटिशों के बीच कर्नाटक में तीन युद्ध हुए जिनका वर्णन निम्नलिखित है–

(i) **कर्नाटक का प्रथम युद्ध (1746-1748)–**अंग्रेजों और फ्रांसीसियों के बीच सबसे पहले कर्नाटक में संघर्ष शुरू हुआ। सन् 1740-48 के दौरान यूरोपीय ऑस्ट्रियाई उत्तराधिकार को लेकर फ्रांसीसी और अंग्रेज परस्पर विरोधी थे। उस समय डूप्ले पांडिचेरी में फ्रांसीसी कंपनी का मुख्य अधिकारी था। इंग्लैंड और फ्रांस के बीच यूरोप में युद्ध शुरू हुआ, तो फ्रांसीसियों ने फोर्ट सेंट चर्च को लूटा और जब कर्नाटक के नवाब ने देखा कि उसके प्रांत में फ्रांसीसियों की शक्ति बढ़ती जा रही है, तो उनके खिलाफ एक सेना भेजी परंतु कर्नाटक की सेना हार गई। सन् 1748 में

यूरोप में शांति समझौता हुआ, तब फ्रांसीसियों ने अंग्रेजों को मद्रास वापस कर दिया।

(ii) **कर्नाटक का द्वितीय युद्ध (1749-1754)**–अंग्रेजों और फ्रांसीसियों के बीच यह शांति अधिक समय तक नहीं टिक सकी। फ्रांसीसियों के विरुद्ध लड़ाई में कर्नाटक का नवाब मारा गया तथा उसी दौरान निजाम की भी मृत्यु हो गई। अब उत्तराधिकार के सवाल को लेकर विवाद उत्पन्न हो गया। फ्रांसीसियों ने मुजफ्फरजंग को नवाब बना दिया। कर्नाटक के नवाब के पद के लिए दोनों कंपनियों ने अलग-अलग उम्मीदवारों का समर्थन किया। अंग्रेज मुहम्मद अली को कर्नाटक का नवाब बनाना चाहते थे, परंतु फ्रांसीसियों ने चाँद साहब को कर्नाटक का नवाब बना दिया। इसी कारण अंग्रेजों ने क्लाइव को 1751 ई० में एक छोटी सेना लेकर आर्काट भेजा। इस युद्ध में फ्रांसीसियों की हार हुई और चाँद साहब का सिर काट दिया गया। डूप्ले को फ्रांस वापस बुला लिया गया और दोनों कंपनियों के बीच शांति समझौता हुआ। निजाम ने मुहम्मद अली को कर्नाटक का नवाब मान लिया। इसके परिणामस्वरूप कर्नाटक में फ्रांसीसी कंपनी के स्थान पर अंग्रेजी कंपनी का आधिपत्य स्थापित हो गया।

(iii) **कर्नाटक का तृतीय युद्ध (1756-1763)**–यूरोप में 1756 ई० में पुनः फ्रांस और इंग्लैंड के बीच सप्तवर्षीय युद्ध छिड़ जाने से भारत में भी अंग्रेजों और फ्रांसीसियों के बीच फिर से संघर्ष आरंभ हो गया क्योंकि हारने पर भी हैदराबाद में फ्रांसीसियों का प्रभाव बरकरार रहा। उनकी फौज के खर्च के लिए निजाम ने उन्हें राजस्व-वसूली का अधिकार दे दिया। निजाम की रक्षा के नाम पर उन्होंने अपनी सेना की सहायता से उस पर अपना नियंत्रण स्थापित कर लिया।

2. राबर्ट क्लाइव ने नवाब के विरुद्ध षड्यंत्र रचा और उसके प्रधान सेनापति मीरजाफर के साथ गुप्त समझौता कर लिया। 23 जून, 1757 ई० को प्लासी के मैदान में हुई लड़ाई में क्लाइव की सेना में 3000 सैनिक थे, जबकि नवाब की सेना में 50,000 सैनिक थे। क्लाइव के तोपखाने ने नवाब की सेना में खलबली मचा दी, तभी मीरजाफर क्लाइव के साथ मिल गया। नवाब को बंदी बनाकर मार डाला गया। प्लासी का यह युद्ध निर्णायक सिद्ध हुआ तथा इसके दूरगामी प्रभाव हुए। इस युद्ध ने

अंग्रेजों की व्यापारिक कंपनी को एक राजनीतिक शक्ति बना दिया, अंग्रेजों ने अपने पाँव भारत में जमाए तथा भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की नींव डाली।

समझौते के अनुसार मीरजाफर को बंगाल का नवाब घोषित किया गया। कंपनी ने बंगाल के मामलों में दखल देना शुरू कर दिया। मीरजाफर अंग्रेजों के हाथ की कठपुतली बन गया। उसके आपत्ति करने पर अंग्रेजों ने उसे अपदस्थ करके उसके दामाद मीर कासिम को बंगाल का नवाब बना दिया।

मीर कासिम एक योग्य, कुशल तथा कठोर शासक था। उसने बंगाल और बिहार के विद्रोही जमींदारों को दबाया तथा अपनी सेना को यूरोपीय पद्धति पर संगठित करने का प्रयास किया। उसने बंदूकें बनाने की भी व्यवस्था की। उसने अपनी राजधानी मुर्शिदाबाद से हटाकर मुंगेर (पटना) में स्थापित की। उसने कंपनी के कर्मचारियों द्वारा निजी व्यापार को समाप्त करने की कोशिश की, जिससे अंग्रेज नाराज हो गए। उन्होंने 1763 ई० में मीरजाफर को पुनः नवाब बना दिया।

3. अंग्रेजों और हैदर अली के बीच दो युद्ध हुए। चौथा आंग्ल-मैसूर युद्ध-चतुर्थ आंग्ल-मैसूर युद्ध के समय लॉर्ड वेलेजली भारत का गवर्नर जनरल था। वेलेजली ''भारत में ब्रिटिश साम्राज्य को भारत का ब्रिटिश साम्राज्य'' बनाने की मंशा से आया था। अपने इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए उसने 'सहायक संधि की नीति' बनाई। इस संधि के नियम सरल थे। भारतीय शासक, जिन्हें इस संधि के लिए आमंत्रित किया जाता था, उनसे यह अपेक्षा की जाती थी कि वे ब्रिटिश अनुमति के बिना किसी अन्य शक्ति से न तो लड़ाई करेंगे और न ही किसी प्रकार का संबंध रखेंगे। ऐसे राज्य की आंतरिक शांति और व्यवस्था बनाए रखने के लिए उसे ब्रिटिश जनरलों के नियंत्रण में एक सेना रखनी पड़ती थी, जिसके खर्च को वहन करने के लिए इस राज्य को अपने क्षेत्र का एक हिस्सा कंपनी को देना पड़ता था या वार्षिक अनुदान देना पड़ता था। इसके बदले में कंपनी को सहायक राज्यों को बाह्य आक्रमणों से सुरक्षा प्रदान करनी थी। हैदराबाद के निजाम ने सर्वप्रथम इस संधि को सहर्ष स्वीकार कर लिया किंतु टीपू ने जब सहायक संधि करने के लिए इंकार कर दिया तो उसे हराने के लिए अंग्रेजों ने तीन ओर से सेनाएँ भेजीं। टीपू की राजधानी

श्रीरंगपट्टनम पर अंग्रेजों ने कब्जा कर लिया। टीपू अपनी राजधानी की रक्षा करते हुए मारा गया। अंग्रेजों ने कनारा, कोयम्बटूर तथा श्रीरंगपट्टनम सहित मैसूर के अधिकांश भाग पर कब्जा कर लिया। फ्रांसीसियों को भी भारत से खदेड़ दिया गया। मैसूर राज्य को हिंदू शासक परिवार के वंशज को सौंप दिया गया।

4. अंग्रेजों को मराठों को दबाने में 1775 से 1818 ई० तक 43 वर्ष लगे। पानीपत के तीसरे युद्ध में अहमदशाह अब्दाली के हाथों पराजय के बाद मराठों ने माधवराव प्रथम तथा महादजी सिंधिया के नेतृत्व में उभरना प्रारंभ किया। किंतु मराठों में एकता का अभाव था। पेशवा की शक्ति क्षीण हो चुकी थी। मराठे सरदार स्वतंत्र होना चाहते थे। गायकवाड़ों ने स्वयं को गुजरात (राजधानी-बड़ौदा) में प्रतिष्ठित कर लिया था। नागपुर में भौंसले, ग्वालियर में सिंधिया तथा इंदौर में होल्कर स्वतंत्रता का प्रयास कर रहे थे।

तृतीय आंग्ल-मराठा युद्ध (1817-1818 ई०)–मराठों ने पिंडारियों को भाड़े के सैनिकों के रूप में अपनी सेना में नियुक्त किया था। मराठों के पतन के बाद ये पिंडारी मध्य भारत के क्षेत्रों में लूटपाट तथा अराजकता फैलाने लगे। वारेन हेस्टिंग्स ने उन्हें दबाने का सफल प्रयास किया। पिंडारियों के एक नेता अमीर खान को राजपूताना की एक छोटी रियासत टोंक का नवाब बना दिया गया। अतः इस प्रकार हेस्टिंग्स ने मराठों और पिंडारियों को एक संयुक्त शक्ति के रूप में उभरने से रोक दिया।

पेशवा बसई की संधि (1802 ई०) द्वारा स्थापित अपनी वर्तमान स्थिति से संतुष्ट न था। वह अंग्रेजों के चंगुल से निकलने के प्रयास में था। अंग्रेजी रेजिडेंट एल्फिंस्टन ने पेशवा को एक अन्य सहायक संधि के तहत मराठा परिसंघ की अध्यक्षता छोड़ने के लिए विवश किया। तब पेशवा बाजीराव द्वितीय ने अंग्रेजों से विद्रोह कर दिया। किंतु पूना के निकट किरकी के युद्ध में वह हार गया तथा भौंसले और होल्कर भी पराजित हुए। बाजीराव को बंदी बनाकर कानपुर के निकट बिठूर भेज दिया गया तथा 8 लाख रुपये वार्षिक का पेंशनर बना दिया गया। उसके क्षेत्रों को ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया गया। सतारा में शिवाजी के एक वंशज को गद्दी पर बिठा दिया गया। भोंसले तथा होल्कर ने भी सहायक संधि स्वीकार कर ली। अतः इस प्रकार मराठों को पूर्णतः झुका दिया गया।

5. मुगलों द्वारा पाँचवें गुरु अर्जुन देव की हत्या के बाद सिक्ख एक योद्धा संप्रदाय के रूप में उभरे। दसवें गुरु-गुरु गोविंद सिंह के समय तक सिक्ख बहुत शक्तिशाली बन गए थे। बंदा बहादुर के काल में पंजाब 12 छोटे सिक्ख राज्यों में बँटा हुआ था, जिन्हें मिस्ल कहा जाता था। 1802 ई० में रणजीत सिंह अमृतसर के सरदार बन गए थे। 1806 ई० तक रणजीत सिंह पंजाब के सबसे शक्तिशाली शासक बन गए थे। उनका राज्य मध्य पंजाब से सतलुज नदी तक विस्तृत था। उनके अभियानों से कांगड़ा (1811 ई०), अटक तथा मुल्तान (1818 ई०), कश्मीर तथा हजारा (1819 ई०), पेशावर (1834 ई०) और लद्दाख (1836 ई०) सिक्खों के नियंत्रण में आ गए। महाराणा रणजीत सिंह जानबूझकर अंग्रेजों के साथ टकराव से बचे रहे और स्वयं को मजबूत करते रहे। उन्हें ''पंजाब का शेर'' उचित ही कहा गया। 1839 ई० में रणजीत सिंह की मृत्यु के बाद अंग्रेजों के एजेंटों ने पंजाब में अशांति फैला दी और रणजीत सिंह के तीन बेटे मार डाले गए। सबसे छोटे बेटे दलीप सिंह को (जो नाबालिग था) गद्दी पर बिठाया गया। उसकी माता रीजेंट बन गई। पंजाब के भ्रष्ट सरदार राजकुमार के विरुद्ध षड्यंत्र रचते रहे। इस राजनीतिक अस्थिरता का अंग्रेजों ने भरपूर लाभ उठाया।

(i) **प्रथम आंग्ल-सिक्ख युद्ध (1845-1846 ई०)**

सिक्ख सेना द्वारा अमृतसर संधि (1809 ई०) का हनन करते हुए सतलुज नदी पार करते ही अंग्रेजों ने युद्ध की घोषणा कर दी। खालसा सेना नेताविहीन थी, फिर भी उससे हेनरी स्मिथ को हरा दिया। किंतु 1846 ई० में अंग्रेजों ने इस पर कब्जा कर लिया। आलीबाल के युद्ध में सिख पराजित हुए।

इसी दौरान लाहौर में गुलाबसिंह का वर्चस्व हो गया। उसने स्वार्थपूर्ति के लिए अंग्रेजों से वार्ता शुरू की। सिक्ख सेना सबरॉव के युद्ध में पराजित हुई। अंग्रेजों ने 1846 ई० में लाहौर पर कब्जा कर लिया। 1846 ई० में लाहौर संधि पर हस्ताक्षर किए गए, जिसके अनुसार व्यास तथा सतलुज नदियों के बीच का जालंधर दोआब क्षेत्र अंग्रेजों को मिल गया। जम्मू और कश्मीर गुलाब सिंह को सौंप दिया गया तथा बदले में उससे 5 लाख रुपये की क्षतिपूर्ति भी वसूल की गई। लाहौर में ब्रिटिश रेजिडेंट को नियुक्त किया गया जो बाद में पंजाब का वास्तविक शासक बन गया।

(ii) **द्वितीय आंग्ल-सिक्ख युद्ध (1848-1849 ई०)**

1847 से 1848 ई० के मध्य अंग्रेजों ने पंजाब में कई सुधार किए, जो सिक्ख सरदारों को पसंद न थे। रानी जिन्दाँ पर षड्यंत्र का आरोप लगाकर उसे हटा दिया गया। मुल्तान ने गवर्नर मूलराज ने अंग्रेजों से विद्रोह किया, किंतु उसे आत्मसमर्पण करना पड़ा। अक्टूबर 1848 ई० में लॉर्ड डलहौजी ने युद्ध की घोषणा कर दी और मुल्तान पर घेरा डाल दिया गया तथा 1849 ई० में उस पर अंग्रेजों का कब्जा हो गया। चिलियाँवाला तथा गुजरात की लड़ाइयों में सिक्खों को भारी नुकसान हुआ। 1849 ई० में पंजाब ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया गया और महाराजा दलीप सिंह को पेंशन दे दी गई तथा इंग्लैंड निर्वासित कर दिया गया। प्रसिद्ध कोहिनूर हीरा भी उससे लेकर महारानी विक्टोरिया के पास भेज दिया गया।

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. मैसूर युद्ध के समय लॉर्ड वेलेजली भारत का गवर्नर जनरल था। वेलेजली ''भारत में ब्रिटिश साम्राज्य को भारत का ब्रिटिश साम्राज्य'' बनाने की मंशा से आया था। अपने इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए उसने 'सहायक संधि की नीति' बनाई। इस संधि के नियम सरल थे। भारतीय शासक, जिन्हें इस संधि के लिए आमंत्रित किया जाता था, उनसे यह अपेक्षा की जाती थी कि वे ब्रिटिश अनुमति के बिना किसी अन्य शक्ति से न तो लड़ाई करेंगे और न ही किसी प्रकार का संबंध रखेंगे।

2. मराठा शक्ति का उदय मुगल साम्राज्य के पतन के बाद हुआ था। उनकी सेना तथा साम्राज्य विशाल था और वे निडर तथा बहादुर योद्धा थे। फिर भी वे अंग्रेजों के विरुद्ध सफल न हो सके, इसके निम्नलिखित कारण थे–

(i) मराठा साम्राज्य विशाल तो था, किंतु यह एक संगठित इकाई न था। इसके सरदार अपने-अपने क्षेत्रों में स्वतंत्र थे। साथ ही वे परस्पर वैमनस्य रखते थे, जिसका अंग्रेजों ने भरपूर लाभ उठाया।

(ii) उनका भौगोलिक ज्ञान अच्छा नहीं था, इसके विपरीत अंग्रेज स्थानीय धरातल की उत्तम जानकारी के कारण मराठों के विरुद्ध सफल हो सके।

(iii) इंग्लिश कंपनी के पास अपार साधन थे। वे कूटनीति में भी दक्ष थे।

(iv) मराठे गुरिल्ला युद्ध में तो दक्ष थे, किंतु आमने-सामने युद्ध-कला में पारंगत नहीं थे।

(v) मराठों में संगठन का अभाव था। वे कभी भी शत्रु के विरुद्ध एकजुट न हो सके।

(vi) मराठों ने विज्ञान, सैन्य संगठन, तोपखाने तथा प्रशिक्षित पैदल सेना की ओर कोई ध्यान नहीं दिया।

(vii) मराठों ने वित्त विभाग की परवाह नहीं की। जब भी उन्हें धन की आवश्यकता होती थी तो वे लूटपाट द्वारा धन अर्जित कर लेते थे। अतः उनका शासन भी शोषणपूर्ण था।

(viii) अधिकांश मराठे नेता उन्नीसवीं सदी के आरंभ में मर चुके थे। मराठा शक्ति क्षीण हो रही थी, जबकि अंग्रेज ताकतवर हो रहे थे।

(ix) मराठों का दृष्टिकोण संकीर्ण था, उनमें राष्ट्रीय भावना की भी कमी थी। वे जनहित की अपेक्षा निजी स्वार्थों में लिप्त रहते थे।

(x) मराठे अपने विजित क्षेत्र से 'चौथ' तथा 'सरदेशमुखी' वसूल करते थे जिससे वे अपनी जनता में ही अलोकप्रिय हो गए।

3. अवध के नवाब और मुगलों की संयुक्त सेनाओं तथा अंग्रेजों के बीच बक्सर में युद्ध हुआ, जिसमें संयुक्त सेनाएँ पराजित हुईं और अंग्रेज अवध के भी स्वामी बन गए। कुछ इतिहासकारों ने बक्सर के युद्ध को प्लासी के युद्ध से अधिक महत्त्वपूर्ण माना है, क्योंकि इसमें अवध का नवाब ही नहीं मुगल सम्राट भी पराजित हो गया तथा अंग्रेजों को उत्तर-पश्चिमी सीमांत भारत को भी नियंत्रित करने का अवसर प्राप्त हो गया। प्लासी द्वारा शुरू की गई प्रक्रिया को बक्सर की विजय ने पूर्ण कर दिया और बंगाल अंग्रेजों के अधीन हो गया।

4. क्लाइव ने अवध के नवाब शुजाउद्दौला और मुगल सम्राट शाहआलम द्वितीय के साथ इलाहाबाद की संधि पर हस्ताक्षर किए। इस संधि के तहत शाहआलम को मुगल सम्राट स्वीकार किया गया। उसे 26 लाख रुपयों के वार्षिक देय के बदले में बंगाल, बिहार तथा उड़ीसा की दीवानी का अधिकार अंग्रेजों को देना पड़ा। अब कंपनी को राजस्व वसूलने का अधिकार मिल गया।

5. **ब्रिटिश शासन का प्रसार (1767 से 1805 ई० तक)**

1767 से 1805 ई० की अवधि में अंग्रेजों की ईस्ट इंडिया कंपनी एक व्यावसायिक प्रतिष्ठान मात्र न रहकर भारत की सर्वोच्च शक्ति बन गई।

क्लाइव ने बंगाल में दोहरी प्रशासन व्यवस्था स्थापित की। कंपनी द्वारा नियुक्त उप-दीवान कंपनी की ओर से राजस्व एकत्र करते थे। लोगों के कल्याण का उत्तरदायित्व तो नवाब पर था, किंतु वास्तविक शक्ति अंग्रेजों के पास थी। कंपनी राजस्व का कुछ भाग प्रशासन पर खर्च करती थी और शेष राशि इंग्लैंड को भेज देती थी। इससे बंगाल का धन धीरे-धीरे बाहर जाने लगा।

1772 ई० में वारेन हेस्टिंग्स को बंगाल का गवर्नर तथा 1774 ई० में भारत का गवर्नर जनरल नियुक्त किया गया। उसने बंगाल में दोहरी शासन प्रणाली को समाप्त कर दिया।

1772 ई० में कंपनी का बंगाल, बिहार, उड़ीसा, मद्रास (चेन्नई) और बंबई (मुंबई) पर सीधा नियंत्रण तथा अवध और कर्नाटक पर परोक्ष नियंत्रण था। इस समय दक्खन के पश्चिमी भाग में मराठे, हैदराबाद में निजाम, मैसूर में हैदरअली, पंजाब में सिख तथा त्रावणकोर (केरल) स्वतंत्र थे। ईस्ट इंडिया कंपनी ने अपने साम्राज्य के प्रसार के लिए राज्यों के शासकों को युद्धों में हराकर कूटनीतिक संधियों तथा राज्यों पर अपना अधिकार स्थापित करने की नीति अपनाई। कूटनीतिक संधियाँ राजनीतिक तथा सैन्य सुविधाओं के लिए थीं; अतएव वे अस्थायी थीं। क्षेत्रीय विस्तार का प्रमुख कारण व्यापारिक लाभ उठाना था। इसके अतिरिक्त इंग्लिश कंपनी अपने फ्रांसीसी प्रतिद्वंदियों को भी खदेड़ देना चाहती थी।

6. लॉर्ड ऑकलैंड के काल (1836-1842 ई०) में अंग्रेजों को भारत पर रूसी आक्रमण का खतरा था। वे दोस्त मुहम्मद को हटाकर अफगानिस्तान के सिंहासन पर शाह शुजा को बिठाना चाहते थे, जो उनके हाथ की कठपुतली था। उन्होंने कंधार, गजनी तथा काबुल पर कब्जा करके दोस्त मुहम्मद को बंदी बना लिया तथा शाह शुजा को गद्दी पर बिठा दिया। दोस्त मुहम्मद के पुत्र अकबर खाँ के नेतृत्व में 1842 ई० में विद्रोह के बाद ब्रिटिश सैनिकों को अफगानिस्तान छोड़ना पड़ा।

1842 ई० में लॉर्ड ऑकलैंड के स्थान पर लॉर्ड एलेनबरो गवर्नर जनरल बना। उसने नई सेनाएँ अफगानिस्तान भेजकर उस पर आक्रमण किया। गजनी और काबुल पर पुनः अंग्रेजों का कब्जा हो गया। शाह शुजा मारा गया तथा दोस्त मुहम्मद को पुनः सिंहासन पर बिठाकर ब्रिटिश सेनाएँ भारत लौट आईं।

(ख) अतिलघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. भारत में सर्वप्रथम व्यापार करने के लिए यूरोपीय देश आए।

2. इलाहाबाद की संधि क्लाइव और अवध के नवाब शुजाउद्दौला और मुगल शाहआलम द्वितीय के बीच हुई।

3. 1772 ई० में बंगाल का गवर्नर वॉरेन हेस्टिंग्स को बनाया गया।

4. श्रीरंगपट्टनम की संधि टीपू सुल्तान और लॉर्ड कार्नवालिस के बीच हुई।

5. लॉर्ड डलहौजी ने विलय नीति के अंतर्गत सतारा, जैतपुर, उदयपुर, नागपुर, मगत और झाँसी राज्यों को अंग्रेजी राज्यों में मिला लिया।

(घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

I. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

उत्तर– 1. (iii) वेलेजली की 2. (i) पानीपत के तीसरे युद्ध में
3. (iii) मंगलौर की संधि 4. (i) 1802 ई० में

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. भारतीय उत्पाद **यूरोपीय** देशों में लोकप्रिय थे।
2. अतीत काल में भारत को **सोने की चिड़िया** कहा जाता था।
3. फ्रांसीसियों ने **अंग्रेजों** को मद्रास वापस भेज दिया।
4. मीर कासिम एक **योग्य**, **कुशल** तथा कठोर शासक था।
5. हैदरअली के **फ्रांसीसियों** से अच्छे संबंध थे।
6. मराठे **गुरिल्ला** युद्ध में दक्ष थे।

III. सही कथन के सामने (✓) तथा गलत कथन के सामने (✗) का चिह्न लगाइए–

1. (✓) 2. (✗) 3. (✓) 4. (✗) 5. (✓) 6. (✓)

परियोजना कार्य

छात्र स्वयं करें।

3 ग्रामीण जीवन एवं समाज : शिल्प तथा उद्योग

अभ्यास

(क) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. भारत में ब्रिटिश लोगों की कृषीय नीतियाँ ऐसी बनायी गयी थीं, जिनसे उन्हें भूमि से अधिकतम राजस्व प्राप्त हो तथा भूमि-सुधारों पर यथासंभव

न्यूनतम व्यय हो। उन्होंने अपने उद्देश्यों तथा लक्ष्यों की पूर्ति के लिए निम्नलिखित भूमि राजस्व व्यवस्था अपनायी–

वारेन हेस्टिंग्स ने भारत का गवर्नर जनरल बनने के बाद एक राजस्व बोर्ड की स्थापना की, जिसे 'इजारादारी' व्यवस्था कहा गया। इस व्यवस्था के अंतर्गत राजस्व वसूलने का अधिकार सबसे ऊँची बोली (नीलामी) लगाने वाले व्यक्ति को पाँच वर्ष के लिए दिया जाता था। इस व्यवस्था ने किसानों के कष्टों में और भी वृद्धि कर दी क्योंकि नीलामी में ऊँची बोली लगाने वाले व्यापारी धनी होते थे जो केवल राजस्व की वसूली में रुचि रखते थे। उन्हें भूमि की उत्पादकता से कोई मतलब नहीं था। इसके अतिरिक्त, भूमि की नीलामी सामयिक होती थी। नये जमींदारों को कृषि-भूमि के सुधार में कोई रुचि नहीं होती थी। अतः यह व्यवस्था असफल ही रही, क्योंकि इससे किसी को भी लाभ नहीं पहुँचा। कंपनी की आशा के अनुकूल आय नहीं हुई, किसानों का उत्पीड़न किया गया तथा जमींदार अपने को असुरक्षित महसूस करने लगे। अतः पंचवर्षीय बंदोबस्त को 1777 ई० में समाप्त कर दिया गया तथा इसके स्थान पर वार्षिक बंदोबस्त पुनः लागू किया गया।

2. पंजाब, दिल्ली, पश्चिमी उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश में गाँवों के समूहों को 'महल' कहते थे। महल के मुखिया को असामियों (किसानों) से भू-राजस्व इकट्ठा करना पड़ता था। अतः इस व्यवस्था को महलवाड़ी व्यवस्था कहते थे। 1892 ई० में इसे हॉट मैकेंजी नामक अंग्रेज ने लागू किया था। यह भी एक दोहरा बंदोबस्त था, क्योंकि इसे पूरे गाँव के समुदायों के साथ सामूहिक तौर पर तथा निजी तौर पर भी किया जाता था। इसने किसानों की दशा बिगाड़ दी तथा गाँव के मुखिया को संपन्न कर दिया।

प्रभाव

(i) भूमि को बेचने की वस्तु बना दिया गया। जब कभी कोई किसान या जमींदार धनराशि अदा करने में असमर्थ होता था तो वह भूमि को रेहन (गिरवी) रख देता था अथवा बेच देता था।

(ii) राजस्व की नकद अदायगी की व्यवस्था ने धन के महत्त्व में वृद्धि कर दी। किसान अपनी देय धनराशि चुकाने के लिए ऊँची ब्याज दरों पर धन उधार लेने लगे। इससे किसानों की ऋणग्रस्तता में वृद्धि हुई, जिसका परिणाम 'बेगारी' के रूप में देखने को मिला।

(iii) अधिकांश जमींदारों ने अपनी आय में वृद्धि करने के लिए खाद्यान्नों के स्थान पर वाणिज्यिक (नकदी) फसलें उगाना प्रारंभ कर दिया, किंतु इससे भारतीय किसानों को कोई लाभ नहीं पहुँचा। कृषि में इन नयी प्रवृत्तियों से धनी लोग अधिक धनवान तथा निर्धन लोग निर्धन होते गये। किंतु इससे भारतीय कृषि उत्पादन को अवश्य लाभ पहुँचा, क्योंकि कृषि अब बाजारोन्मुखी हो गयी थी। उदाहरणार्थ भारत में ब्रिटिश लोगों ने अफीम की खेती को प्रोत्साहन दिया, जिसका चीन में बहुत बड़ा बाजार था। इसी प्रकार कपास, जूट, चाय, कहवा आदि वाणिज्यिक फसलों के निर्यात से बहुत लाभ हुआ।

(iv) अंग्रेजों ने कृषि की विधियों को सुधारने या सिंचाई परियोजनाओं को प्रारंभ करने की कोई पहल नहीं की। इससे भूमि की उत्पादकता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। यही नहीं, उन्होंने सूखे से निपटने के भी उपाय नहीं किए। इससे दुर्भिक्ष (अकाल) नियमित रूप से पड़ने लगा, जिससे किसानों की निर्धनता बढ़ती गयी।

3. **कृषक विद्रोह**–ब्रिटिश सरकार ने विविध राजस्व कानूनों को बनाया। परिणामस्वरूप किसान विद्रोह पर उतर आये। बिहार तथा बंगाल का चुआर विद्रोह 1796 ई० में प्रारंभ होकर 1816 ई० तक चला। यह व्यापक विद्रोह सरलता से दबाया नहीं जा सका। किसानों का यह विद्रोह नील के बागान मालिकों, जमींदारों तथा महाजनों के विरुद्ध था। इसी प्रकार उत्तरी केरल के मालाबार प्रदेश में मोपला किसानों ने 1836 ई० से 1854 ई० के मध्य 22 विद्रोह किये।

पूर्वी बंगाल में कृषक असंतोष–अंग्रेजों के अत्याचार के कारण 1870 ई० के दशक में भी कृषक असंतोष फूट पड़ा। बंगाल के शक्तिशाली जमींदारों ने अपने काश्तकारों का दमन करने के लिए उन्हें बेदखल करना, तंग करना, फसल सहित संपत्ति को अवैध रूप से छीन लेना, बड़े पैमाने पर शक्ति का प्रयोग करके लगान बढ़ाना तथा किसानों द्वारा संपत्ति के उपभोग के अधिकार को प्राप्त करने से रोकना आदि प्रारंभ कर दिया। बंगाल के किसानों की प्रतिरोध की परंपरा बहुत पुरानी है, जब 1782 ई० में उत्तरी बंगाल के किसानों ने इंग्लिश ईस्ट इंडिया कंपनी के राजस्व निर्माता देवी सिंह के विरुद्ध विद्रोह किया था। सन् 1872 से 1876 ई० के मध्य उन्होंने पूर्वी बंगाल के अनेक भागों में लगान नहीं देने के लिए संगठन

बनाये तथा जमींदारों एवं उनके एजेंटों पर आक्रमण किये। अतः सरकार को जमींदारी व्यवस्था के बुरे पहलुओं से किसानों को बचाने के लिए कानून बनाने पड़े।

पंजाब के किसानों ने ऋण वापस न करने की स्थिति में नगरीय महाजनों को उनकी भूमि हड़पने से रोकने की धमकी दी तथा संघर्ष किया। सरकार उस राज्य में कोई भी विद्रोह नहीं चाहती थी, क्योंकि उस राज्य से बड़ी संख्या में भारत में ब्रिटिश सेना के लिए सैनिक आते थे। पंजाब के किसानों की सुरक्षा के लिए प्रयोग के तौर पर 1900 ई० पंजाब भूमि हस्तांतरण अधिनियम पारित किया गया।

4. 1765 और 1865 के मध्य देश के विभिन्न क्षेत्रों में जनजातीय लोगों में अंग्रेजों की कटुतापूर्ण नीति के विरुद्‌ध विद्रोह किए। इन विद्रोहों में किसानों ने भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस कड़ी में प्रथम शक्तिशाली विद्रोह बंगाल में अंग्रेजों की विजय के पश्चात् हुआ था। जबकि विद्रोह करने वाले अधिकांश व्यक्ति किसान ही थे, जिन्होंने अपने आप को सेनाओं के रूप में संगठित कर लिया था।

जनजातीय विद्रोह–इस काल में अनेक जनजातीय विद्रोह हुए। इनमें से कुछ प्रमुख विद्रोह थे–भीलों का विद्रोह (मध्य प्रदेश तथा महाराष्ट्र), कोल विद्रोह (बंगाल, बिहार तथा उड़ीसा), गोंडों तथा खोडों का विद्रोह (उड़ीसा), कोली विद्रोह (महाराष्ट्र), मेरो का विद्रोह (राजस्थान), संथाल विद्रोह (बंगाल एवं बिहार)। उत्तर-पूर्वी भारत में भी अनेक जनजातीय विद्रोह हुए; जैसे–खासी लोगों द्वारा किया गया विद्रोह जिसका नेतृत्व यूंतिरोत सिंह ने किया था। इनमें से अनेक विद्रोह ऐसे थे जो लगातार कई वर्षों तक चलते रहे। उदाहरण के लिए भीलों का एक विद्रोह 1817 में प्रारंभ हुआ तथा 1831 तक लगातार चलता रहा था। बिहार में छोटा नागपुर क्षेत्र में 1890 के दशक में मुंडा विद्रोह हुआ। यह विद्रोह बिरसा मुंडा के नेतृत्व में हुआ था।

1890 ई० में बिरसा मुंडा के नेतृत्व में हुए विद्रोह को कुचल दिया गया था। बिरसा मुंडा को बंदी बनाकर जेल में बंद कर दिया गया था, जहाँ कुछ समय बाद ही उसकी मृत्यु हो गई। ऐसा माना जाता है कि उसे विष देकर मारा गया था। टीकेंद्रजीत ने मणिपुर में अंग्रेजी शासन के विरोध में एक विद्रोह का नेतृत्व किया था, परंतु अंग्रेजों ने इस विद्रोह को कुचलने में

सफलता पा ली थी तथा टीकेंद्रजीत को फाँसी पर लटकाकर मौत के घाट उतार दिया था।

19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में, एक विलक्षण विद्रोही घटना देखने को मिली। यह था, 1835 ई० का संथाल विद्रोह। संथाल मूल रूप से उत्तर-पूरब में मानभूमि, बाराभूमि, हजारीबाग, वीरभूमि, मिदनापुर, बंकुरा आदि क्षेत्रों में संबंध रखते थे।

5. अंग्रेज ईस्ट इंडिया कंपनी के भारत आगमन का प्रमुख उद्देश्य व्यापार करना था। वह भारत से सस्ते दामों पर वस्तुएँ खरीदर कर उन्हें ऊँचे दामों पर यूरोप के बाजारों में बेच देती थी। भारतीय वस्तुएँ जैसे सूती और रेशमी वस्त्र, जरीदार वस्त्र, नील, मसाले आदि की यूरोप के बाजारों में अत्यधिक माँग थी। वहाँ के कुलीन लोग इन वस्त्रों को पहनना अपने लिए शान की बात समझते थे। इसी को देखते हुए अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारत के साथ व्यापार करने का फैसला किया। उसने भारतीय शासकों से व्यापार की अनुमति प्राप्त की और यहाँ पर फैक्ट्रियाँ खोलीं। वे नकद स्वर्ण मुद्राएँ देकर वस्तुएँ खरीदते और फिर उन्हें यूरोप भेज दिया जाता था जहाँ वे भारी मुनाफे के साथ बेची जाती थी। ईस्ट इंडिया कंपनी ने बंगाल के काश्तकारों को अग्रिम धनराशि दी और उनसे कहा कि वे उसके अलावा किसी ओर के साथ व्यापार न करे। इस प्रकार ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारतीय व्यापार से बहुत अधिक धन कमाया जिसने आगे चलकर उसे भारत पर अधिकार करने के लिए प्रेरित किया। अतः हम कह सकते हैं कि ईस्ट इंडिया कंपनी का मूल उद्देश्य व्यापार करना था जो कि आगे चलकर राजनीतिक प्रभुसत्ता में परिवर्तित हो गया।

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. लॉर्ड हेस्टिंग्स के शासनकाल में भू-राजस्व इकट्ठा करने के लिए रैयतवाड़ी व्यवस्था को लागू किया गया। भूमि जोतने वाले को रैयत (काश्तकार) कहा जाता था। यह व्यवस्था काश्तकारों और सरकारों के बीच भूमि बंदोबस्त था। भू-राजस्व 30 वर्षों की अवधि के लिए निश्चित कर दिया गया था। काश्तकार सरकार को भू-राजस्व के रूप में उपज का आधा भाग देते थे। इस व्यवस्था को 1802 ई० में थॉमस मुनरो ने लागू किया इसीलिए इसे 'मुनरो सिद्धांत' के नाम से भी जानते हैं। यह व्यवस्था काश्तकारों के नगरीय जीवन का कारण बनी परंतु वे जमींदारों की जगह

भू-स्वामी बन गये।

2. अंग्रेजों की भू-कर प्रणाली ने भारतीय किसानों के भीतर क्रोध की ज्वाला भड़का दी थी और उनमें इस शासन के प्रति गंभीर असंतोष था। उन्होंने भारत का जमकर आर्थिक शोषण किया। वे भू-कर नीतियाँ जो भारतीय प्रांतों में अंग्रेजों द्वारा लागू की गईं, उन्होंने भारतीय किसानों तथा जमींदारों को बरबाद कर दिया। किसानों की दशा निरन्तर शोचनीय होती चली गई। विविध राजस्व काननूों से किसानों पर बुरा प्रभाव पड़ा और उनकी जमीनें छिन गईं। इन सबसे दुखी होकर किसान विद्रोह पर उतर आए।

3. बिहार में छोटा नागपुर क्षेत्र में 1890 के दशक में मुंडा विद्रोह हुआ। यह विद्रोह बिरसा मुंडा के नेतृत्व में हुआ था।
1890 में बिरसा मुंडा के नेतृत्व में हुए विद्रोह को कुचल दिया गया था। बिरसा मुंडा को बंदी बनाकर जेल में बंद कर दिया गया था, जहाँ कुछ समय बाद ही उसकी मृत्यु हो गई। अतः ऐसा माना जाता है कि उसे विष देकर मारा गया था।

4. बक्सर के युद्ध में विजय के पश्चात् ब्रिटिश कंपनी ने राजस्व वसूलने के अधिकार प्राप्त कर लिए। कंपनी के भ्रष्ट कर्मचारियों ने अपने निजी लाभ के लिए किसानों को तंग करना प्रारंभ कर दिया। भूमि के लगान की दरें बहुत ऊँची निश्चित की गयीं। राजस्व वसूली बहुत कठोर हो गयी। राजस्व का भुगतान नकद होना आवश्यक था। उन्हें आतंकित किया जाता था। भुगतान की वसूली निर्दयता तथा बलपूर्वक की जाती थी। परिणामतः बड़ी संख्या में किसान भूमिहीन हो गये।

5. पंजाब के किसानों ने ऋण वापस न करने की स्थिति में नगरीय महाजनों को उनकी भूमि हड़पने से रोकने की धमकी दी तथा संघर्ष किया। सरकार उस राज्य में कोई भी विद्रोह नहीं चाहती थी, क्योंकि उस राज्य से बड़ी संख्या में भारत में ब्रिटिश सेना के लिए सैनिक आते थे। पंजाब के किसानों की सुरक्षा के लिए प्रयोग के तौर पर 1900 ई० में 'पंजाब भूमि हस्तांतरण अधिनियम' पारित किया गया।

(ग) अतिलघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. भूमि जोतने वाले को रैयत (काश्तकार) कहा जाता था।

2. हॉट मैकेंजी ने महलवाड़ी बंदोबस्त व्यवस्था लागू की।

3. राजस्व एकत्र करने के अधिकार की नीलामी की व्यवस्था को इजारादारी व्यवस्था कहा गया।
4. टीकेंद्रजीत के नेतृत्व में अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध विद्रोह 1890 ई० में हुआ।
5. बिहार के मुंडा विद्रोह का नेता बिरसा मुंडा था।

(घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

I. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

1. (i) वारेन हेस्टिंग्स
2. (i) राजस्व बोर्ड की
3. (iii) हॉट मैकेंजी ने
4. (i) 1757 में
5. (i) छोटा नागपुर क्षेत्र में

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. **लॉर्ड थॉमस मुनरो ने** रैयतवाड़ी व्यवस्था की व्यवस्था की।
2. रैयतवाड़ी व्यवस्था **काश्तकारों** के नगरीय जीवन का कारण बनी।
3. महल के मुखिया को **असामियों** से **भू-राजस्व** इकट्ठा करना पड़ता था।
4. भूमि को **बेचने** की वस्तु बना दिया गया।
5. नील एक **वाणिज्यिक** उपज थी।

III. सही कथन के सामने (✓) तथा गलत कथन के सामने (✗) का चिह्न लगाइए–

1. (✓) 2. (✗) 3. (✓) 4. (✗) 5. (✓) 6. (✓)

IV. सही जोड़े बनाइए–

1.	खोड	**(i)**	राजस्थान
2.	भीलों	**(ii)**	बिहार
3.	मेर	**(iii)**	ओडिशा
4.	संथाल	**(iv)**	बंगाल
5.	कोल	**(v)**	महाराष्ट्र

V. निम्नलिखित के कारण बताइए–

1. क्योंकि इससे किसी को भी लाभ नहीं पहुँचा।
2. क्योंकि अंग्रेजों का मूल उद्देश्य अपने बाजार को बढ़ाकर अधिकतम लाभ अर्जित करना था। इसके लिए यह आवश्यक था कि उनके उद्योगों को प्रचुर मात्रा में कच्चा माल प्राप्त हो

सके। इंग्लैंड के सूती वस्त्र उद्योग को कपास की आवश्यकता थी और अन्य उद्योगों को अन्य प्रकार के कच्चे माल की। इन सभी की पूर्ति भारत से ही होती थी और यही कारण था कि भारत एक कृषि औपनिवेशक बनकर रह गया।

3. सरकार पंजाब राज्य में कोई भी विद्रोह नहीं चाहती थी, क्योंकि उस राज्य से बड़ी संख्या में भारत में ब्रिटिश सेना के लिए सैनिक आते थे।

4. भारत से निर्मित वस्तुओं के निर्यात के अतिरिक्त अब विभिन्न प्रकार के कच्चे माल; जैसे–कपास, रेशम आदि के निर्यात के लिए भी भरपूर जोर दिया जाता था, क्योंकि इस कच्चे माल की ब्रिटेन के उद्योगों को बहुत आवश्यकता थी। बागानों से संबंधित उत्पादों, जैसे–नील, चाय आदि का निर्यात भी होता था।

परियोजना कार्य

छात्र स्वयं करें।

4 उपनिवेशवाद तथा समाज में बदलाव

अभ्यास

(क) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. ब्रिटिश शासन का भारत पर बहुत गहरा आर्थिक प्रभाव पड़ा। ब्रिटिश शासन भारत में अंग्रेजों के आगमन से पूर्व या दूसरे शब्दों में कहें तो भारत में ब्रिटिश शासन की स्थापना से पूर्व भारत एक उन्नत राष्ट्र था, जिसकी हस्तकलाओं की माँग संपूर्ण विश्व में थी। भारत में ऐसे अनेक नगर थे जो अपनी हस्तकलाओं के लिए दूर-दूर तक बहुत प्रसिद्ध थे। उदाहरण के लिए मुर्शिदाबाद व ढाका का रेशम उद्योग अपनी कलात्मकता और महीनता के लिए सभी जगह जाना जाता था। हस्तकला उद्योग अत्यधिक उन्नत था और इससे असंख्य लोग जुड़े हुए थे। काश्तकारों को अपने कार्य का समुचित मूल्य मिलता था और वस्तु आदि के निर्यात का भारत पर बड़ी मात्रा में स्वर्ण की प्राप्ति होती थी। परंतु ब्रिटिश शासन की स्थापना के साथ ही यह स्थिति पूरी तरह से बदल गई। अंग्रेजों ने अपने आर्थिक लाभ के लिए और

अपने उद्योगों को विकसित करने के लिए भारत की परम्परागत ग्रामीण अर्थव्यवस्था को पूरी तरह तहस-नहस कर दिया। उन्होंने भारत से निर्यात की जाने वाली वस्तुओं पर भारी आयात कर लगाया जिससे वे महँगी हो गई और उनकी बिक्री में अत्यधिक कमी आई। इंग्लैंड के कारखानों में बनी जो वस्तुएँ भारत आती थीं, उन्हें शुल्क मुक्त कर दिया गया जिससे भारतीय बाजार विदेशी वस्तुओं से पट गए। भारतीय उद्योग के प्रमुख केंद्रों से कच्चे माल की आपूर्ति होनी बंद हो गई और उन्होंने कृषकों को मजबूर किया कि वे अपना कच्चा माल अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी को ही बेचें। अतः अत्यधिक संख्या में लोग उद्योगों को छोड़कर कृषि की तरफ मुड़ गए, जिससे देश निर्धनता और दरिद्रता के जाल में फँसने लगा। अतः यह कहा जा सकता है कि ब्रिटिशों की आर्थिक नीतियों ने भारत को काफी हद तक प्रभावित किया, जिससे नगरों का पतन हुआ और उद्योग-धंधे नष्ट हो गए।

2. **दिल्ली की कहानी–**ऐतिहासिक शाही शहर दिल्ली उन्नीसवीं सदी में एक छोटा-सा कस्बा बनकर रह गया परंतु सन् 1912 ई० में ब्रिटिश राजधानी बनने के बाद इसमें दोबारा जान आई। यह शहर आधुनिक भारत की राजधानी के रूप में जाना जाता है परंतु यह शहर एक हजार साल से भी अधिक समय तक राजधानी रह चुका है। इस दौरान इसमें छोटे-मोटे अंतराल भी आते रहे हैं।

   यमुना नदी के बाएँ किनारे पर लगभग 60 वर्गमील के छोटे-से क्षेत्रफल में कम-से-कम 14 राजधानियाँ अलग-अलग समय पर बसाई गईं। आधुनिक नगर राज्य दिल्ली में घूमने पर इन सारी राजधानियों के अवशेष देखे जा सकते हैं। इनमें बारहवीं से सत्रहवीं शताब्दी के बीच बसाए गए राजधानी शहर सबसे महत्त्वपूर्ण थे।

   इन सभी राजधानियों में सबसे शानदार राजधानी शाहजहाँ ने बसाई थी। शाहजहाँनाबाद की स्थापना सन् 1639 में आरंभ हुई। इसके अंदर एक किला-महल और बगल में सटा शहर था। लाल पत्थर से बने लाल किले में महल परिसर बनाया गया था। इसके पश्चिम की ओर 14 दरवाजों वाला पुराना शहर था। चाँदनी चौक और फैज बाजार की

मुख्य सड़कें इतनी चौड़ी थीं कि वहाँ से शाही यात्राएँ आसानी से निकल सकती थीं। चाँदनी चौक के बीचोंबीच नहर थी।

घने मौहल्लों और दर्जनों बाजारों से घिरी जामा मस्जिद भारत की सबसे विशाल और भव्य मस्जिदों में एक थी। उस समय पूरे शहर में इस मस्जिद से ऊँचा कोई स्थान नहीं था।

3. **साहित्य का परिचय–**

19वीं शताब्दी वह काल था जब बंगाली भाषा का वास्तविक साहित्यिक पुनर्जागरण हुआ। माइकल मधुसुदन दत्त (1834-1873) और बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय (1838 से 1898) को बंगाली साहित्य के आधुनिक युग के संस्थापकों के रूप में जाना जाता है। मधुसूदन पहले बंगाली कवि थे, जिन्होंने भारतीय साहित्य को पश्चिमी तौर-तरीके से लिखा और प्रस्तुत किया। उनके द्वारा लिखा गया ग्रंथ 'मेघनावद्ध काव्य' इसी प्रकार का ग्रंथ था जो अत्यधिक प्रसिद्ध हुआ। बंगाली साहित्य के पुनरुद्धार का समय 19वीं शताब्दी का उत्तरादर्ध माना जाता है। बंकिमचंद्र द्वारा लिखित 'दुर्गेश नंदनी' को पहला वास्तविक बंगाली उपन्यास माना जाता है, जबकि प्यारे चंद्र मिश्रा द्वारा लिखा 'अलिलेर घेरेर दुलाल' को बंगाली का पहला सामाजिक उपन्यास माना जाता है। बंकिमचंद्र चटर्जी इस काल के जाने माने उपन्यासकार थे, जिन्होंने अपने राजनीतिक उपन्यास 'आनंद मठ' के द्वारा भारत को उसका राष्ट्रीय गीत 'वंदे मातरम्' दिया।

इस काल के अन्य प्रमुख बंगाली साहित्यकार थे राजा राममोहन राय, श्रीजीत अक्षयकुमार, केशवचंद्र सेन आदि।

बंगाली साहित्य की तरह ही अन्य भाषा के साहित्यों जैसे मराठी में भी इस काल में उल्लेखनीय परिवर्तन आया। इस काल में उपन्यास-लेखन और व्याकरण में अपेक्षित परिवर्तन आया। इस काल में 'निबंध मेला' नामक एक समाचार-पत्र प्रकाशित किया जाने लगा जिसका उद्देश्य था लोगों में राष्ट्रवादी भावना को विकसित करना। कुछ समय पश्चात् इसी उद्देश्य से केसरी संदेश कल आदि समाचार-पत्रों का प्रकाशन आरंभ हुआ। मराठी साहित्य के जनक के रूप में ''हरमान आप्टे'' का नाम लिया जाता है।

4. **संगीत–**टैगोर, महाराजा जितेंद्र मोहन तथा जितेंद्रनाथ ने भारतीय संगीत को उपेक्षा का शिकार होने से बचाया। विभिन्न स्थानों जैसे कलकत्ता, बंबई तथा पुणे में संगीत अकादमियाँ स्थापित की गईं। सर जॉन विलियम ऐसे प्रथम व्यक्ति थे, जिन्होंने भारतीय संगीत को पुनर्जीवित करने की ओर विशेष ध्यान दिया। सन् 1813 ई० में पटना के सरकारी प्रतिनिधि मुहम्मद राजा ने 'नगमा-ए-आसकी' की तथा जयपुर के राजा प्रताप सिंह ने 'संगीत सार' नामक कृतियों की रचना की। इसी तरह कृष्णानंद व्यास ने संगीत राग कल्पद्रुम का प्रकाशन किया, जो हिंदी गीतों का एक संग्रह था। सर सुरेंद्र बहादुर ठाकुर ने भी संगीत पर लेखन किया। आधुनिक संगीत के पुनरुद्धार का श्रेय सर विष्णु दिगंबर तथा भारतखंडे को जाता है। 1916 ई० में बड़ौदा में अखिल भारतीय संगीत सम्मेलन आयोजित किया गया। ओंकारनाथ पटवर्धन, रत्न झंकार, उस्ताद फय्याज खान आदि ने संगीत कला के विकास का मार्ग प्रशस्त करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. रेलवे क्षेत्र में बड़ी उपलब्धियाँ होने के फलस्वरूप भारत के राजनैतिक एकीकरण में सहायता मिली। बाद में जब भारत में राष्ट्रीय आंदोलन उभरा तब, यह भारतीयों में राष्ट्रीयता का प्रचार-प्रसार करने वाली सिद्ध हुई। किंतु रेलवे में अंग्रेजों द्वारा किए जाने वाले आर्थिक एवं संसाधनों के साम्राज्यवादी शोषण को और अधिक आसान बना दिया। वे भारतीय करदाताओं से बड़ी राशि वसूल करके जितना निर्माण करते थे। उतना ही अंग्रेज पूँजीपतियों तथा उद्योगपतियों को लाभ पहुँचता था।

2. इंद्रप्रस्थ से इसे शाहजहाँबाद में शाहजहाँ ने परिवर्तित किया और उसके बाद अंग्रेजों ने 1912 में इसे दिल्ली का नाम दिया तथा भारत की राजधानी बनाया। तब से दिल्ली भारत की राजधानी है।

3. भारत में स्थापित होने वाले उद्योगों को कई प्रकारों में बाँटा जा सकता है–

आरम्भिक उद्योग अंग्रेजों के स्वामित्व में थे। ये उद्योग बड़े नगरों में स्थापित किए गए थे। उसके पश्चात् भारतीयों ने अपने नियंत्रण में

विभिन्न प्रकार के उद्योग स्थापित किए। इसके अतिरिक्त इन मशीनों पर आधारित उद्योगों के अलावा बागानों पर आधारित उद्योग जैसे नील, चाय, कॉफी आदि भी स्थापित किए गए थे। ये उद्योग पूरी तरह से यूरोपीय स्वामित्व में थे।

4. जैसे-जैसे उद्योगों का विकास तेजी से हुआ, वैसे-वैसे नगरीकरण भी बढ़ा, क्योंकि लोग गाँवों से आकर शहरों में बसने लगे और नगरीकरण का विकास हुआ, जिससे लोगों को रोजगार मिला और नगरों का विकास हुआ।
5. ब्रिटिश शासन का भारत पर अच्छा व बुरा दोनों तरह का प्रभाव पड़ा। ब्रिटिश शासन काल में भारत में बहुत-सी चीजों का विकास हुआ। कारखानों का अत्यधिक संख्या में विकास हुआ, सूती वस्त्र उद्योगों का विकास हुआ, जिनमें लगभग 43000 व्यक्ति कार्यरत थे और बहुत-से जूट कारखानों का भी पश्चिम बंगाल में विकास हुआ।

(ग) अति लघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. 1916 ई० में बड़ौदा में अखिल भारतीय संगीत सम्मेलन आयोजित किया गया।

2. प्रथम लौह-इस्पात का कारखाना जमशेदजी टाटा द्वारा 1907 ई० में जमशेदपुर में लगाया गया।
3. तीन बंगाली कवियों के नाम निम्नलिखित हैं–(i) रवींद्रनाथ टैगोर, (ii) माइकल मधुसूदन दत्त तथा (iii) बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय।
4. कलकत्ता कला महाविद्यालय के प्राचार्य श्री हैली थे। उन्होंने नवीन शैली के विकास और विस्तार में एक अविस्मरणीय योगदान दिया।
5. तीन समाचार-पत्रों के नाम निम्नलिखित थे–
   (i) कलकत्ता गजट (1784) (ii) बंगाल जर्नल (1785)
   (iii) ओरियंटल मैगजीन (1785)
6. प्रथम जूट मिल की स्थापना अंग्रेज व्यक्ति जॉर्ज एलांड द्वारा सन् 1885 ई० में बंगाल में हुई थी।
7. जयपुर, जोधपुर, बीकानेर आदि तीन प्रमुख रियासतें थीं।
8. आधुनिक मराठा साहित्य के जनक 'हरमान आप्टे' थे।
9. भारत में 20 जूट मिले थीं और जूट मिलों का सबसे ज्यादा विस्तार

पश्चिम बंगाल में था।

(घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

I. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

उत्तर– 1. (i) संगीत सार   2. (i) जॉर्ज एलांड द्वारा

3. (i) सन् 1818 ई० में

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

उत्तर– 1. सन् 1818 ई० में कोलकाता में पहले **सूती वस्त्र** उद्योग की स्थापना हुई।

2. 1687 ई० में मद्रास में प्रथम **नगर** की स्थापना हुई।

3. लालकिला **लाल** पत्थर से बना है।

4. शाहजहाँ के समय दिल्ली **सूफी** संस्कृति का भी एक मुख्य केंद्र हुआ करती थी।

5. हिक्की को भारत में **प्रेस** का पथ-प्रदर्शक माना जाता है।

6. जयपुर के राजा प्रतापसिंह ने **संगीतसार** नामक कृतियों की रचना की।

III. सही कथन के सामने (✓) तथा गलत कथन के सामने (✗) के चिह्न लगाइए–

उत्तर– 1. (✗) 2. (✗) 3. (✗) 4. (✓) 5. (✓) 6. (✓) 7. (✓) 8. (✓)

परियोजना कार्य

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

5 प्रथम स्वतंत्रता संग्राम-कारण एवं परिणाम

अभ्यास

(क) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. 1857 ई० में भारतीय सैनिकों को राइफलों में प्रयोग करने के लिए नए कारतूस दिए गए जिन्हें मुँह से खोलना पड़ता था। सैनिकों में यह अफवाह फैल गई कि इन कारतूसों में पशुओं की चर्बी मिली हुई है। हिंदू, मुसलमान सैनिकों ने कारतूसों का प्रयोग करने से मना कर दिया। यही इस विद्रोह का तात्कालिक कारण बना।

बार ऑफ इंडियन इंडिपेंडेस में 1857 ई० की क्रांति को प्रथम स्वतंत्रता संग्राम नाम दिया।

क्रांति की योजना–ऐसा माना जाता है कि झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, नाना साहब, तात्या टोपे ने मिलकर अखिल भारतीय विद्रोह की योजना बनाई थी। 'रोटी' एवं 'कमल के फूल' को विद्रोह के संदेश का प्रतीक बनाया गया था। संघर्ष के लिए 31 मई, 1857 ई० की तारीख निश्चित की गई थी। परंतु विद्रोह के योजनाबद्ध होने के प्रमाणिक साक्ष्य अभी तक प्राप्त नहीं हुए हैं।

क्रांतिकालीन प्रमुख घटनाएँ–29 मार्च, 1857 ई० को बैरकपुर (बंगाल) छावनी में मंगलपांडे ने नए कारतूसों का प्रयोग करने से इंकार कर दिया। उत्पीड़ित किए जाने पर अपने अफसरों पर हमला किया फलतः उसे फाँसी की सजा दी गई। क्रांति की वास्तविक शुरुआत 10 मई, 1857 ई० को मेरठ में हुई। विभिन्न क्रांतिस्थलों का विवरण निम्नलिखित है–

(i) **मेरठ–**9 मई, 1857 ई० को 90 भारतीय सैनिकों में से 85 सिपाहियों ने नए कारतूसों के प्रयोग से इंकार कर दिया। फलस्वरूप प्रत्येक को 10 वर्ष की सख्त सजा दी गई। मेरठ में तैनात दूसरे भारतीय सैनिकों ने अगले दिन फिरंगियों के विरुद्ध बगावत का ऐलान करते हुए, अपने बंदी साथियों को मुक्त कराया तथा मेरठ के अंग्रेज अफसरों को मार गिराया।

(ii) **कानपुर–**नाना साहब ने कानपुर से अंग्रेजी फौजों को खदेड़ दिया। लंबे संघर्ष के बाद अंग्रेज जनरल हैवलॉक ने कानपुर पर पुनः कब्जा कर लिया। नाना साहब भागकर नेपाल चले गए। नाना साहब के बाद तात्या टोपे ने कानपुर की कमान सँभाली। परंतु एक मित्र के विश्वासघात के कारण वे पकड़े गए। अंग्रेजों ने उन पर मुकदमा चलाकर उन्हें फाँसी दे दी।

(iii) **दिल्ली–**मेरठ के हजारों सैनिकों ने दिल्ली पहुँचकर लाल किले में रह रहे मुगल बादशाह बहादुरशाह जफर को अपना नेता घोषित किया। बहादुरशाह द्वारा क्रांति का नेतृत्व सँभालने से क्रांति को राजनीतिक अर्थ मिला।

2. **राजनीतिक कारण–**ब्रिटिश शासकों की विजय तथा अधिकार करने की नीतियों ने भारतीय शासक वर्ग को ही नहीं, अपितु सामान्य भारतीय लोगों की भावनाओं को भी प्रभावित किया। एक-एक करके विभिन्न राज्यों को ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लेने के कारण उन राज्यों के मंत्रियों, दरबारियों, अधिकारियों तथा सैनिकों की नौकरियाँ (रोजगार) छिन गईं। राजनीतिक नियंत्रण के पश्चात् अपनाई गई नीतियों ने औपनिवेशिक सरकार के हितों का ही संरक्षण किया। इससे झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, अवध के नवाब, मुगल सम्राट बहादुरशाह द्वितीय, पेशवा के दत्तक पुत्र नाना साहब, राजपूत नेता कुँवर सिंह आदि भारतीय क्रुद्ध हो उठे।

आर्थिक कारण–भारत पर ब्रिटिश शासन का मूल उद्देश्य आर्थिक शोषण करना था। इसे निम्नलिखित बिंदुओं से स्पष्ट किया जा सकता है–

(i) अंग्रेजों ने विभिन्न प्रकार की भू-राजस्व नीतियाँ अपनाकर कृषकों का शोषण किया, जिससे गरीबी तथा प्राकृतिक विभीषिकाओं (अकाल, सूखा) के दुष्प्रभाव में वृद्धि हुई।

(ii) कच्चा माल (कपास, नील) सस्ती दर पर ब्रिटेन जाता तथा वहाँ की मिलों में निर्मित सस्ते माल को भारतीयों को महँगे दाम पर खरीदने को विवश किया जाता था।

(iii) भारतीय शिल्प एवं कुटीर उद्योग, अंग्रेजी नीतियों के कारण तहस-नहस हो गए जिससे भारतीय कारीगर बेरोजगारी का शिकार हुए।

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. सन् 1857 ई० के विद्रोह की प्रकृति आज भी विवादास्पद है। वस्तुतः इसके विस्तार तथा सहभागिता की प्रकृति की दृष्टि से इस विद्रोह को स्वतंत्रता का प्रथम संघर्ष माना जाता है। विद्रोह के प्रसिद्ध नेताओं में से कोई भी व्यक्ति सेना का नहीं था। ''संघर्ष में मरने वाले लोगों में जनसाधारण की संख्या किसी भी प्रकार ब्रिटिश सेना के मरने वाले भारतीय सैनिकों की संख्या से कम नहीं थी।'' इन तथ्यों के बावजूद तत्कालीन ब्रिटिश प्रशासकों ने इस विद्रोह को 'सिपाही विद्रोह' की संज्ञा दी। निस्संदेह, यह विद्रोह एक संगठित आंदोलन था। ''इसका

एक राष्ट्रीय दर्शन था तथा यह विद्रोह उन दिनों के संदर्भ में एक राष्ट्रीय दृष्टिकोण प्रस्तुत करता था।''

2. **क्रांति के परिणाम–**1857 ई० के विद्रोह ने ब्रिटिश साम्राज्य की नींव हिलाकर रख दी तथा इसे पुनर्संगठन की कगार पर लाकर खड़ा कर दिया। 1859 के अंत तक भारत पर ब्रिटिश शासन को पूरी तरह से पुनर्स्थापित किया गया। अतः विद्रोह व्यर्थ नहीं गया।

   यह भारतीय इतिहास में एक अविस्मरणीय स्तम्भ बन गया। यह विद्रोह भारत में ब्रिटिश शासनकाल के इतिहास में एक पुराने युग की समाप्ति तथा नए युग के प्रारंभ का महान प्रतीक बन गया। इसने भारत के राजनीतिक जीवन पर गंभीर तथा व्यापक प्रभाव डाले।

3. अंग्रेजों के ईसाई धर्म के प्रचार के कारण भारतीयों में सर्वत्र यह भावना फैल गई कि अंग्रेज भारतीयों को ईसाई बनाकर उनके धर्म पर कुठाराघात कर रहे हैं। कुछ भारतीयों ने अंग्रेजी शिक्षा को भी धर्म विरोधी समझा। जब भारतीय सैनिकों को राइफलों में प्रयोग करने के लिए नए कारतूस दिए गए तो इन कारतूसों को मुँह से खोलना पड़ता था। सैनिकों में यह अफवाह फैल गई कि इन कारतूसों में पशुओं की चर्बी मिली हुई है। हिंदू और मुसलमान सैनिकों ने कारतूसों को प्रयोग करने से मना कर दिया। अतः यही इस विद्रोह का मुख्य कारण बना।

4. **1857 ई० की क्रांति की असफलता के कारण–**सन् 1857 ई० का विद्रोह नितांत असफल रहा, जिसके लिए निम्नलिखित कारक उत्तरदायी थे–

   (i) विद्रोहियों के पास सत्ता छीनने के बाद कोई सुनिश्चित कार्यक्रम नहीं था। उनके पास कोई सामान्य कार्य-योजना भी नहीं थी। विद्रोहियों के पास आधुनिक युद्धकला के अस्त्र-शस्त्र नहीं थे। वे भालों, तलवारों तथा पुराने किस्म की बंदूकों से लड़े। इसके विपरीत, ब्रिटिश लोगों के पास युद्ध के श्रेष्ठ साधन एवं हथियार थे।

   (ii) विद्रोह के नेता बहादुर तथा देशभक्त तो थे, किंतु योग्य सेनापति नहीं थे। उनमें सैन्य सेनापति थे।

   (iii) नेतृत्व के अभाव में विद्रोही असफल रहे। झाँसी की रानी बहादुर

थी, किंतु संपूर्ण अभियान की प्रभारी नहीं थी। विद्रोही बहादुर तथा स्वार्थरहित थे, किंतु अनुशासित नहीं थे। कभी-कभी वे अनुशासित सेना की अपेक्षा विद्रोही भीड़ जैसा व्यवहार करते थे। अतः निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि केंद्रीय नेतृत्व का पूर्णतया अभाव था।

(iv) विद्रोह स्थानीय रूप से सीमित था। यह संपूर्ण देश में व्याप्त नहीं हो सका जिससे इसे अखिल भारतीय संघर्ष कहा जाता। सिंध तथा पंजाब खामोश रहे, राजपूताना ब्रिटिश शासकों का वफादार रहा। दोस्त मोहम्मद (अफगानिस्तान का शासक) ब्रिटिश लोगों का मित्र बना रहा। बंगाल में कोई हलचल नहीं हुई। नेपाल के गोरखा तथा ग्वालियर के सिंधिया ने विद्रोह दबाने में ब्रिटिश लोगों की सहायता की।

(ग) अतिलघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. ब्रिटिश साम्राज्य की नींव 1857 ई॰ की क्रांति से हिल गई थी।

2. क्रांति की वास्तविक शुरुआत 10 मई 1857 ई॰ को मेरठ में हुई।

3. 1857 की महान् क्रांति के प्रमुख केंद्र निम्नलिखित थे–मेरठ, कानपुर, दिल्ली, लखनऊ तथा झाँसी।

4. 1857 की क्रांति के लिए 31 मई की तिथि निश्चित की गई थी।

5. महारानी विक्टोरिया की घोषणा 1 नवंबर, 1858 ई॰ को लॉर्ड कैनिंग ने इलाहाबाद के मिंटो पार्क में पढ़ा था।

(घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

I. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

उत्तर– 1. (i) रंगून 2. (i) 10 मई को 3. (i) अमृतसर
4. (i) 85 5. (iii) दोनों को

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

उत्तर– 1. लॉर्ड **कैनिंग** ने महारानी विक्टोरिया का घोषणा-पत्र पढ़ा।

2. बेगम हजरत महल लखनऊ छोड़कर **नेपाल** चली गईं।

3. विद्रोह के प्रसद्धि **नेताओं** में से कोई भी व्यक्ति **सेना** का नहीं था।

4. बैरकपुर में **मंगल पांडे** ने विद्रोह किया।

III. सही कथन के सामने (✓) तथा गलत कथन के सामने (✗) के

चिह्न लगाइए–

उत्तर– 1. (✗) 2. (✗) 3. (✗) 4. (✗) 5. (✓)

IV. सही जोड़े बनाइए–

उत्तर–

1.	तात्या टोपे	**(i)**	**कानपुर**
2.	बेगम हजरत महल	**(ii)**	**लखनऊ**
3.	रानी लक्ष्मीबाई	**(iii)**	**झाँसी**
4.	कुंवर सिंह	**(iv)**	**बिहार**
5.	खान बहादुर खान	**(v)**	**बरेली**

परियोजना कार्य

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

6 राष्ट्रीय आंदोलन एवं स्वतंत्रता

अभ्यास

(क) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का प्रथम चरण

इंडियन नेशनल कांग्रेस

सन् 1885 में इंडियन नेशनल कांग्रेस की स्थापना के साथ भारतीय राजनीतिक जीवन में एक युग का आरंभ हुआ इंडियन नेशनल कांग्रेस की नींव एक सेवानिवृत्त भारतीय सार्वजनिक सेवा अधिकारी ए०ओ० ह्यूम ने डाली थी। इसका प्रथम चरण 28 दिसंबर, सन् 1885 ई० में आयोजित किया गया और व्योमेश चंद्र बनर्जी को अध्यक्ष चुना गया था।

नरमपंथी (1885-1905 ई०)

कांग्रेस के प्रथम चरण (1885-1905 ई०) में कांग्रेस की माँगें बहुत साधारण थीं जो संवैधानिक सुधारों, आर्थिक रियायतों, प्रशासनिक पुनर्गठन तथा नागरिक अधिकारों की रक्षा मात्र तक सीमित थीं। अतएव संगठन के प्रारंभिक अधिवेशनों में पारित प्रस्तावों में आयोगों की नियुक्ति, केंद्रीय तथा प्रांतीय विधान परिषदों के कार्य के उदारीकरण, भारतीय सिविल सेवा परीक्षाओं को भारत में ही आयोजित करने तथा सेना पर व्यय कम करने मात्र पर ही बल दिया गया।

अधिकांश प्रारंभिक कांग्रेसियों ने संवैधानिक माध्यमों में विश्वास रखा और ब्रिटिश सरकार की आलोचना में नर्म एवं मृदुल बने रहे, उन्हें नरमपंथी कहा गया। 1905 ई० तक नरमपंथियों को ब्रिटिशों के न्याय एवं निष्पक्ष कार्य में विश्वास था। इसलिए उन्होंने प्रार्थनाओं और याचिकाओं के साथ आंदोलन जारी रखा। लेकिन ब्रिटिश उनके प्रति बहरे बन चुके थे। तब भारतीयों को इस बात की अनुभूति हुई कि ब्रिटिश सरकार सच्ची और न्यायायिक रही थी। इसलिए धीरे-धीरे उनमें अविश्वास पैदा हो गया और अंततः कांग्रेस में चरमपंथियों का उदय हुआ।

चरमपंथी (1905-1918 ई०)

''स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है'' (उग्रवाद का विकास)

भारत में परिवर्तनकारी राष्ट्रीय विचार 1857 ई० के विद्रोह से निरंतर बढ़ रहे थे। सरकार के दमन-चक्र के बावजूद इनमें तेजी से वृद्धि हो रही थी। बीसवीं शताब्दी आरंभ होने तक ग्रामीण जनता, कृषकों तथा श्रमिकों में असंतोष व्याप्त हो चुका था। बड़ी संख्या में नेता अपनी माँगों में मुखर तथा कार्य में सक्रिय हो चुके थे। ये नेता परिवर्तनकारी राष्ट्रवादी अथवा चरमपंथी (उग्रवादी) कहलाए।

2. जलियाँवाला बाग हत्याकांड, तुर्की का विभाजन, देश में बढ़ रही बेकारी, महँगाई आदि से उत्पन्न विकट स्थिति में महात्मा गांधी ने असहयोग आंदोलन छेड़ने का फैसला किया। गांधी जी ने ''कैसर-ए-हिंद'' की उपाधि वापस कर दी। कलकत्ता में आयोजित कांग्रेस के अधिवेशन में गांधी जी के असहयोग आंदोलन का समर्थन किया गया। आंदोलन की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित थीं–

(i) छात्रों ने सरकारी स्कूल-कॉलेजों का बहिष्कार किया तथा स्वदेशी स्कूलों में पढ़ना स्वीकार किया।

(ii) कई सरकारी कर्मचारियों ने सरकारी पदों से त्याग-पत्र दे दिया।

(iii) अंग्रेजी वस्तुओं का बहिष्कार किया गया तथा स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग पर जोर दिया गया।

(iv) गांधी जी ने चरखा के माध्यम से लोगों में आत्मनिर्भरता की भावना को भरने का प्रयास किया।

(v) 1921 ई० में प्रिंस ऑफ वेल्स (इंग्लैंड के राजकुमार) की भारत यात्रा का लोगों ने बहिष्कार किया तथा सारे देश में हड़ताल रही।

3. लॉर्ड माउंटबेटन 22 मार्च, 1947 ई० को भारत आए। इस समय भारत में

सांप्रदायिक हिंसा जारी थी, उन्हें लगा कि भारत का विभाजन जरूरी है। उन्होंने विभाजन की योजना बनाई तथा उसे ब्रिटिश संसद में पेश किया। इस योजना को माउंटबेटन योजना कहते हैं, जिसे 3 जून, 1947 ई० में प्रस्तुत किया गया। उन्होंने यह घोषणा भी कि सत्ता का हस्तांतरण जून 1948 की बजाय 15 अगस्त, 1947 को होगा और भारत को दो देशों भारत तथा पाकिस्तान में विभाजित किया जाएगा।

कांग्रेस के पास सांप्रदायिक हिंसा रोकने का कोई अन्य विकल्प नहीं था। परंतु इसने कुल मिलाकर दो राष्ट्रों के सिद्धांत को नकार दिया। लेकिन, इस सिद्धांत को स्वीकार करने के बाद ब्रिटिश संसद ने 18 जुलाई, 1947 को भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम पारित कर दिया। इसमें एक नए राष्ट्र पाकिस्तान की भी घोषणा की गई थी। इस नए राष्ट्र में ब्लूचिस्तान, सिंधु, उत्तर-पश्चिमी सीमांत प्रांत, पश्चिमी पंजाब तथा पूर्वी बंगाल को रखा गया था। इस प्रकार जिन्ना के नेतृत्व में 14 अगस्त, 1947 ई० को पाकिस्तान का प्रादुर्भाव हो गया। 15 अगस्त, 1947 को भारत स्वतंत्र हो गया। कई शताब्दियों के बाद भारत को स्वतंत्रता प्राप्त हुई थी। भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने कहा कि इस मध्य रात्रि के समय भारत को एक नया जीवन प्राप्त हुआ है।

4. **गांधी जी के नेतृत्व में स्वतंत्रता आंदोलन की प्रगति**–गांधी जी ने प्रथम विश्वयुद्ध में अंग्रेजी सरकार की यह सोचकर बड़ी मदद की थी कि युद्ध के बाद अंग्रेज भारत को स्वाधीन कर देंगे। इसके विपरीत, अंग्रेजी सरकार ने युद्ध समाप्ति के बाद कई दमनकारी कानून बनाए, जिनमें रौलेट एक्ट प्रमुख था। इसके अंतर्गत सरकार किसी भी व्यक्ति को बिना कारण बताए कैद कर सकती थी। अंत में निराश गांधी जी ने फरवरी 1919 ई० में रौलेट एक्ट के विरोध में सत्याग्रह आंदोलन प्रारंभ कर दिया। गांधी जी का मानना था कि यदि हमारी बात सत्य है तो उसे सिर्फ आग्रह के माध्यम से प्राप्त करना चाहिए न कि जोर-जबरदस्ती या हिंसा से। वे सत्य को हिंसा के माध्यम से प्राप्त करने के विरुद्ध थे।

   गांधी जी ने स्वतंत्रता आंदोलन में असहयोग एवं अवज्ञा दो नए तरीके जोड़े। गांधी जी ने चंपारन (बिहार), खेड़ा (गुजरात) एवं अहमदाबाद में अपनी तकनीक अर्थात् सत्याग्रह का प्रयोग किया। इसके फलस्वरूप गांधी जी अखिल भारतीय नेता के रूप में उभरे।

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. बंगाल, राष्ट्रीय आंदोलन का महत्त्वपूर्ण केंद्र और उस समय का एक बड़ा प्रेजिडेंसी प्रांत था, उसमें वर्तमान का बांग्लादेश, पं॰ बंगाल, बिहार, झारखंड, असम और ओडिशा के भाग सम्मिलित थे, कर्जन ने 1905 ई॰ में बहाने बनाकर बंगाल को विभाजित कर दिया कि प्रबंधकीय उद्देश्यों के कारण यह संचालित नहीं हो पा रहा था। जबकि यह विभाजन सांप्रदायिकता पर आधारित था। बंगाली एकता को भंग करने की उसकी कोशिश ने विभाजन के विरोध की चिंगारी को भड़का दिया जिसको लोगों ने उपवासों, प्रदर्शनों एवं वंदे मातरम् के गायन द्वारा प्रदर्शित किया।

2. 1860 के दशक में, दादाभाई नौरोजी ने भारत के पक्ष में जनमत की स्थापना हेतु इंग्लैंड में ईस्ट इंडिया संस्था की शुरुआत की। उन्होंने 'पावर्टी एंड अनब्रिटिश रूल इन इंडिया' पुस्तक की रचना की, जिसमें उन्होंने भारत में नागरिक स्वतंत्रताओं के दमन एवं ब्रिटिशों द्वारा भारत के आर्थिक शोषण की आलोचना की।

3. 13 अप्रैल, 1919 ई॰ में दो नेताओं डॉ॰ सैफुद्दीन किचलू और डॉ॰ सत्यपाल की गिरफ्तारी के विरोध में अमृतसर में जलियाँवाला बाग में जनता एकत्र हुई। सभा शांतिपूर्ण थी। सभा में काफी संख्या में वृद्ध पुरुष, स्त्रियाँ और बच्चे थे। तभी अचानक ब्रिटिश अफसर जनरल डायर अपने सैनिकों को लेकर पार्क में पहुँचा। जनता को कोई चेतावनी दिए बिना ही उसने अपने सैनिकों को गोली चलाने का आदेश दिया। सैनिकों ने दस मिनट तक निहत्थे लोगों पर गोलियाँ चलाईं। कांग्रेस के अनुमान के अनुसार उन दस मिनटों में करीब 1,000 आदमी मारे गए और करीब 2,000 जख्मी हुए।

4. **पूर्ण स्वाधीनता की माँग–**सन् 1929 ई॰ में कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन लाहौर में हुआ। जवाहरलाल नेहरू इस अधिवेशन के अध्यक्ष थे। इस अधिवेशन में गांधी जी द्वारा 31 दिसंबर, 1929 ई॰ को पेश किया गया एक प्रस्ताव स्वीकार कर लिया गया। उस प्रस्ताव में घोषणा की गई कि कांग्रेस के संविधान की धारा 1 के 'स्वराज' शब्द का अर्थ होगा 'पूर्ण स्वाधीनता।' पूर्ण स्वाधीनता की प्राप्ति के लिए सविनय अवज्ञा आंदोलन चलाने का निर्णय लिया गया।

5. **स्वतंत्रता प्राप्ति के अंतिम कदम–**द्वितीय विश्वयुद्ध के बीच में महात्मा गांधी ने ब्रिटिशों के खिलाफ एक नए चरण के आंदोलन की शुरुआत करने का निर्णय लिया। उन्होंने बताया कि अंग्रेजों को तुरंत भारत छोड़

देना चाहिए। लोगों से उन्होंने कहा, ''करो या मरो''। अंग्रेजों से अपने प्रयासों में लेकिन तुम्हें अहिंसात्मक रूप से लड़ाई करनी है। गांधी जी और अन्य नेता जेल गए परंतु आंदोलन फैलता गया। किसानों और युवाओं ने इसमें जुड़ना जारी रखा। संचार और राज्य सरकार के चिह्नों पर देश में सब जगह हमले हुए। बहुत-से क्षेत्रों में लोगों ने अपनी सरकार बना ली। सबसे पहले तो अंग्रेजों ने भीषण दमन द्वारा प्रतिक्रिया दी। सन् 1943 के अंत तक 90,000 से अधिक लोग गिरफ्तार हो गए और लगभग 1000 लोग पुलिस गोलाबारी में मारे गए। विद्रोहियों ने अंततः ब्रिटिश राज को घुटनों पर ला दिया। इसी काल में बंगाल में अकाल आने से लगभग 30 लाख मारे गए। अंग्रेजों ने अपने सैनिकों की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु खाद्य वस्तुओं का आयात किया, जबकि भारतीय लोग भूखे मरे। इस समय किसान सभाओं ने सहायता कार्यों में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

(ग) अतिलघु उत्तरीय प्रश्न–

1. लॉर्ड माउंटबेटन 22 मार्च, 1947 ई० को भारत आए।

2. सन् 1929 ई० को लाहौर में होने वाले कांग्रेस अधिवेशन के अध्यक्ष पं० जवाहरलाल नेहरू थे।

3. स्वराज शब्द का अर्थ है–स्व + राज अर्थात् स्व (अपना) + राज (अधिकार) जो भारतीयों ने अपने आंदोलन में प्रयोग किया।

4. ऐतिहासिक डांडी यात्रा 12 मार्च, 1930 को प्रारंभ हुई।

(घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

I. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

1. (iii) 78
2. (ii) 23 मार्च, 1931 को
3. (iv) दादाभाई नौरोजी ने
4. (iii) दादाभाई नौरोजी को

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. 1876 में सुरेंद्रनाथ बनर्जी ने **कलकत्ता** में **भारतीय संस्था** की स्थापना की।
2. ब्रिटिश सरकार **सच्ची** और न्यायिक नहीं थी।
3. गांधी जी ने स्वतंत्रता आंदोलन में असहयोग तथा **अवज्ञा** दो नए तरीके जोड़े।
4. सन् 1922 में कांग्रेस का अधिवेशन **गया** में हुआ।
5. कई **शताब्दियों** के बाद भारत की स्वतंत्रता प्राप्त हुई थी।

III. **सही कथन के सामने (✓) तथा गलत कथन के सामने (✗) का चिह्न लगाइए–**

1. (✗) 2. (✓) 3. (✓) 4. (✓)

परियोजना कार्य

छात्र स्वयं करें।

7 स्वतंत्रता के पश्चात् का भारत

अभ्यास

(क) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. राज्यों का पुनर्गठन–सन् 1920 के दशक में स्वतंत्रता संघर्ष की मुख्य पार्टी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने आश्वासन दिया था कि जैसे ही देश आजाद होगा, प्रत्येक बड़े भाषायी समूह का अपना अलग प्रांत होगा परंतु स्वतंत्रता मिलने के बाद कांग्रेस ने इस आश्वासन को पूरा करने के लिए कोई कदम नहीं उठाया, क्योंकि भारत धर्म के आधार पर बँट चुका था। इसलिए महात्मा गांधी की तमाम इच्छाओं और प्रयासों के बावजूद यह स्वतंत्रता एक राष्ट्र को नहीं, बल्कि दो राष्ट्रों को मिल रही थी। विभाजन के फलस्वरूप हिंदुओं और मुसलमानों के बीच हुए भीषण दंगों में 10 लाख से अधिक लोग मारे गए थे। अतः यह चिंता स्वाभाविक थी कि क्या हमारा देश भाषा के आधार पर इस तरह के और बँटवारे झेल सकता था?

प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू और उपप्रधानमंत्री वल्लभभाई पटेल दोनों ही भाषा के आधार पर राज्यों के गठन की नीति के विरोधी थे। क्योंकि कांग्रेस के नेता अपने वायदे से पीछे हट रहे थे इसलिए जगह-जगह असंतोष फैला हुआ था। कन्नड़ भाषी, मलयालम भाषी, मराठी भाषी, सभी अपने-अपने राज्य के इंतजार में थे। सबसे गहरा असंतोष मद्रास प्रेजीडेंसी के तेलुगू भाषी जिलों में दिखाई दिया। अक्टूबर 1952 ई० में वयोवृद्ध गांधीवादी नेता पोट्टी श्रीरामुलु तेलुगू भाषियों के हितों की रक्षा के लिए आंध्र राज्य के गठन की माँग करते हुए भूख हड़ताल पर बैठ गए। 58 दिन के अनशन के बाद 15 दिसंबर, 1952

ई॰ को पोट्टी श्रीरामुलु का देहांत हो गया। व्यापक विरोध के कारण केंद्र सरकार को आखिर यह माँग माननी पड़ी। इस तरह 1 अक्टूबर, 1953 ई॰ को आंध्र प्रदेश के रूप में एक नए राज्य का गठन हुआ।

2. **संविधान का निर्माण–**भारत का संविधान आसानी से नहीं बना। हमारे नेताओं को देश में स्वशासन की माँग पूरी करने के लिए कठिन एवं निरंतर संघर्ष करना पड़ा। यह अध्ययन करना रोचक होगा कि हमारा संविधान कैसे बना तथा इसे किसने बनाया?

स्वतंत्रता के पूर्व हमारा देश ब्रिटिश शासकों द्वारा बनाए गए नियमों से शासित होता था। वे नियम ब्रिटिश लोगों के हितों की पूर्ति करते थे। कैबिनेट मिशन ने 1946 ई॰ में यह संस्तुति की कि भारत के लिए नया संविधान बनाने हेतु एक संविधान सभा का गठन किया जाना चाहिए। संविधान सभा के सदस्य प्रांतीय विधानसभाओं द्वारा चुने गए। इनमें से अधिकांश सदस्य भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से संबंधित थे। संविधान सभा में विभिन्न समुदायों, प्रदेशों, राजनीतिक दलों तथा देश के कानूनविदों का प्रतिनिधित्व था। डॉ॰ राजेंद्र प्रसाद इसके चेयरमैन (अध्यक्ष) थे।

प्रस्तावित संविधान के सिद्धान्तों की रूपरेखा संविधान सभा की विभिन्न समितियों द्वारा बनाई गई। संविधान सभा ने डॉ॰ भीमराव अम्बेडकर की अध्यक्षता में आठ सदस्यों वाली एक ड्राफ्टिंग कमेटी भी नियुक्त की। ड्राफ्टिंग कमेटी ने ग्रेट–ब्रिटेन, संयुक्त राज्य अमेरिका, सोवियत संघ, फ्रांस, आयरलैंड, स्विट्जरलैंड आदि अनेक देशों के संविधानों का अध्ययन किए। उन्होंने इन संविधानों में से वे ही सिद्धांत चुने जो भारतीय आवश्यकताओं के अनुरूप (योग्य) थे। फरवरी 1948 तक ड्राफ्ट तैयार कर लिया गया। इसे देश के प्रमुख समाचार-पत्रों में प्रकाशित किया गया। संविधान सभा ने कई सत्रों में संविधान पर चर्चाएँ तथा विचार-विमर्श किए। संविधान सभा को अपना कार्य पूरा करने में 2 वर्ष, 11 मास तथा 18 दिन का समय लगा। अंततः 26 नवंबर, 1949 में संविधान पारित हुआ।

अंततः 26 जनवरी, 1950 ई॰ को संविधान लागू हुआ तथा उस दिन भारत एक गणतंत्र देश बन गया।

3. **स्वतंत्रता के पश्चात् शरणार्थियों की समस्या–**स्वतंत्रता के पश्चात् भारत को सर्वप्रथम शरणार्थियों के पुनर्वास की समस्या का सामना करना पड़ा। विभाजन के समय सर्वत्र भय तथा आतंक का वातावरण व्याप्त था। विभाजन रेखा के दोनों ओर आगजनी, हत्या तथा मारकाट मची थी। उथल-पुथल तथा अराजकता का साम्राज्य था। सांप्रदायिक उन्माद अपने चरम शिखर पर था। बड़े पैमाने पर अभूतपूर्व हिंसा, रक्तपात तथा हत्याएँ जारी थीं। लगभग पाँच लाख हिंदू तथा मुसलमान मारे गए तथा लाखों लोग बेघर हो गए। लगभग 8.5 मिलियन लोग भारत में अप्रवासित हुए। शरणार्थियों का असीमित प्रवाह लंबे समय तक बना रहा।

भारत सरकार ने इन शरणार्थियों को यथासंभव सहायता प्रदान की। विस्थापित लोगों को तात्कालिक सहायता देने मात्र की ही समस्या नहीं थी, वरन् उनका पुनर्वास तथा उन्हें रोजगार प्रदान करने की भी जटिल समस्याएँ थीं। इसी उद्देश्य से पुनर्वास मंत्रालय का गठन विशेष रूप से किया गया। विश्वयुद्ध तथा विभाजन के कारण पहले से ही देश की अर्थव्यवस्था पर भारी दबाव था। विस्थापितों को भोजन तथा आवास की सहायता प्रदान करने के लिए शरणार्थी शिविर खोले गए। इसके पश्चात् उनके पुनर्वास का नियोजित कार्यक्रम बनाया गया। शरणार्थियों को पाकिस्तान चले जाने वाले परिवारों के खाली पड़े घरों तथा नगरीय क्षेत्रों में नई झोंपड़ियों में ठहराया गया। नए नगर तथा कॉलोनियाँ बनवाई गईं। जिन लोगों की अचल संपत्ति (जमीन, मकान) पाकिस्तान में रह गईं थी, उन्हें हर्जाना दिया गया। मध्य तथा छोटे पैमाने के अनेक उद्योग स्थापित किए गए अथवा उनका विस्तार किया गया, जिनमें लाखों विस्थापितों को रोजगार दिया गया। कृषकों को भूमि तथा ऋण दिए गए, जिससे वे अपना व्यवसाय शुरू कर सकें। इन उपायों से शरणार्थी समस्या को सुलझाया गया तथा लगभग तीन वर्ष के समय में स्थिति को नियंत्रण में लाया जा सका।

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. पुर्तगाली उपनिवेशों में सशस्त्र संघर्ष काफी पहले शुरू हो गया था और अठारहवीं, उन्नीसवीं तथा बीसवीं सदियों में जारी रहा। गोवा में

राष्ट्रीय आंदोलन के जनक त्रिस्ताओं ब्रगांज कुन्हा थे, जिन्होंने सन् 1928 ई० में कांग्रेस कमेटी की स्थापना की थी। गोवा के अनेक स्वाधीनता सेनानियों को यातनाएँ दी गईं और जेलों में ठूँसा गया और कइयों को मृत्युदंड दिया गया। सन् 1954 ई० में स्वाधीनता सेनानियों ने दादरा और नगर हवेली को पुर्तगाली शासन से मुक्त कराया। सन् 1955 ई० में गोवा में एक सत्याग्रह आंदोलन शुरू हुआ। निहत्थे-सत्याग्रहियों ने गोवा में प्रवेश किया। पुर्तगाली सैनिकों ने उन पर गोलियाँ चलाईं और उनमें से कइयों को मार दिया। पुर्तगाल के शासन को उखाड़ फेंकने के लिए गोवा के कुछ लोगों ने सशस्त्र दल बनाए। अंत में दिसंबर सन् 1961 ई० में भारतीय सेना गोवा पहुँचीं और पुर्तगालियों ने समर्पण कर दिया। गोवा भारत का अंग बन गया। उसके साथ ही समूचा भारत स्वतंत्र हो गया।

2. स्वतंत्रता के समय भारत में कुछ फ्रांसीसी एवं पुर्तगाली उपनिवेश भी थे। फ्रांसीसी शासन के अंतर्गत पांडिचेरी, कराइकल, यमन, माहे तथा चंद्रनगर और पुर्तगाली शासन के अंतर्गत–गोवा, दमन-दीव तथा दादरा और नगर हवेली थे।
3. स्वतंत्रता प्राप्ति के तुरंत बाद भारत की सबसे बड़ी समस्या लाखों शरणार्थियों को विस्थापित करना था, जो पाकिस्तान से आए थे।
4. भारत के कई राज्य हिंदी को राजभाषा बनाए जाने के पक्ष में नहीं थे और आज भी कई राज्यों की राजभाषा अंग्रेजी है। इसलिए स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी अंग्रेजी को भी भारत की सरकारी काम-काज की भाषा बना रखा है।
5. स्वतंत्रता प्राप्ति तक जूनागढ़, हैदराबाद और जम्मू कश्मीर ये तीन रियासतें भारत में नहीं मिली थीं।

(ग) अतिलघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद देश को एक महान् त्रासदी का सामना करना पड़ा, जब 30 जनवरी, 1948 ई० को गांधी जी को एक धर्मांध नाथूराम गोड़से ने गोली मारकर हत्या कर दी।

2. स्वतंत्रता के समय हैदराबाद पर निजाम का शासन था।
3. इस समय भारत में 29 राज्य तथा 7 केंद्रशासित प्रदेश हैं।

4. जूनागढ़ का नवाब पाकिस्तान भाग गया।
5. वर्तमान में 22 भाषाएँ अधिकृत हैं।

1. असमिया	7. संस्कृत	13. तेलुगू	19. डोगरी
2. बंगाली	8. मराठी	14. उर्दू	16. संथाली
3. गुजराती	9. कन्नड़	15. सिंधी	21. बोडो
4. हिंदी	10. मलयालम	16. नेपाली	22. मैथिली
5. कश्मीरी	11. उड़िया	17. मणिपुरी	
6. पंजाबी	12. तमिल	18. कोंकणी	

6. संविधान बनाने का कार्य 26 नवंबर, 1949 को पूरा हुआ।

(घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

I. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

उत्तर– 1. (i) 1951 ई॰ में 2. (ii) 1950 ई॰ में
3. (iii) डॉ॰ राजेंद्र प्रसाद की 4. (ii) सन् 1961 में

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

उत्तर– 1. 1954 में दादरा और **नगर** हवेली स्वतंत्र हुए।
2. आजादी से पूर्व संपूर्ण देश में **562** रियासतें थीं।
3. गांधी जी की हत्या से पूरा देश **शोक** में डूब गया।
4. हमारे देश का संविधान 26 जनवरी, **1950** को लागू हुआ।
5. **हिंदी** स्वतंत्र भारत की सामान्य भाषा होगी।
6. स्वतंत्रता के पश्चात् **राज्यों** का पुनर्गठन भी एक समस्या थी।

III. सही कथन के सामने (✓) तथा गलत कथन के सामने (✗) के चिह्न लगाइए–

उत्तर– 1. (✗) 2. (✗) 3. (✓) 4. (✗) 5. (✓)

परियोजना कार्य

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

मानचित्र कार्य

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

1 संसाधन और उसके प्रकार

अभ्यास

(क) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. **संसाधनों का वर्गीकरण–**प्राकृतिक संसाधन कई आधारों पर वर्गीकृत किए जा सकते हैं। इन संसाधनों के वर्गीकरण का उद्देश्य प्रमुखतः यह निर्धारित करना है कि हमारे द्वारा किसी संसाधन को एक विशेष श्रेणी के अंतर्गत किस प्रकार रखा जाए। संसाधनों का वर्गीकरण भिन्न-भिन्न आधारों पर निर्भर करता है–

(i) **नवीकरणीयता के आधार पर–**एक निश्चित कालावधि में संसाधनों की उपलब्धता के आधार पर संसाधनों को तीन श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है–नवीकरणीय अथवा अक्षीय भंडार, अनवीकरणीय अथवा क्षयनीय तथा चक्रीय।

(ii) **उत्पत्ति के आधार पर–**पृथ्वी पर पाए जाने वाले संसाधनों को दो श्रेणियों–जैविक एवं अजैविक में विभाजित किया जा सकता है। जैविक संसाधन सजीव वस्तुओं से प्राप्त होते हैं। इनमें पौधे, पशु, सूक्ष्म जीव तथा उनके उत्पाद शामिल हैं। निर्जीव वस्तुओं से निर्मित समस्त संसाधन अजैविक संसाधन कहलाते हैं। भूमि, जल, खनिज, लोहा, ताँबा, शीशा तथा सोना अजैविक संसाधन हैं।

(iii) **संसाधनों के विकास की अवस्था के अनुसार–**

(a) **संभाव्य संसाधन–**ऐसे संसाधन, जो हमारे चारों ओर उपस्थित हैं, परंतु उचित प्रयोग हेतु पूर्ण उपयोगी नहीं हैं, संभाव्य संसाधनों के रूप में वर्गीकृत किए जा सकते हैं।

(b) **यथार्थ संसाधन–**ऐसे संसाधन जिनका मानव पहले से ही उपयोग करता आ रहा है, यथार्थ संसाधन कहलाते हैं।

(c) **मानव संसाधन–**किसी भी प्राकृतिक संसाधन का महत्त्व मनुष्य द्वारा प्रयोग विधि पर निर्भर करता है। किसी क्षेत्र विशेष के प्राकृतिक संसाधन केवल तभी संबंधित क्षेत्र को समृद्धि एवं धन प्रदान कर सकते हैं, जब जनता द्वारा

उनका बुद्धिमत्तापूर्वक दोहन किया जाए। अतः अंतिम रूप से मानव सभी संसाधनों में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है।

(d) **मानव निर्मित संसाधन–**प्राकृतिक संसाधन जैव भौतिक पर्यावरण के तत्व हैं। वे तब तक संसाधन नहीं हो सकते हैं, जब तक मानव उन्हें संरक्षित नहीं करता है। प्रकृति का केवल वह भाग जो मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति करता है, संसाधन कहलाता है।

2. संसाधन वह कोई भी वस्तु है, जिसका उपयोग मानव अपनी जीवन दशाओं को बेहतर बनाने के लिए करता है। दूसरे शब्दों में, जिस वस्तु के प्रयोग से हमारी जीवन दशाओं में किसी भी प्रकार का लाभकारी परिवर्तन होता है, हम उसे संसाधन का नाम देते हैं जैसे हम कोयले के प्रयोग के द्वारा भोजन बनाने के लिए आवश्यक ऊर्जा प्राप्त करते हैं इसलिए कोयले को संसाधन कहा जाता है। इसी प्रकार से प्रकृति से प्राप्त विभिन्न वस्तुएँ जैसे भूमि, जल, खनिज, चट्टान आदि हमारे लिए महत्त्वपूर्ण संसाधन हैं। संसाधनों का मानव जीवन के लिए बहुत अधिक उपयोग है। हमारी संपूर्ण विकास प्रक्रिया संसाधनों के यथोचित उपयोग पर ही आधारित है। हमने प्रकृति से प्राप्त विभिन्न संसाधनों को विभिन्न उद्देश्यों के आधार पर बाँटा और उनका उपयोग किया। हमने खनिजों और अयस्कों से अपने जीवन में काम आने वाली अनेकानेक वस्तुएँ बनाईं तथा कोयले, पेट्रोलियम, खनिज तेल, प्राकृतिक गैस आदि से ऊर्जा प्राप्त की, जिसकी सहायता से हमने विभिन्न प्रकार की मशीनें चलाईं। इन सभी तत्वों से यह कहा जा सकता है कि संसाधन हमारे जीवन में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और इनके अभाव में जीवन का सुचारु रूप से चलना बहुत कठिन है।

3. निम्नलिखित विधियों को अपनाकर हम संसाधनों का संरक्षण कर सकते हैं और उन्हें लंबे समय तक उपयोग में ला सकते हैं–

   (i) अनवीकरणीय संसाधनों के विकल्प खोजे जाने चाहिए।

   (ii) हस्तांतरण में कमी और संसाधनों का वितरण कम करना चाहिए।

   (iii) निम्न गुण वाले अयस्कों के उपयोग के लिए नई विधियाँ खोजी जानी चाहिए।

(iv) जंगली जीवन को सुरक्षा और संरक्षण प्रदान करने के लिए राष्ट्रीय उद्यान और शरण-स्थल बनाए जाने चाहिए।

(v) वृक्षों की कटाई को रोका जाना चाहिए और अधिक-से-अधिक पौधे लगाने चाहिए।

(vi) उद्योगों और घरेलू प्रयोग से व्यर्थ हुए जल का पुनर्चक्रण करना चाहिए।

(vii) नदियों पर बाँध बनाए जाने चाहिए ताकि जल का उपयोग सिंचाई और विद्युत उत्पन्न करने में किया जा सके।

(viii) चूँकि भूमि संसाधन सीमित है। इसीलिए बंजर भूमि को उपजाऊ भूमि में परिवर्तित करना चाहिए और उसे कृषि योग्य बनाना चाहिए।

4. विकसित और विकासशील देशों को उनके विकास के स्तर के आधार पर विभाजित किया जाता है। विकसित देशों में हमें विकास अपने उच्चतम स्तर पर दृष्टिगोचर होता है। जहाँ जनसंख्या का घनत्व अपेक्षाकृत कम है और अधिकांश कार्यरत जनसंख्या द्वितीयक और तृतीयक उद्योगों में लगी हुई है। द्वितीयक और तृतीयक उद्योगों के विकास के लिए प्राकृतिक संसाधनों का सम्मोचित उपयोग किया जाना अत्यंत आवश्यक है। इसी कारण से हमें इन देशों में प्रति व्यक्ति उपभोग की दर बहुत अधिक दिखाई देती है। उदाहरण के लिए प्रति व्यक्ति विद्युत की खपत भारत में प्रति व्यक्ति विद्युत की खपत से बहुत अधिक है। इसके विपरीत विकासशील देश अपने विकास की प्रारंभिक अवस्था में है जिसके कारण वहाँ संसाधनों का अधिकतम उपयोग नहीं किया जाता है और अधिकांश लोग प्राथमिक उद्योगों में संलिप्त हैं। अतः वे अपनी आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए विकास को ही प्राथमिकता देते हैं।

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. कोई भी वस्तु जिससे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मानव की आवश्यकताओं की पूर्ति होती है। संसाधन कहलाती है।

2. मानव निर्मित संसाधनों में मशीनें, औजार, प्रौद्योगिकी, पूँजी, मकान तथा इमारतें, यातायात और संचार के साधन, सामाजिक और राजनीतिक संस्थाएँ आदि सभी अनेक प्रकार के संसाधन हैं।

3. पशु संसाधन एक प्राकृतिक संसाधन है। पशु संसाधन में हमारे गाय, भैंस, बैल आदि आते हैं, जो मानव की सहायता करते हैं तथा उसके

अनेक कामों में उसकी सहायता करते हैं।

4. कृषि करने के लिए जो संसाधन उपयोग में लाए जाते हैं। कृषि संसाधन कहलाते हैं।

(ग) अतिलघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. वे संसाधन, जिन्हें समाप्ति अथवा पूर्ण रूप से प्रयोग किए जाने के पश्चात् नवीकृत अथवा पुनः उत्पादित किया जा सकता है। नवीकरणीय संसाधन के नाम से जाने जाते हैं।

2. जैविक संसाधन सजीव वस्तुओं से प्राप्त होते हैं। इनमें पौधे, पशु सूक्ष्म जीव तथा उनके उत्पाद शामिल हैं। वन, पशु एवं मछलियाँ **जैविक संसाधन** हैं।

3. ऐसे संसाधन जिनका मानव पहले से ही उपयोग करता आ रहा है, यथार्थ संसाधन कहलाते हैं।

4. **संसाधनों के संरक्षण का महत्त्व–**संसाधनों का उपयोग वर्तमान और भावी आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर योजनाबद्ध ढंग से करना चाहिए। संसाधनों को संरक्षित कर हम उन्हें भावी पीढ़ियों के लिए संरक्षित कर सकते हैं।

(घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

I. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

उत्तर– 1. (i) सूर्य 2. (iv) तीन 3. (iv) ये सभी

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

उत्तर– 1. कोई वस्तु जो मानव की आवश्यकता और इच्छा की पूर्ति करती है **संसाधन** कहलाती है।

2. सौर ऊर्जा **प्राकृतिक** संसाधन है।

3. स्वास्थ्य, शिक्षा, प्रौद्योगिकी आदि **मानव निर्मित** संसाधन हैं।

4. **जल** चक्रीय संसाधन का उदाहरण है।

III. सही कथन के सामने (✓) तथा गलत कथन के सामने (✗) का चिह्न लगाइए–

उत्तर– 1. (✗) 2. (✗) 3. (✓) 4. (✗) 5. (✓)

(घ) निम्नलिखित स्तंभों का मिलान कीजिए–

उत्तर–	(अ)	(ब)
1.	जल	**चक्रीय संसाधन**
2.	खनिज	**अनवीकरणीय**
3.	पेट्रोलियम	**ईंधन**
4.	वन	**नवीकरणीय संसाधन**
5.	प्रौद्योगिकी	**मानव संसाधन**

परियोजना कार्य

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

2 प्राकृतिक संसाधन

अभ्यास

(क) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. **भूमि संरक्षण के उपाय–**बढ़ती जनसंख्या तथा उसकी बढ़ती माँग के कारण वन, भूमि और कृषि भूमि के अंतर्गत भूमि का क्षेत्र कम हो रहा है। इसके अतिरिक्त मानव की विभिन्न गतिविधियों के कारण भूमि का बड़े पैमाने पर विनाश हुआ है। इससे इस प्राकृतिक संसाधन के समाप्त होने का खतरा पैदा हो रहा है। इसलिए भूमि संसाधन का संरक्षण करना आवश्यक है। इसके लिए व्यक्तियों, समुदायों एवं सरकार को कुछ उपाय करने चाहिए; जैसे–वन रोपण एवं वृक्षों की अंधाधुंध कटाई को रोकना, अति चारण पर रोक लगाना एवं भूमि उपयोग की ऐसी योजनाएँ बनाना, जिनके द्वारा सीमित भूमि का सर्वोत्तम उपयोग किया जा सके, भूमि ह्रास न हो और पर्यावरण को हानि न पहुँचे।

2. **मृदा संसाधन–**धरातल की जिस ऊपरी परत पर पेड़-पौधे व फसलें उगाई जाती हैं, उसे मिट्टी कहते हैं। अपने पोषण के लिए सभी प्राणी मिट्टी पर ही निर्भर हैं। मानव अपनी सभी मुख्य आवश्यकताओं (आवास, भोजन एवं वस्त्र) की पूर्ति मिट्टी से ही करता है। इसलिए मिट्टी मनुष्य के लिए सर्वाधिक उपयोगी संसाधन है। यह नवीकरणीय संसाधन है।

मृदा की समस्याएँ–अपरदन और उर्वरता ह्रास मिट्टी की दो मुख्य

समस्याएँ हैं। भूमि पर लगातार फसल बोने से उसकी उर्वरता में कमी आ जाती है। एक ही फसल बार-बार बोने से मिट्टी की उर्वरता घट जाती है। इससे मिट्टी में कुछ पोषक तत्व कम हो जाते हैं। मिट्टी में नाइट्रोजन की मात्रा में अनेक पौधे वृद्धि करते हैं, जिससे मिट्टी की उर्वरता बनी रहती है। उर्वरकों के प्रयोग से भी मिट्टी में उर्वरता बनाई रखी जा सकती है। कुछ समय बाद रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग से मिट्टी कृषि के योग्य नहीं रह जाती। हेर-फेर से फसलें बोने से मिट्टी में उर्वरता बनी रहती है। मिट्टी की सबसे बड़ी समस्या अपरदन है। वनस्पतिविहीन मिट्टी पर अपरदन की क्रिया तीव्रगति से होती है। वर्षा तथा नदी का जल और वायु इसे ढलानों पर से नीचे की ओर ले जाते हैं। मैदानी क्षेत्रों में भी नदी तथा वर्षा से परत अपरदन एवं अवनालिका होती है।

भौतिक एवं मानवीय दोनों ही कारक इस प्रक्रिया के लिए उत्तरदायी हैं। ढाल, वायु तथा वर्षा भौतिक कारक हैं और निर्वनीकरण, अधिक चारण, उर्वरकों का अधिक प्रयोग, अत्यधिक सिंचाई (इससे लवणीकरण में वृद्धि हो जाती है) तथा कृषि के गलत तरीके (ढालों पर बिना सीढ़ीदार खेत बनाए खेती करना एवं स्थानांतरी कृषि आदि) मानवीय कारण हैं। नहरों द्वारा सिंचाई करने से लगभग 30% सिंचित क्षेत्र में लवणीकरण की समस्या उत्पन्न हो गई है।

3. **जल संरक्षण के लिए निम्नलिखित उपाय किए जा सकते हैं–**

(i) **नदियों पर बाँध बनाना–**नदियों पर बाँध बनाकर बाढ़ पर नियंत्रण किया जा सकता है तथा नदी के जल का सदुपयोग किया जा सकता है। इन योजनाओं को बहुउद्देश्यीय नदी घाटी परियोजनाएँ कहा जाता है। हमारी सरकार ने स्वतंत्रता के पश्चात् बहुत-सी योजनाएँ बनाई हैं; जैसे–भाखड़ा नांगल योजना (सतलुज नदी), दामोदर घाटी परियोजना।

(ii) **जल के प्रदूषण को रोकना–**हमारे देश में जल प्रदूषण भी एक गंभीर समस्या है। अधिकांश नदियों का जल इतना प्रदूषित हो चुका है कि इसका प्रयोग घरेलू कार्यों के लिए नहीं किया जा सकता है।

(iii) **वर्षा जल का संग्रहण करना–**हमारे देश में कुछ ही महीनों में

अधिक वर्षा होती है। हम इस वर्षा के जल को एकत्र कर सकते हैं तथा इसका प्रयोग शुष्क ऋतु में कर सकते हैं। सरकार भी लोगों को वर्षा के जल के संग्रहण के लिए जागरूक कर रही है।

(iv) **अधिक-से-अधिक नहरें बनाकर शुष्क क्षेत्रों में जल की आपूर्ति कराना–**जिन क्षेत्रों में वर्षा कम होती है तथा जल का अभाव है, उन क्षेत्रों में अधिक-से-अधिक नहरें बनाकर जल की आपूर्ति कराई जा सकती है। इंदिरा गांधी नहर इसका सबसे अच्छा उदाहरण है।

(v) **गंदे जल को पुनः स्वच्छ करके प्रयोग में लाना–**हम गंदे जल को स्वच्छ करके पुनः उपयोग में ला सकते हैं।

(vi) **जल के निरर्थक बहने को रोकना–**सभी व्यक्तियों को चाहिए कि वे जल को निरर्थक बहने से रोकें। अपने घरों या सार्वजनिक स्थलों पर जल की टोटियों को खुला नहीं छोड़ना चाहिए।

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. भूमि संसाधन हम उस स्थल को कह सकते हैं जिस पर हम निवास करते हैं। हमारी लगभग सभी आवश्यकताएँ भूमि से ही पूर्ण होती हैं। हम भूमि पर ही रहते हैं और विभिन्न प्रकार के कार्य करते हैं।

2. जनसंख्या की लगातार वृद्धि तथा बढ़ती हुई माँग के कारण मिट्टी का बड़े पैमाने पर विनाश हुआ है। मृदा की उर्वरक शक्ति को नष्ट होने से बचाने तथा अपरदन से उसकी सुरक्षा करने के लिए मृदा संरक्षण की आवश्यकता होती है। मृदा संरक्षण करके ही इसे भावी पीढ़ी के कल्याण के लिए सुरक्षित रखा जा सकता है। मृदा की उत्पादकता बढ़ाने के उपाय करना ही मृदा संरक्षण है।

3. महासागरों, वायुमंडल एवं स्थलमंडल के मध्य जल संचरण करता रहता है। एक चक्र के रूप में यह संचरण होता है। जलीय चक्र के संचार में महासागरीय जल की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। वायुमंडलीय आर्द्रता में उपस्थित जल की मात्रा काफी कम होती है, फिर भी जल-चक्र और वर्षण में यह महत्त्वपूर्ण है।

(ग) अतिलघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. सभी जीवधारियों के लिए जल एक मुख्य आवश्यकता है। जल एक महत्त्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधन है परंतु जल सीमित मात्रा में उपलब्ध है।

2. बहुउद्देशीय नदी घाटी परियोजना वे होती हैं, जिनसे अनेक प्रकार के उद्देश्यों की पूर्ति की जाती है; जैसे–बाढ़ पर नियंत्रण, सिंचाई के लिए नहरें निकालना, जल-विद्युत का उत्पादन करना आदि।
3. धरातल की जिस ऊपरी परत पर पेड़-पौधों व फसलें उगाई जाती हैं, उसे मृदा कहते हैं। अपने पोषण के लिए सभी प्राणी मृदा पर ही निर्भर हैं।

(घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

I. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

उत्तर– 1. (iv) आसवन 2. (iv) फसलों का हेर-फेर

II. सही कथन के सामने (✓) तथा गलत कथन के सामने (✗) का चिह्न लगाइए–

उत्तर– 1. (✓) 2. (✗) 3. (✓) 4. (✗)

III. सही जोड़े बनाइए–

उत्तर–

1. जल चक्र	**(i) महासागर**
2. सिंचाई	**(ii) नदियाँ**
3. वनोद्योग	**(iii) पर्वत**
4. पशुचारण	**(iv) पठार**
5. कृषि	**(v) मैदान**

परियोजना कार्य

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

3 खनिज एवं ऊर्जा के स्रोत

अभ्यास

(क) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. चट्टानों में पाए जाने वाले प्राकृतिक रूप से विभिन्न रसायनों से मिश्रित पदार्थों को खनिज कहते हैं। खनिजों के निर्माण में मानव का कोई योगदान नहीं होता। खनिज अनवीकरणीय प्राकृतिक संसाधन हैं। विभिन्न प्रकार की चट्टानों में विभिन्न प्रकार के खनिज पाए जाते हैं।

पृथ्वी की सतह के अंदर दबे शैलों से खनिज को बाहर निकालने की

प्रक्रिया खनन कहलाती है। खनिजों के खनन को प्रवेधन या आखनन द्वारा निष्कर्षित किया जा सकता है, जो खनिज अधिक गहराई में होते हैं, उन्हें निक्षेपों तक पहुँचने के लिए गहन बोधन किया जाता है, जिन्हें कूपक कहते हैं। प्राकृतिक व पेट्रोलियम गैस धरातल में बहुत नीचे पाए जाते हैं, इन्हें बाहर निकालने के लिए गहन कूपों की खुदाई की जाती है। सतह के पास स्थित खनिजों को जिस प्रक्रिया द्वारा आसानी से खोदकर निकाला जाता है, उसे आखनन कहते हैं।

2. खनिजों का वितरण–खनिजों का वितरण निम्नलिखित आधारों पर किया जाता है–

(i) **लोहा–**आज के युग को लौह युग कहा जाता है, क्योंकि लोहा एक आधारभूत धातु है जो औद्योगिक विकास के लिए महत्वपूर्ण है। कृषि तथा उद्योगों की मशीनें लोहे से ही निर्मित होती हैं। इमारतों, परिवहन के साधनों, पुलों के निर्माण आदि में लोहे का प्रयोग आवश्यक होता है। इसीलिए लोहा संसार की सबसे अधिक उपयोगी धातु है।

लौह-अयस्क विशेष रूप से झारखंड, ओडिशा, छत्तीसगढ़ और मध्य प्रदेश में पाया जाता है। भारत में काफी मात्रा में लौह-अयस्क का निर्यात भी किया जाता है।

(ii) **मैंगनीज–**यह एक महत्त्वपूर्ण धातु है। इसका उपयोग मजबूत और कठोर इस्पात बनाने में होता है। भारत के मध्य प्रदेश, ओडिशा, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, झारखंड, आंध्र प्रदेश तथा कर्नाटक राज्यों में प्रमुख रूप से मैंगनीज का उत्पादन होता है।

(iii) **ताँबा–**यह भी एक महत्त्वपूर्ण धातु है। इसका उपयोग विद्युत उपकरण, सिक्के, बर्तन तथा औजार आदि बनाने में किया जाता है। भारत में ताँबे की उपलब्धता बहुत कम है। राजस्थान, झारखंड, आंध्र प्रदेश आदि राज्यों में अल्प मात्रा में ताँबा प्राप्त होता है। भारत को अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए ताँबे का आयात करना पड़ता है।

(iv) **बॉक्साइट–**बॉक्साइट एल्युमीनियम की कच्ची धातु है। एल्युमीनियम धातु आधुनिक युग में बहुत महत्त्वपूर्ण है। विद्युत तथा ताप की सुचालक होने के कारण यह विद्युत केबल बनाने तथा वायुयानों,

घरेलू उपकरणों, बर्तनों, वाहनों तथा फर्नीचर आदि बनाने में काम आती है।

बॉक्साइट का उत्पादन मुख्य रूप से झारखंड, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र में होता है। भारत में बॉक्साइट का भी काफी मात्रा में निर्यात किया जाता है।

3. **खनिजों का संरक्षण–**खनिज संसाधन सीमित होने के साथ-साथ अनवीकरणीय संसाधन हैं। जनसंख्या के बढ़ने और औद्योगिक विकास के कारण खनिजों की माँग में वृद्धि हो रही है। विकसित देशों में यद्यपि विश्व की केवल 16% जनसंख्या निवास करती है, तथापि ये देश अधिकांश खनिज संसाधनों का उपभोग करते हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका, पश्चिमी यूरोप तथा जापान मिलाकर संसार के कुल एल्युमीनियम, ताँबे व निकिल का 70% उपयोग करते हैं। जनसंख्या की माँग पूरी करने के लिए खनिजों का उत्पादन बढ़ाना आवश्यक है। इसके लिए खनिजों के विकल्प या प्रतिस्थानी ढूँढ़ने होंगे या फिर खनिज का उपयोग घटाना होगा। पुनचर्क्रण द्वारा धातुओं को पुनः उपयोग में लाया जा सकता है। खनन तथा प्रसंस्करण की सक्षम विधियों द्वारा या खनिजों का संरक्षण किया जा सकता है।

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. ऊर्जा के परंपरागत स्रोत वे हैं जो लंबे समय से सामान्य उपयोग में लाए जा रहे हैं। ईंधन और जीवाश्म खनिज; जैसे–कोयला, खनिज तेल एवं प्राकृतिक गैस परंपरागत ऊर्जा के स्रोत हैं। विद्युत (जल-विद्युत एवं ताप विद्युत) का भी ऊर्जा के रूप में भारी मात्रा में प्रयोग किया जाता है।

2. **जीवाश्म ईंधन–**पौधों और जानवरों के अवशेष जो लाखों वर्षों तक धरती के अंदर दबे रहे थे, ताप और दाब के प्रभाव से जीवाश्मी ईंधनों में परिवर्तित हो गए। जीवाश्म ईंधन; जैसे–कोयला, खनिज तेल और प्राकृतिक गैस परंपरागत ऊर्जा के प्रमुख स्रोत हैं। इन खनिजों के भंडार सीमित हैं। विश्व की जनसंख्या जिस दर से इनका उपयोग कर रही है वह इनके निर्माण की दर से कहीं अधिक है। इसलिए ये शीघ्र ही समाप्त होने वाले हैं।

3. सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, विद्युत ऊर्जा, जल ऊर्जा और ज्वारीय ऊर्जा, ऊर्जा के वैकल्पिक स्रोत हैं।

(ग) अतिलघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. प्राकृतिक रूप से प्राप्त होने वाला पदार्थ जिसका रासायनिक संघटन होता है, 'खनिज' कहलाता है।

2. लोहा, चाँदी, सोना, एल्युमीनियम, ताँबा, निकिल कोयला, पेट्रोलियम आदि धात्विक खनिज हैं।

3. अधात्विक खनिजों में इमारतें बनाने के पत्थर, खनिज रसायन एवं रत्न सम्मिलित हैं। चूना, पत्थर, अभ्रक और जिप्सम इन खनिजों के उदाहरण हैं।

4. बॉक्साइट एल्युमीनियम की कच्ची धातु है। अतः इसका उपयोग घरेलू उपकरण बनाने के लिए किया जाता है।

(घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

I. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

उत्तर– 1. (ii) मैंगनीज 2. (ii) कोयले को

3. (iii) वे नवीकरणीय प्राकृतिक संसाधन हैं

4. (iv) ये सभी 5. (iii) मैंगनीज का

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

उत्तर– 1. लौह-इस्पात उद्योग में **लौह-अयस्क** एवं **मैंगनीज** का प्रयोग होता है।

2. लौह एक आधारभूत **इकाई** है।

3. **कृषि** की मशीनें लोहे से ही निर्मित होती हैं।

4. **सऊदी अरब** प्रमुख तेल उत्पादक राज्य है।

5. कोयला या खनिज तेल ऊर्जा के **परंपरागत** साधन हैं।

III. सही कथन के सामने (✓) तथा गलत कथन के सामने (✗) का चिह्न लगाइए–

उत्तर– 1. (✓) 2. (✓) 3. (✓) 4. (✗)

IV. सही जोड़े मिलाइए–

उत्तर–

1.	सीसा	**(i)**	**अलौह धातु**
2.	थोरियम	**(ii)**	**परमाणु ऊर्जा**
3.	हीरा	**(iii)**	**अधात्विक खनिज**
4.	काँसा	**(iv)**	**मिश्र धातु**
5.	ताँबा	**(v)**	**धात्विक खनिज**

परियोजना कार्य

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

4 कृषि

अभ्यास

(क) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. **कृषि–**कृषि अंग्रेजी पर्याय 'Agriculture' शाब्दिक रूप से लैटिन भाषा के दो शब्दों 'Ager' (भूमि का टुकड़ा) और 'Culture' (जुताई करना) से मिलकर बना है। **लोंगमैन** (Longman) के शब्दकोश के अनुसार, ''कृषि फसलों को उगाने के लिए बड़े पैमाने पर भूमि पर खेती करने की प्रक्रिया अथवा विज्ञान है।'' कृषि शब्द बहुत व्यापक है, इसके अंतर्गत अनेक विद्वान पशुपालन, मत्स्योत्पादन, रेशम कीट पालन, उद्यान, कृषि, वानिकी और मुर्गीपालन को भी सम्मिलित करते हैं।

कृषि को प्रभावित करने वाले कारक–विश्व की केवल 11 प्रतिशत भूमि कृषि योग्य है। प्रत्येक फसल के लिए कुछ मूलभूत आवश्यक तत्वों, तापमान एवं वर्षा की आवश्यकता होती है। कुछ फसलें उष्ण जलवायु में अच्छी प्रकार से उगती हैं परंतु कुछ फसलें उपोष्ण एवं शीतोष्ण जलवायु में भी अच्छी तरह से उग सकती हैं।

प्रारंभ में किसान केवल साधारण औजार प्रयोग में लाते थे। वे खोदने वाली छड़ियों, फावड़ों एवं दराँतियों आदि का प्रयोग करते थे फिर धीरे-धीरे बैलों द्वारा खींचे जाने वाले हलों का प्रयोग होने लगा। अब विकसित देशों में सभी कृषि-कार्य मशीनों से किए जाते हैं। ट्रैक्टर, जिनमें अनेक औजार जुड़े होते हैं, प्रयोग में लाए जाते हैं।

2. **स्थानांतरित कृषि–**उष्ण कटिबंधीय प्रदेश जैसे उष्ण कटिबंधीय अफ्रीका, दक्षिण-पूर्वी एशिया और भारत के कुछ भागों के घने जंगलों में रहने वाले कुछ लोगों के द्वारा ही कृषि का यह तरीका अपनाया जाता है। वृक्षों को काटकर तथा झाड़-झंखाड़ों को जलाकर कृषि के लिए भूमि को तैयार किया जाता है। मक्का, कसावा आदि फसलें साधारण औजारों की सहायता से उगाई जाती हैं।

गहन कृषि–इस पद्धति में, भूमि के छोटे-से टुकड़े से भी किसान

बढ़िया किस्म के बीज प्रयोग कर, पर्याप्त उर्वरक डालकर नियमित जलापूर्ति सुनिश्चित कर और कुछ अधिक श्रमिक लगाकर प्रति एकड़ बहुत ऊँची दर से पैदावार ले सकता है।

इस प्रकार की कृषि में किसान अपने परिवार के साथ अपने छोटे आकार की जोत पर खेती करता है। वे कीटनाशियों और कृतंकनाशियों का प्रयोग करते हैं तथा वहाँ सिंचाई जल की व्यवस्था होती है। भारत, जापान, फिलीपींस, मलेशिया, बांग्लादेश आदि में यही पद्धति अपनाई जाती है। चावल मुख्य फसल है। इनके अलावा मक्का, दालें और तिलहन भी उगाए जाते हैं।

3. **संयुक्त राज्य अमेरिका का एक फार्म–**संयुक्त राज्य अमेरिका का एक विशिष्ट फार्म लगभग 250 हेक्टेयर क्षेत्र में फैला हुआ है। सामान्यतः किसान फार्म पर ही रहता है। किसान को गेहूँ उत्पादन में विशेषज्ञता प्राप्त है। मृदा और जल संसाधनों द्वारा फसलों की जरूरतें पूरी की जा सकने की स्थिति में किसान ने यह निर्णय लिया है। वह पीड़कों के नियंत्रण के लिए उपाय करता है ताकि वे उसकी फसलों को हानि न पहुँचा सके। बोई जाने वाली फसल को निश्चित करके तथा मृदा का विश्लेषण करके किसान यह पता लगाता है कि उसमें पोषकों की मात्रा कम तो नहीं है। सही विश्लेषण जानने के लिए किसान मिट्टी को रासायनिक विश्लेषण के लिए प्रयोगशाला में भेजता है। इन परिणामों को जानकर किसान उर्वरकों के उपयोग की वैज्ञानिक योजना तैयार करता है। अमेरिकी किसान सामान्यतः रासायनिक उर्वरकों और पीड़कनाशकों पर आश्रित रहता है। किसान ट्रैक्टर, बीज बोने की मशीन, तलेक्षक, फसल काटने व बीज निकालने का यंत्र और गाहने की मशीन का उपयोग कृषि कार्यों के लिए करता है। उपजित अनाज स्वचालित अनाज भंडारों में संचित कर लिया जाता है तथा फिर बाजार में एजेंसी द्वारा बेच दिया जाता है। संयुक्त राज्य अमेरिका में किसान एक व्यापारी की तरह काम करता है। वह अपने व्यय और आय का सही-सही लेखा-जोखा रखता है।

4. **संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए–**

(क) खाद्य फसलें–खाद्य फसलों में सभी अनाज, दालें, तिलहन, पेय पदार्थ एवं कंद शामिल हैं। चावल, गेहूँ, मक्का, ज्वार-

बाजरा आदि मुख्य खाद्यान्न हैं।

चावल–चावल भारत की प्रमुख खाद्यान्न फसल है। इसके लिए गर्म एवं आर्द्र जलवायु की आवश्यकता होती है। इसके लिए 25° से० या इससे अधिक तापमान एवं 100 सेमी से अधिक वर्षा की आवश्यकता होती है। यह नदी घाटियों, डेल्टाओं तथा समुद्रतटीय मैदानों की जलोढ़ मिट्टी में उगता है। भारत का विश्व में चीन के बाद चावल के उत्पादन में दूसरा स्थान है। प्रमुख चावल उत्पादक राज्य पश्चिमी बंगाल, बिहार, उड़ीसा (ओडिशा), आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, पंजाब एवं हरियाणा है।

गेहूँ–गेहूँ भारत के लोगों का प्रमुख खाद्यान्न है। यह रबी की फसल का मुख्य उत्पादन है। गेहूँ को शीत ऋतु के प्रारंभ में बोकर ग्रीष्म ऋतु के प्रारंभ में काट लिया जाता है। गेहूँ की खेती के लिए 12° सेग्री० से 17° सेग्री० तक तापमान, स्वच्छ, साफ और कोहरारहित मौसम, चटक धूप और 50 से 75 सेमी० वर्षा की आवश्यकता होती है। गेहूँ की कृषि के लिए उपजाऊ, भुरभुरी दोमट मिट्टी की आवश्यकता होती है।

भारत में उत्तम कोटि का गेहूँ उगाया जाता है। भारत के प्रमुख गेहूँ उत्पादक राज्यों में पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, बिहार, गुजरात, महाराष्ट्र तथा राजस्थान आदि प्रमुख हैं।

(ख) व्यापारिक फसलें–

रेशे की फसलें–दो प्रमुख रेशे की फसलें हैं–कपास और जूट।

कपास–कपास संसार की प्रमुख रेशे की फसल है। इसके उत्पादन के लिए उच्च तापमान (20° से 30° से०), पर्याप्त सूर्य का प्रकाश और सामान्य वर्षा की आवश्यकता होती है। काली और जलोढ़ मिट्टियाँ इसके लिए अच्छी होती हैं।

कपास के मुख्य उत्पादक देश चीन, संयुक्त राज्य अमेरिका, रूस, भारत, पाकिस्तान और ब्राजील हैं। भारत में कपास का उत्पादन मुख्य रूप से महाराष्ट्र, गुजरात, आंध्र प्रदेश और हरियाणा में होता है।

पटसन–पटसन या पटुआ जिसे जूट भी कहते हैं, का रेशा पटसन के पौधे के तने की छाल से प्राप्त किया जाता है।

पटसन के पौधे को कम-से-कम तापमान और 200 सेमी वार्षिक वर्षा की आवश्यकता होती है। पटसन के पौधे का उद्‌गम भारतीय उपमहाद्‌वीप में ही हुआ। यह अच्छी जल-निकासी वाली बलुई दोमट मिट्‌टी में अच्छी पैदावार देता है और इसे गर्म एवं आर्द्र जलवायु की आवश्यकता होती है।

पटसन को भारतीय उपमहाद्‌वीप में एक सुनहरे रेशे के रूप में देखा जाता है। भारत में यह पश्चिम बंगाल और असम के गंगा-ब्रह्‌मपुत्र डेल्टा में उगाया जाता है। ओडिशा, त्रिपुरा और मेघालय भी थोड़ा-बहुत पटसन पैदा करते हैं।

(ग) पेय फसलें–चाय और कॉफी प्रमुख पेय फसलें हैं–

चाय–चाय के पौधे की कोमल पत्तियों से चाय तैयार की जाती है। चाय को 25° सेल्सियस तक सामान्य तापमान तथा 200 सेमी वार्षिक वर्षा की आवश्यकता होती है। यह पर्वतीय ढालों पर जल निकासी वाली जलोढ़ मिट्‌टी में अच्छी तरह उगती है।

चाय एशिया में, मुख्य रूप से भारत, श्रीलंका एवं चीन में एक प्रमुख नकदी फसल है। भारत में असम में चाय का उत्पादन सर्वाधिक होता है। इसके पश्चात् पश्चिम बंगाल दूसरा प्रमुख उत्पादक राज्य है। पश्चिम बंगाल में दार्जिलिंग की पहाड़ियों में उत्तम कोटि की चाय पैदा की जाती है। दक्षिण भारत में चाय का उत्पादन मुख्य रूप से तमिलनाडु में होता है। भारत विश्व में चाय के उत्पादन एवं निर्यात में अग्रणी है।

कॉफी–कहवा भी चाय के ही समान लोकप्रिय पेय पदार्थ है। कहवा की भी बागानी खेती की जाती है। इथियोपिया के पहाड़ी में कहवा को प्राकृतिक रूप से उगता हुआ पाया गया। यहाँ से इसकी खेती इंडोनेशिया, भारत, अरब आदि देशों में की गईं।

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. **कॉफी उत्पादक दशाएँ–**कॉफी उत्पादन 300 से 1800 मीटर की ऊँचाई वाले पहाड़ी ढालों पर इसकी खेती सबसे अच्छी होती है। उर्वर

ज्वालामुखी मिट्टियाँ और सस्ता श्रम इसकी खेती के लिए जरूरी है। इसे छायादार वृक्षों के निकट उगाया जाता है।

2. **पटसन–**पटसन या पटुआ जिसे जूट भी कहते हैं, का रेशा पटसन के पौधे के तने की छाल से प्राप्त किया जाता है। पटसन के पौधे को कम-से-कम तापमान और 200 सेमी वार्षिक वर्षा की आवश्यकता होती है।
3. चावल (धान) एशिया की एक प्रमुख फसल है। इस महाद्वीप में विश्व का लगभग 90% धान उगाया जाता है। चीन, भारत, जापान, बांग्लादेश एवं इंडोनेशिया इसके प्रमुख उत्पादक देश हैं।
4. **मोटे अनाज–**ज्वार, बाजरा, रागी तथा सोरघम को संयुक्त रूप से 'मिलेट' अथवा मोटे अनाज कहा जाता है। ये चारा व खाद्यान्न के रूप में उपयोग में आते हैं। इनकी खेती 25°-30° सेग्रे० उच्च तापमानों तथा 50 से 75 सेमी वार्षिक वर्षा वाले क्षेत्रों में होती है। चीन, भारत, नाइजीरिया व नाइजर मोटे अनाजों के मुख्य उत्पादक देश हैं। भारत में हरियाणा, उत्तर प्रदेश, पंजाब आदि राज्यों में ज्वार मुख्यतः चारे के लिए ही उगाई जाती है। महाराष्ट्र तथा कर्नाटक भारत में मोटे अनाजों के बड़े उत्पादक हैं।

(ग) अतिलघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. कृषि से तात्पर्य मृदा को जोतकर उसमें फसल उगाना एवं पशु पालना है।

2. रोपण कृषि उष्ण कटिबंधीय क्षेत्रों में श्रेष्ठ प्रबंध और संगठित प्रणाली के अंतर्गत की जाती है। इसके अंतर्गत चाय, रबड़ और कॉफी की खेती की जाती है।
3. स्थानांतरित कृषि में किसान किसी जंगल के भाग को साफ करके कुछ वर्षों के लिए खेती करते हैं और फिर जंगल के दूसरे भाग को साफ करके खेती करते हैं।
4. चलवासी पशुचारण में पशुचारक अपने पशुओं के साथ चारागाहों की खोज में एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते रहते हैं।

(घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

I. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

उत्तर– 1. (iii) 11   2. (ii) पहला

3. (iii) कृषि   4. (ii) चावल

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

उत्तर– 1. चाय के पौधे की कोमल पत्तियों से **चाय** तैयार की जाती है।

2. कपास संसार की प्रमुख **रेशे** की फसल है।

3. भारत में **असम** में चाय का उत्पादन सबसे अधिक होता है।

4. गन्ना एक **नकदी** फसल है।

परियोजना कार्य

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

5 भारत के उद्योग

अभ्यास

(क) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. **उद्योग–**उद्योगों को द्वितीयक आर्थिक क्रिया कहा जाता है, जिसमें कच्चे माल को अधिक मूल्य के उत्पादों के रूप में परिवर्तित किया जाता है। आप लिखने के लिए जिस अभ्यास-पुस्तिका का प्रयोग करते हैं वह विनिर्माण की लंबी प्रक्रिया के बाद तैयार की गई है। इसके जीवन का आरंभ वृक्ष से होता है। उसे काटा जाता है और उसकी लकड़ी को लुगदी-मिल तक ले जाया जाता है। वहाँ इस लकड़ी का प्रसंस्करण किया जाता है और इसे काष्ठ-लुगदी में परिवर्तित किया जाता है। काष्ठ-लुगदी को रासायनिक पदार्थों के साथ मिलाया जाता है और अंततः मशीनों के द्वारा कागज के रूप में परिवर्तित किया जाता है।

उद्योगों का वर्गीकरण–उद्योगों का वर्गीकरण निम्नलिखित आधारों पर किया जा सकता है। निम्नांकित सारणी में कच्चे माल के स्रोत, उद्योग के आकार, स्वामित्व, कच्चे माल और तैयार उत्पादों के भार के आधार पर उद्योगों का वर्गीकरण किया गया है।

मापदंड	उद्योगों के आकार	प्रमुख विशेषताएँ	उदाहरण
कच्चे माल	1. कृषि आधारित उद्योग	कच्चे माल की प्राप्ति	वस्त्र उद्योग और कागज उद्योग।
	2. खनिज आधारित उद्योग	कच्चे माल की खनिजों से प्राप्ति	लोहा और इस्पात, रसायन और सीमेंट उद्योग।

उद्योग का आकार	1. बड़े पैमाने के उद्योग	भारी निवेश, भारी मशीनें	लोहा और इस्पात, तेल शोधक कारखाना।
	2. छोटे पैमाने के उद्योग	कम निवेश, छोटा संगठन	बिजली उपकरण उद्योग, साइकिल उद्योग।
	3. ग्रामीण तथा कुटीर उद्योग	परिवार का स्वामित्व, घरों में लगाई गई छोटी मशीनें	आभूषण, हस्तशिल्प, हथकरघा मिट्टी के बर्तन।
स्वामित्व	1. सार्वजनिक क्षेत्र	सरकार के स्वामित्व में संचालन	बोकारो का लोहा और इस्पात उद्योग, चितरंजन रेल इंजन उद्योग।
	2. निजी उद्योग	व्यक्ति या कंपनी के रूप में सामूहिक नियंत्रण	टाटा आयरन एंड स्टील कंपनी (टिस्को)।
	3. संयुक्त क्षेत्र	सार्वजनिक क्षेत्र और निजी क्षेत्र का संयुक्त स्वामित्व	बिड़ला सीमेंट उद्योग, मारुति उद्योग।
कच्चे माल	1. भारी उद्योग	कच्चा माल और तैयार उत्पाद दोनों ही भारी भरकम, उच्च परिवहन लागत	(हरिद्वार), बिजली के भारी उपकरण जैसे तेल शोधक कारखाने।
	2. हल्के उद्योग	कच्चा माल और तैयार माल उत्पाद दोनों ही हल्के, कम परिवहन लागत	एच० एम० टी० घड़ियाँ, (बंगलुरु) परिधान, खिलौने, फाउंटेन पैन।

2. **कृषि पर आधारित उद्योग–**अपने उद्योगों हेतु कृषि से कच्ची सामग्री प्राप्त करते हैं; जैसे–सूती व जूट उद्योग, वसा उद्योग, चीनी उद्योग, खाद्य प्रक्रिया संबंधित उद्योग आदि।

   वस्त्र उद्योग–मनुष्य की महत्त्वपूर्ण आवश्यकताओं में भोजन के बाद वस्त्र का अपना विशेष स्थान है। सूती, रेशमी, ऊनी और कृत्रिम रेशों से बने वस्त्रों का उपयोग मानव द्वारा किया जाता है। सूती वस्त्रों का प्रयोग सबसे अधिक किया जाता है। सूती वस्त्र रुई (कपास) से बनाए जाते हैं। आजकल शुद्ध सूती वस्त्रों के स्थान पर मिश्रित सूती वस्त्रों का उपयोग बढ़ रहा है। ये सस्ते और अधिक टिकाऊ होते हैं।

   (क) सूती वस्त्र उद्योग–यह भारत का सबसे बड़ा उद्योग है। भारत की

16% औद्योगिक पूँजी और 20% औद्योगिक श्रमशक्ति सूती वस्त्र उद्योग में लगी है। यहाँ सूती वस्त्र उद्योग का इतिहास लगभग 5000 वर्ष पुराना है, किंतु आधुनिक प्रकार का पहला सफल कारखाना 1851 ई० में मुंबई में स्थापित हुआ था, यहाँ शीघ्र ही सूती वस्त्र उद्योग ने बहुत प्रगति की। उत्तर प्रदेश में कानपुर भी महत्त्वपूर्ण सूती वस्त्र उत्पादक केंद्र है। इसे उत्तर प्रदेश का मानचेस्टर कहते हैं। यहाँ सूती वस्त्र की 17 मिलें हैं। उपर्युक्त केंद्रों के अतिरिक्त गुजरात, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, तमिलनाडु, कर्नाटक तथा पंजाब आदि में अनेकों सूती वस्त्र उत्पादक केंद्र स्थित हैं।

(ख) **जूट वस्त्र उद्योग–**पटसन या जूट उद्योग में भारत विश्व में प्रमुख है। कभी जूट को सुनहरा रेशा कहा जाता था परंतु अब बांग्लादेश के साथ कड़ी प्रतिस्पद्र्धा तथा जूट के विकल्पों के कारण इसकी विदेशी मुद्रा की कमाई घट गई है। हुगली नदी के किनारे इसके सबसे अधिक कारखाने हैं, जो चट तैयार करने के कारण 'चटकल' कहलाते हैं। भारत में कुछ कारखाने बिहार, आंध्र प्रदेश, ओडिशा, उत्तर प्रदेश एवं असम में हैं।

(ग) **रेशमी वस्त्र उद्योग–**रेशमी वस्त्र उद्योग में भी चीन सबसे ऊपर है। यहाँ विश्व का 60% से भी अधिक कच्चा रेशम तथा 85% रेशमी वस्त्र तैयार किए जाते हैं। भारत कच्चे रेशम के उत्पादन में दूसरे स्थान पर है। चीन के बाद रेशमी वस्त्रों के निर्माण में क्रमानुसार महत्त्वपूर्ण देश रूस, जापान, रोमानिया, लिथुआनिया, उजबेकिस्तान, बुल्गारिया आदि हैं। रेशमी वस्त्र उद्योग में भी सूती वस्त्रों की भाँति सिंथेटिक वस्त्रों का मिश्रण अधिक किया जाने लगा है।

3. **लोहा और इस्पात उद्योग–**किसी भी देश के औद्योगिक विकास की आधारशिला लोहा तथा इस्पात उद्योग है। इसलिए यह आधारभूत उद्योग है। लोहा इस्पात उद्योग आधुनिक सभ्यता का आधारस्तंभ है। सभी प्रकार की मशीनें, यंत्र एवं उपकरण आदि लोहे इस्पात से ही बनाए जाते हैं। पुलों, इमारतों, कारखानों परिवहन, संचार के माध्यमों आदि के निर्माण में इस्पात का ही प्रयोग किया जाता है। आज से

लगभग 2,000 वर्ष पूर्व भी मनुष्य को लोहे का ज्ञान था। लोहे के आधार पर ही 'लौह सभ्यताएँ' विकसित हुईं थीं। अट्ठारहवीं सदी में लोहे का आधुनिक विकास बड़े पैमाने पर आरंभ हुआ।

लौह-अयस्क (लोहे की कच्ची धातु जो 'ore' कहलाती है) से इस्पात बनाया जाता है। इससे विभिन्न प्रकार का कठोर इस्पात बनाने के लिए इसमें अनेक लौह-पूरक धातुओं; जैसे–मैंगनीज, टंगस्टन, क्रोमियम निकिल, कोबाल्ट, बैकेडियम, मोलिब्डेनम तथा डोलोमाइट एवं चूना आदि को मिलाना पड़ता है। इन सभी को भट्टी में पिघलाकर इस्पात बनाया जाता है। कोकिंग कोयला और जल भी इस्पात के निर्माण के लिए जरूरी हैं।

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. भारत के वायुयान निर्माण के पाँच केंद्र निम्नलिखित हैं–
(i) कोरापुट कोरावाँ नासिक, (ii) बैरकपुर, (iii) लखनऊ, (iv) हैदराबाद, (v) कानपुर।

2. **सूती वस्त्र उद्योग–**यह भारत का सबसे बड़ा उद्योग है। भारत की 16% औद्योगिक पूँजी और 20% औद्योगिक श्रम शक्ति सूती वस्त्र उद्योग में लगी है। यहाँ सूती वस्त्र उद्योग का इतिहास लगभग 5000 वर्ष पुराना है, किंतु आधुनिक प्रकार का सफल कारखाना है। यहाँ 1861 ई० में शाहपुर मिल तथा 1863 में केलिको मिल स्थापित की गई।

3. **उद्योगों का वर्गीकरण–**उद्योगों का वर्गीकरण निम्नलिखित आधारों पर किया जा सकता है। कच्चे माल के स्रोत, उद्योग के आकार, स्वामित्व, कच्चे माल और तैयार उत्पादों के भार के आधार पर उद्योगों का वर्गीकरण किया गया है–

कच्चे माल के आधार पर	–	(i) कृषि आधारित उद्योग (ii) खनिज आधारित उद्योग
उद्योग का आकार के आधार पर	–	(i) बड़े पैमाने के उद्योग (ii) छोटे पैमाने के उद्योग (iii) ग्रामीण तथा कुटीर उद्योग
स्वामित्व के आधार पर	–	(i) सार्वजनिक क्षेत्र (ii) निजी उद्योग (iii) संयुक्त क्षेत्र
कच्चे माल के आधार पर	–	(i) भारी उद्योग (ii) हल्के उद्योग

4. **चीनी उद्योग–**चीनी उद्योग भारत का सबसे बड़ा उद्योग है और कृषि पर निर्भर उद्योगों में सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है। यह ऐसा उद्योग है जिसकी स्थापना कच्चे माल के स्रोत (गन्ना-उत्पादन-क्षेत्र) में ही की जाती है। भारत में यह उद्योग मुख्यतः उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, बिहार, तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश में स्थित है। भारत में उत्तर प्रदेश बहुत समय तक चीनी का अग्रणी उत्पादक रहा परंतु अब चीनी के कुल उत्पादन में इसकी भागीदारी घटती जा रही है।

(ग) अतिलघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. वस्तुओं के विनिर्माण के तत्व को उद्योग कहते हैं। इसमें किसी वस्तु की उपयोगिता एवं मूल्य में वृद्धि होती है।

2. जूट की सहायता से बनाए जाने वाले वस्त्र, जैसे–दरी, थैले, टाट तथा कालीन आदि जूट वस्त्र उद्योग कहलाते हैं।

3. भारत में तीन सूती वस्त्र उद्योग निम्नलिखित हैं–गुजरात, महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश।

4. उद्योगों को द्वितीयक आर्थिक क्रिया कहा जाता है।

(घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

I. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

उत्तर– 1. (ii) हथकरघा उद्योग 2. (ii) चीनी उद्योग

3. (iii) लोहा-इस्पात उद्योग

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

उत्तर– 1. संयुक्त राज्य अमेरिका विश्व का प्रमुख **लौह** अयस्क उत्पादक क्षेत्र है।

2. भारत के अधिकतर आधुनिक उद्योग **कृषि** पर आधारित हैं।

3. **बांग्लादेश** जूट उद्योग के लिए प्रसिद्ध है।

4. कश्मीर के पश्मीने से बने **शॉल** सारे संसार में प्रसिद्ध हैं।

5. भारत गन्ने से चीनी तैयार करने का **पहला** देश है।

III. सही कथन के सामने (✓) और गलत कथन के सामने (✗) का चिह्न लगाइए–

उत्तर– 1. (✓) 2. (✗) 3. (✗) 4. (✓) 5. (✓)

(घ) सही जोड़े मिलाइए–

उत्तर–

	उद्योग		**अग्रणी राज्य**
1.	लोहा और इस्पात	**(i)**	**जमशेदपुर**

2.	चीनी	**(ii)**	**उत्तर प्रदेश**
3.	ऊनी वस्त्र	**(iii)**	**पंजाब, लुधियाना**
4.	रेशमी वस्त्र उद्योग	**(iv)**	**कर्नाटक**
5.	जूट	**(v)**	**बंगाल**

परियोजना कार्य

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

6 मानव संसाधन

अभ्यास

(क) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. **जनसंख्या वृद्धि के कारण–**किसी देश की जनसंख्या में कमी और वृद्धि मुख्यतः तीन जनसांख्यिक कारकों की वजह से होती है।

- जन्म दर
- मृत्यु दर
- प्रवास

इसके अतिरिक्त जनसंख्या को प्रभावित करने वाले कारक हैं, निर्धनता, निरक्षरता तथा बेरोजगारी। हमारे देश में जनसंख्या बढ़ने का प्रमुख कारण मृत्यु की तुलना में बच्चों का अधिक पैदा होना है। प्रवास संबंधी कारणों का असर नगण्य है।

सबसे कम शिशु मृत्यु वाला राज्य	– **केरल (12)**
सबसे अधिक शिशु मृत्यु वाला राज्य	– **मध्य प्रदेश (72)**
भारत में जन्म के समय जीवन प्रत्याशा	– **68.89 वर्ष**
पुरुषों की जन्म के समय जीवन प्रत्याशा	– **67.46 वर्ष**
महिलाओं की जन्म के समय जीवन प्रत्याशा	– **72.61 वर्ष**

जन्म दर–किसी क्षेत्र में किसी निश्चित समय में पैदा हुए बच्चों की संख्या के आधार पर प्रति हजार जनसंख्या पर जन्म-दर गणना की जाती है।

मृत्यु दर–किसी क्षेत्र में किसी निश्चित समय में मरने वालों की संख्या के आधार पर प्रति हजार की गणना करके मृत्यु-दर ज्ञात होती है।

प्राकृतिक वृद्धि दर–जन्म-दर और मृत्यु-दर से स्पष्ट होता है कि सन् 1921-31 के दशक में मृत्यु-दर में कमी आने लगी। लेकिन बाद में जन्म-दर की तुलना में मृत्यु-दर में तेजी से गिरावट आई। इन दोनों

के बीच अंतर बढ़ा। जनसंख्या में हुई वृद्धि को जन्म और मृत्यु-दर के बीच का अंतर कहते हैं।

जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रण जन्म दर को कम करके किया जा सकता है और परिवार नियोजन के साधनों को अपनाकर भी जनसंख्या वृद्धि नियंत्रण किया जा सकता है।

2. **भारत की कुल जनसंख्या एवं उसका वितरण–**सन् 2011 की जनगणना के अनुसार भारत की कुल जनसंख्या 121 करोड़ से अधिक थी। विश्व की कुल जनसंख्या का लगभग 17.5 प्रतिशत भाग भारत में ही है। (केवल चीन ही एक ऐसा देश है, जिसकी जनसंख्या भारत से अधिक है।)

   भारत में जनसंख्या का वितरण बड़ा ही असमान है, इसके कुछ क्षेत्रों में जनसंख्या का घनत्व बहुत अधिक है तथा कुछ क्षेत्रों में जनसंख्या का घनत्व काफी कम है। उत्तर के मैदानी क्षेत्रों एवं प्रायद्वीपीय भारत के तटवर्ती क्षेत्रों में जनसंख्या का घनत्व अधिक है, जबकि मरुस्थलीय एवं पर्वतीय क्षेत्रों में जनसंख्या का घनत्व कम है। जनसंख्या के घनत्व को अनेक कारक प्रभावित करते हैं; जैसे–धरातल की बनावट, अनुकूल जलवायु, उपजाऊ मिट्टी, खनिज एवं उद्योगों का विकास आदि।

   सन् 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में जनसंख्या का औसत घनत्व 324 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी था। जनसंख्या के औसत घनत्व की दृष्टि से पश्चिमी बंगाल, केरल, उत्तर प्रदेश, बिहार, पंजाब, हरियाणा, तमिलनाडु, महाराष्ट्र, कर्नाटक एवं आंध्र प्रदेश को अधिक घनत्व वाले राज्य कहा जाता है परंतु अरुणाचल प्रदेश, जम्मू व कश्मीर, सिक्किम, उत्तर-पूर्व के अन्य राज्य तथा राजस्थान में जनसंख्या का घनत्व काफी कम है। अन्य सभी राज्यों को सामान्य घनत्व वाले राज्य कहा जा सकता है।

   2011 की जनगणना के अनुसार सर्वाधिक जनसंख्या का घनत्व पश्चिमी बंगाल (913 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी) था तथा सबसे कम जनसंख्या का घनत्व अरुणाचल प्रदेश (17 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी) था। भारत का सबसे अधिक जनसंख्या वाला राज्य उत्तर प्रदेश है। 2011 की जनगणना के अनुसार उत्तर प्रदेश की जनसंख्या लगभग 19.9 करोड़ थी।

3. पृथ्वी पर पाए जाने वाले सभी संसाधनों में मानव सबसे महत्त्वपूर्ण संसाधन है। मानव ही अन्य संसाधनों का उपयोग एवं उपभोग करता है।

औद्योगिक क्रांति से पहले सभी कार्य हाथ से किए जाते थे, इसीलिए किसी देश की जनसंख्या से उसकी शक्ति का पता चलता था। लेकिन अब समय एवं परिस्थितियाँ बदल गई हैं। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में उन्नति होने से मशीनों द्वारा कार्य शीघ्र किया जा सकता है। मशीनों के निर्माण और उनके संचालन के लिए कुशल श्रमिकों की जरूरत होती है। अतः मानव की संख्या के स्थान पर अब उसकी कुशलता पर अधिक जोर दिया जाता है। अन्य शब्दों में, किसी देश में जनसंख्या की मात्रा के स्थान पर उसकी गुणवत्ता अधिक महत्त्वपूर्ण हो गई है। कुशलता से आशय संसाधनों को संपत्ति में बदलने की क्षमता तथा योग्यता से है। मनुष्य की उत्पादन क्षमता में वृद्धि के लिए शिक्षा, प्रशिक्षण, संतुलित एवं पौष्टिक आहार, व्यावसायिक कुशलता, कठिन परिश्रम तथा उचित मशीनों एवं उपकरणों की आवश्यकता होती है। किसी देश के आर्थिक विकास के लिए प्राकृतिक और मानवीय संसाधनों का प्रचुर मात्रा में होना अति आवश्यक है।

मानव संसाधन का महत्त्व–देश और व्यक्ति दोनों के विकास के लिए मानव संसाधनों का अत्यधिक महत्त्व है। मानव संसाधन प्रत्येक व्यक्ति के लिए महत्त्वपूर्ण होते हैं; क्योंकि वे अन्य लोगों को अपनी क्षमता में वृद्धि करने तथा उनका अधिकाधिक उपयोग करने में सहायता करते हैं। इस प्रकार किसी देश की स्वस्थ व शिक्षित जनसंख्या उसके लिए उपयोगी संसाधन बन जाती है। अपनी कुशलता को लगातार विकसित करने की प्रवृत्ति ही व्यक्ति को अनेक बाधक तत्वों को दूर करने में प्रवीण बना देती है।

गैर-वेतनभोगी व्यक्ति भी देश के लिए महत्त्वपूर्ण योगदान देते हैं। हमारे देश की बहुत-सी स्त्रियाँ कार्य करने के लिए घर से बाहर नहीं जातीं, वे प्रायः घर के भीतर ही कार्य करती हैं। वे घरेलू कार्य, बच्चों का लालन-पालन और बुर्जुगों की देखभाल करती हैं। जब स्त्रियाँ शिक्षित होंगी तो वे अपने घरेलू कार्य; जैसे बच्चों की शिक्षा आदि को अपने अशिक्षित होने की तुलना में अच्छी तरह से कर सकेंगी। बच्चों का ध्यान रखकर और उनको पढ़ाने का कार्य करके भी स्त्रियाँ देश के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान देती हैं, क्योंकि वही बच्चे आगामी वर्षों में देश के लिए महत्त्वपूर्ण मानव संसाधन बनते हैं।

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. **मानव संसाधन का महत्त्व–**देश और व्यक्ति दोनों के विकास के लिए

मानव संसाधनों का अत्यधिक महत्व है। मानव संसाधन प्रत्येक व्यक्ति के लिए महत्त्वपूर्ण होते हैं; क्योंकि वे अन्य लोगों को अपनी क्षमता में वृद्धि करने तथा उनका अधिकाधिक उपयोग करने में सहायता करते हैं। इस प्रकार किसी देश की स्वस्थ व शिक्षित जनसंख्या उसके लिए उपयोगी संसाधन बन जाती है। अपनी कुशलता को लगातार विकसित करने की प्रवृत्ति ही व्यक्ति को अनेक बाधक तत्वों को दूर करने में प्रवीण बना देती है।

2. किसी भी क्षेत्र के प्रति वर्ग किलोमीटर में रहने वाले लोगों की संख्या को उस क्षेत्र का जनसंख्या घनत्व कहते हैं।
3. **ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्रों में जनसंख्या अनुपात–**यूरोप के देशों तथा उत्तरी अमेरिका में नगरों में रहने वाली जनसंख्या का अनुपात 70% से अधिक है, एशिया में 37% और अफ्रीका में 33% है। नगरीकरण एवं औद्योगीकरण में घनिष्ठ संबंध है।

(ग) अतिलघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. भारत का सबसे अधिक जनसंख्या वाला राज्य उत्तर प्रदेश है।
2. कोई भी वस्तु जिससे मानव की आवश्यकता की पूर्ति होती है, 'संसाधन' कहलाती है और जो वस्तुएँ मानव निर्मित होती हैं, मानव संसाधन कहलाती हैं।
3. प्रति एक हजार पुरुषों में स्त्रियों की जनसंख्या के अनुपात को लिंग अनुपात कहते हैं।
4. पृथ्वी पर पाए जाने वाले संसाधनों में सबसे महत्त्वपूर्ण संसाधन मानव संसाधन है।

(घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

I. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

उत्तर– 1. (i) चीन 2. (i) 940 3. (iii) भारत

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

उत्तर– 1. पृथ्वी पर पाए जाने वाले सभी संसाधनों में **मानव संसाधन** सबसे महत्त्वपूर्ण संसाधन है।
2. भारत में प्रत्येक 10 वर्ष बाद **जनगणना** होती है।
3. भारत की जनसंख्या में तीव्र गति से **वृद्धि** हो रही है जो अनेक समस्याओं का कारण है।
4. **प्राकृतिक** संसाधनों का विकास मानव संसाधनों के विकास पर निर्भर करता है।

III. सही कथन के सामने (✓) और गलत कथन के सामने (✗) का चिह्न लगाइए–

उत्तर– 1. (✓) 2. (✗) 3. (✓) 4. (✓) 5. (✗) 6. (✗) 7. (✓)

IV. विभिन्न जनगणना वर्षों के आँकड़ों के आधार पर निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

उत्तर– 1. वर्ष 1921-1931 के दशक में सबसे कम वृद्धि हुई। 2.8 की वृद्धि हुई।

2. दशक (1911-1921) के बीच जनसंख्या में कमी हुई।

3. दशक (2001-2011) में सबसे अधिक जनसंख्या वृद्धि हुई। इस दशक में 19 करोड़ जनसंख्या की वृद्धि हुई।

4. 1951-2011 के बीच भारत की जनसंख्या में लगभग साढ़े तीन गुना वृद्धि हुई है।

परियोजना कार्य

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

7 प्राकृतिक आपदाएँ

अभ्यास

(क) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. आपदा से अभिप्राय विपत्ति अथवा संकट है। आपदा का अंग्रेजी पर्याय 'Disaster' है, जिसे फ्रेंच भाषा के शब्द 'desastre' से लिया गया है। जिसका अर्थ होता है बुरा अथवा अनिष्टकारी तार। मनुष्य को प्राचीनकाल से ही अनेक प्राकृतिक प्रकोपों का सामना करना पड़ा। ये प्राकृतिक प्रकोप बाढ़, सूखा (अकाल), भूस्खलन, हिमस्खलन, चक्रवात, भूकंप, ज्वालामुखी उद्गार आदि विविध रूपों में प्रकट होते रहे हैं तथा मानव बस्तियों को प्रभावित करते रहे हैं। आधुनिक समय में वैज्ञानिक रूप से हम कितने भी सक्षम क्यों हो गए हों प्राकृतिक प्रकोप हमें बार-बार याद दिलाते रहते हैं कि मनुष्य आज भी प्रकृति के सामने कितना निःसहाय तथा निरूपाय है।

आपदा के प्रकार–आपदा को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है; जैसे–(i) प्राकृतिक आपदा, (ii) मानवीकृत आपदा।

प्राकृतिक आपदा के उदाहरण बाढ़, भूकंप, सूखा, चक्रवात और

सुनामी जैसी घटनाएँ हैं। पृथ्वी या प्रकृति के साथ मनुष्य ने शोषण दोहन का संबंध बनाया, जिसका परिणाम आज हमें विभिन्न प्रकार की प्राकृतिक आपदाओं के रूप में देखने को मिलता है।

पृथ्वी पर आने वाली समस्त प्राकृतिक आपदाओं में सर्वाधिक आकस्मिक और विनाशकारी आपदा भूकंप को माना गया है। भूकंप जहाँ हजारों लोगों की जान ले सकता है वहीं वह नदियों के मार्ग को भी बदल सकता है। एक अध्ययन के अनुसार भारतीय उपमहाद्वीप में यद्यपि पूरी दुनिया में आने वाले भूकंपों का मात्र 7% ही आता है, किंतु दुनिया के अन्य हिस्सों में आने वाले भूकंपों से भारत में आने वाला भूकंप अधिक विनाशकारी है। अतः इसी प्रकार बंगाल की खाड़ी, अरब सागर और हिंद महासागर में आने वाले तूफान विश्व के अन्य क्षेत्रों में आने वाले तूफानों से अधिक तबाही लाने वाले होते हैं।

2. **भूकंप–**यह पृथ्वी में आकस्मिक कंपन या प्रकंपन है। भूपर्पटी के नीचे जहाँ भूकंप की उत्पत्ति होती है, उसे 'उत्पत्ति केंद्र' कहते हैं जबकि अधिकेंद्र प्रयत्क्षतः उत्पत्ति केंद्र के ऊपर होता है, जहाँ पर कंपन की तीव्रता उच्चतम होती है।

   तीव्र भूकंप बहुत विनाशकारी होते हैं। ये धन-जन का भारी नुकसान करते हैं। इनके कारण और भी संकट भूस्खलन, बाढ़, सुनामी (चक्रवात) रेलवे तथा रोड का क्षतिग्रस्त होने जैसे परिणाम होते हैं। यदि भूकंप रात्रि के समय आते हैं तो यह अत्यधिक विनाशकारी सिद्ध होते हैं, क्योंकि लोगों के पास इससे सुरक्षित बचने के लिए समय नहीं मिलता है।

   भूकंप के दौरान सावधानियाँ–

   भूकंप के दौरान निम्नलिखित सावधानियाँ बरतनी चाहिए–

   (i) हमें सदैव खुले मैदानों या पार्क की तरफ भागना चाहिए।

   (ii) मकान के अंदर हमें अंदरुनी दीवार के साथ लगकर खड़ा होना चाहिए।

   (iii) हमें पंखा, दर्पण या खिड़की के नजदीक नहीं खड़ा होना चाहिए।

   (iv) लिफ्ट का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

   (v) हमें घर, स्कूल इत्यादि के भवन बनाने में उचित प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल करना चाहिए।

(vi) हमें अपनी बाँहों से अपनी आँखों तथा सिर को सुरक्षा प्रदान करनी चाहिए।

(vii) हमें कार के भीतर भी नहीं बैठना चाहिए।

(viii) हमें प्राथमिक चिकित्सा बॉक्स रखना चाहिए तथा दूसरों की सहायता करनी चाहिए।

3. **(क) तूफानी लहरें–**मौसम प्रणाली के दबाव से उत्पन्न समुद्री लहरें तूफानी लहरें कहलाती हैं। कई बार ये जटिल उष्ण कटिबंधीय तूफान के कारण भी उत्पन्न होती हैं। प्राथमिक रूप से तूफानी लहरें समुद्री धरातल पर हवा के उच्च दबाव के कारण उत्पन्न होती हैं। ये लहरें उस समय विनाशकारी होती हैं जब ये ज्वार के समय आती हैं। अब तक दर्ज सबसे ऊँची तूफानी लहरें 1899 में बाथुरस्ट हुरीकन खाड़ी में उठीं, जिनकी ऊँचाई 13 मी० (43 फीट) थी जो पमुअल नामक ऑस्ट्रेलिया के छोटे शहर तक गईं।

(ख) सुनामी–भूकंपीय सागरीय लहरें जापानियों द्वारा सुनामी कही जाती हैं। ये भूकंप से उत्पन्न होने वाली एक अन्य प्राकृतिक आपदा है। सुनामी बहुत ऊँची लहरें होती हैं जिनकी उत्पत्ति भूकंप के दौरान सागरीय फर्श में कंपन उत्पन्न होने के परिणामस्वरूप होती है। भू-स्खलन एवं ज्वालामुखी भी सुनामी का कारण बनते हैं। सुनामी (सुन-आमी) एक जापानी शब्द है।

गहरे जल में सुनामी सतह के नीचे अदृश्य रूप से गमन करती है। जब ये तटों के पास उथले जल में पहुँचती हैं, तो 30 मीटर की ऊँचाई तक ऊपर उठ जाती हैं। अंतर्जलीय या तटीय भूकंप जिन लहरों को ऊपर उठाते हैं, वे खुले सागरों में एक मीटर ऊँची तक हो सकती हैं, जैसे ही ये लहरें तट के निकट पहुँचती हैं, इनकी ऊँचाई बढ़ जाती है तथा जब वे आवासीय बस्तियों से जाकर टकराती हैं, तो जान व माल की गंभीर हानि का कारण बनती हैं।

(ग) सौर प्रचंडता–सौर प्रचंडता सूर्य के परिवेश में भयंकर विस्फोट है। सौर प्रचंडता सौर के पुटली या कोनों के वृत्तों में घटित होती है। वे विद्युत चुंबकीय विकिरण उत्पन्न करती हैं जो सतरंगी किरणों के रूप में होती है। सौर प्रचंडता परिक्रमा कर

रहे ग्रहों, अंतरिक्ष अभियान पर गए लोगों, संचार प्रणालियों और विद्युत ग्रिड के लिए खतरनाक है।

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. समुद्र में तीव्र गति से उठने वाली भूकंपीय सागरीय लहरों को **सुनामी** कहा जाता है। कई बार ये लहरें जटिल उष्ण कटिबंधीय तूफान के कारण भी उत्पन्न होती हैं।

2. ज्वालामुखी विस्फोट पृथ्वी की पर्पटी या दरार अथवा छिद्र उत्पन्न होने तथा इससे पिघली हुई चट्टानों या लावे के तेज गति से बाहर निकलने को **'ज्वालामुखी विस्फोट'** कहते हैं।

3. सूखा एक अन्य प्राकृतिक आपदा है। भारत में सूखा एक सामान्य बात है। इससे फसलें काफी प्रभावित होती हैं और खाद्यान्नों की कमी हो जाती है। अब सूखे (अकाल) की स्थिति से निबटने के लिए सरकार तुरंत इन क्षेत्रों में अपने भंडार से खाद्यान्नों की आपूर्ति कराती है।

4. प्राकृतिक कारणों से उत्पन्न हुई घटना को प्राकृतिक आपदा कहा जाता है। प्राकृतिक आपदा के उदाहरण बाढ़, भूकंप, चक्रवात सुनामी जैसी घटनाएँ हैं। पृथ्वी या प्रकृति के साथ मनुष्य ने शोषण व दोहन का संबंध बनाया जिसका परिणाम आज हमें विभिन्न प्रकार की प्राकृतिक आपदाओं के रूप में देखने को मिलता है।

(ग) अतिलघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. समुद्री तापमान में वृद्धि, उच्च सापेक्षिक आर्द्रता तथा वायुमंडलीय अस्थिरता के कारण जब समशीतोष्ण तथा उष्ण कटिबंधीय अक्षांश के गर्म महासागरों में निम्न वायुदाब उत्पन्न होता है, तो चक्रवात आता है।

2. ज्वालामुखी तीन प्रकार के होते हैं–

(क) जाग्रत या सक्रिय ज्वालामुखी (ख) सुषुप्त ज्वालामुखी,
(ग) शांत ज्वालामुखी।

3. आपदा से अभिप्राय विपत्ति अथवा संकट है। आपदा का अंग्रेजी पर्याय 'Disaster' है, जिसे फ्रेंच भाषा के शब्द 'Desastre' से लिया गया है। जिसका अर्थ होता है बुरा अथवा अनिष्टकारी तार।

(घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

I. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

उत्तर– 1. (ii) भूकंप 2. (ii) अकाल

3. (iii) जापान 4. (ii) बिहार

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

उत्तर– 1. तीव्र गति से बहने वाली हवाएँ **चक्रवात** कहलाती हैं।
2. ज्वालामुखी **तीन** प्रकार के पाए जाते हैं।
3. आपदा **एक** प्रकार का संकट है।

III. सही कथन के सामने (✓) और गलत कथन के सामने (✗) का चिह्न लगाइए–

उत्तर– 1. (✓) 2. (✗) 3. (✓) 4. (✓)

परियोजना कार्य

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

8 प्राकृतिक वनस्पति एवं वन्य-जीव

अभ्यास

(क) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. **वन्य-जीवों का संरक्षण–**वन्य-जीवों के संरक्षण के लिए सरकार ने निम्नलिखित कदम उठाए हैं–
(i) वन्य जीवों के शिकार पर प्रतिबंध लगा दिया गया है।
(ii) समय-समय पर कुछ विशिष्ट पशुओं की गणना की जाती है।
(iii) जीवों के संरक्षण के लिए अनेक वन्य-जीव आरक्षण क्षेत्र, राष्ट्रीय उद्यान, अभयारण्य आदि बनाए गए हैं।

2. **वन्य-जीव–**वन तथा वन्य जीव दोनों पारिस्थितिकी संतुलन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सभी प्रजातियाँ एक-दूसरे पर निर्भर हैं तथा भोजन चक्र का निर्माण करती हैं।

विभिन्न प्रकार के सर्प, बिच्छू, छिपकलियाँ तथा अन्य कीड़े-मकोड़े भी भारत के वनों में पाए जाते हैं। मोर हमारा राष्ट्रीय पक्षी है। घड़ियाल, मगर जल में पाए जाने वाले पशु हैं। ऐसा अनुमान लगाया जाता है कि हमारे जल स्रोतों में लगभग 2500 प्रकार की मछलियाँ पाई जाती हैं।

कुछ लोगों का मत है कि इनसे हमें लाभ की अपेक्षा हानि अधिक है, परंतु वास्तव में ये वन्य-जीव हमारे पारिस्थितिकी संतुलन के लिए

अति आवश्यक हैं। अतः इनका संरक्षण करना आवश्यक है।

3. **उष्ण कटिबंधीय पर्णपाती वन–**ये मानसून वन के नाम से भी जाने जाते हैं। ये वन वर्षा वनों से कम सघन होते हैं तथा मानसून के समय में एशिया, भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, श्रीलंका, म्यांमार, थाइलैंड, लाओस, वियतनाम, फिलीपींस, ताइवान तथा द० चीन, मध्य अमेरिका, ब्राजील के भागों, पू० अफ्रीका और उ० ऑस्ट्रेलिया में पाए जाते हैं। टीक, ओक, चंदन, बाँस, यूकेलिप्टस आदि वृक्ष इन वनों की किस्में हैं।

   उष्ण कटिबंधीय वर्षा वन–ये वन अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों जैसे पश्चिमी घाट की पहाड़ियों, अंडमान निकोबार द्वीप समूह एवं लक्षद्वीप, ओडिशा, पश्चिमी बंगाल एवं उत्तरी-पूर्वी राज्यों के कुछ भागों में पाए जाते हैं। वास्तव में ये वन उन क्षेत्रों में पाए जाते हैं, जहाँ वार्षिक वर्षा 200 सेमी से अधिक होती है। प्रायः ये वन घने होते हैं, इनमें छोटे वृक्ष, झाड़ियाँ तथा बेले आदि भी होती हैं। इन वृक्षों की लकड़ी कठोर होती हैं। इन वनों के कुछ प्रमुख वृक्ष हैं–महोगनी, एबोनी, रोजवुड, सिनकोना, जंगली रबर तथा बाँस आदि।

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. **वनों के लाभ–**हमारे देश में कुल भूमि का लगभग 19 प्रतिशत भाग ही वनों के अंतर्गत है तथा केवल 4 प्रतिशत भाग पर चारागाह हैं। सरकार वनों के अंतर्गत क्षेत्र बढ़ाने का प्रयास कर रही है तथा वर्तमान वनों की सुरक्षा के लिए विभिन्न कानून बनाए गए हैं। वृक्ष हमें जीवनदायिनी ऑक्सीजन देते हैं तथा हानिकारक कार्बन डाइ-ऑक्साइड ग्रहण करते हैं।

   वनों से हमें फर्नीचर, मकान, रेल-लाइनें तथा कागज आदि बनाने के लिए मूल्यवान लकड़ी मिलती है। वनों से अन्य विभिन्न उद्योगों के लिए कच्चा माल मिलता है जैसे गोंद, लाख, कत्था एवं विभिन्न प्रकार के रसायन आदि। वन जंगली जीव-जंतुओं को आश्रय प्रदान करते हैं। वन बाढ़ को रोकते हैं एवं मृदा को उपजाऊ बनाते हैं तथा वर्षा लाने में भी सहायक होते हैं। वन वायु प्रदूषण को कम करते हैं।

2. हिमालय के निचले भागों में उष्ण कटिबंधीय पर्णपाती वन पाए जाते हैं।

1500 मीटर से 3000 मीटर तक की ऊँचाई वाले क्षेत्रों में कोणधारी वृक्ष पाए जाते हैं, जिनकी पत्तियाँ नुकीली होती हैं तथा जो सदा हरे-भरे रहते हैं। इन वनों के मुख्य वृक्ष हैं–देवदार, पाइन, स्प्रूस एवं फर आदि।

3. मानसूनी वन म्यांमार, थाइलैंड, वियतनाम, उत्तर-पूर्व ऑस्ट्रेलिया तथा भारत के मध्य तथा उत्तर पूर्वी क्षेत्रों में पाए जाते हैं। इस प्रकार के वनों से कीमती लकड़ियाँ; जैसे–रोजवुड, चंदन, शीशम, साल, आबनूस इत्यादि मिलती हैं।

(ग) अतिलघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. उष्ण कटिबंधीय पर्णपाती वन एशिया, भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, श्रीलंका, म्यांमार, थाईलैंड, लाओस, वियतनाम, फिलीपींस, ताईवान तथा द० चीन, मध्य अमेरिका, ब्राजील के भागों, पू० अफ्रीका और उ० ऑस्ट्रेलिया में पाए जाते हैं।

2. वह वनस्पति जो प्राकृतिक रूप से बिना किसी मानवीय हस्तक्षेप के वृद्धि करती है। प्राकृतिक वनस्पति कहलाती है।

3. वनों से हमें विभिन्न प्रकार के लाभ होते हैं–
   (i) वनों से हमें ऑक्सीजन पर्याप्त मात्रा में मिलती है।
   (ii) फर्नीचर बनाने के लिए लकड़ी और कच्चा माल हमें वनों द्वारा प्राप्त होता है।
   (iii) वनों से गोंद, लाख, कत्था एवं विभिन्न प्रकार के रसायन भी प्राप्त होते हैं।

(घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

I. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

उत्तर– 1. (i) निधि 2. (iii) 2500

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

उत्तर– 1. हमारे देश में अनेक प्रकार के **वन** पाए जाते हैं।
2. वनों से हमें **लकड़ी** तथा **कच्चे माल के** लाभ होते हैं।
3. भारत ही एक ऐसा देश है जहाँ **शेर** और **बाघ** दोनों पाए जाते हैं।

III. सही कथन के सामने (✓) और गलत कथन के सामने (✗) का चिह्न लगाइए–

उत्तर– 1. भारत में बाघों की संख्या में वृद्धि/**कमी** हो रही है।
2. भारत का राष्ट्रीय पशु शेर/**बाघ** है।

3. देवदार का वृक्ष मैदानी **पर्वतीय**/क्षेत्रों में पाया जाता है।

परियोजना कार्य

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

1 संविधान : शासन एवं आवश्यकता

अभ्यास

(क) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. **लोकतंत्र में संविधान की भूमिका–**एक लोकतांत्रिक देश के लिए संविधान बहुत ही महत्त्वपूर्ण होता है, क्योंकि देश की सत्ता जनता द्वारा चुने गए प्रतिनिधियों के हाथों में होती है और वे लोगों के प्रति उत्तरदायी (जवाबदेह) होते हैं। वे सत्ता का प्रयोग स्वेच्छा से नहीं कर सकते हैं क्योंकि वे कुछ नियमों तथा सिद्धांतों से बँधे होते हैं।

राज्य संगठनों का एक संगठन है। प्रत्येक संगठन कुछ नियमों के अनुसार ही कार्य करता है। ये सिद्धांत किसी व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह को अपनी इच्छा से चलने से रोकते हैं तथा प्रत्येक व्यक्ति की स्वतंत्रता को सुनिश्चित करते हैं। ये सिद्धांत सरकार के अंगों की स्थापना, उनकी शक्तियों, पारस्परिक संबंध तथा नागरिकों के अधिकारों एवं कर्तव्यों को सुनिश्चित करते हैं; अतः प्रजातंत्र के लिए संविधान अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है।

2. **कानून का अर्थ–**वे संकल्पनाएँ या नियम जो अपरिवर्तनीय, सुनिश्चित तथा स्थायी रहते हैं, 'कानून' कहलाते हैं। सामान्यतः लोग दिव्य शक्तियों में आस्था प्रकट करने के लिए 'दिव्य कानून' की चर्चा करते हैं। एक अन्य प्रकार का कानून 'प्राकृतिक कानून' होता है, जो 'कारण और प्रभाव' के संबंध पर आधारित होता है तथा अपरिवर्तनीय होता है। तीसरे प्रकार के कानून 'मानव निर्मित कानून' होते हैं, जिन्हें 'मानवीय कानून' भी कहा जाता है। ये कानून नैतिक, सामाजिक तथा राजनीतिक होते हैं।

हॉलैंड के अनुसार, ''कानून मानव के बाह्य आचरण के लिए सामान्य नियम हैं, जो एक प्रभुसत्तावान राजनीतिक सत्ता द्वारा लागू किए जाते हैं।''

कानून की आवश्यकता–कोई भी सभ्य समाज तब तक एक शांतिपूर्ण जीवन नहीं व्यतीत कर सकता, जब तक कि समाज के लोग इसके नियमों तथा कानूनों का प्राकृतिक रूप से पालन न करते हों। वस्तुतः कानून समुदाय के नागरिक जीवन को नियमित करते हैं। कानून समाज के सहज रूप से चलने तथा राज्य में शांति एवं व्यवस्था कायम करने के लिए आवश्यक होते हैं।

समाज द्वारा अपनाई जाने वाली प्रथाएँ (परंपराएँ) जब नियमित रूप से अपनाई जाती हैं, तब वे स्थायी होकर कानून का रूप धारण कर लेती हैं। अतीत काल में कुछ सिद्धांत उपयोगी होने के कारण नियमित रूप से अपनाए जाते थे; अतः उन्हें कानून मान लिया गया। ये प्रथाएँ अथवा परंपराएँ सरकार द्वारा उपेक्षित नहीं की जा सकतीं। किंतु शिशुवध, बाल-विवाह, सती-प्रथा और दहेज प्रथा जैसी सामाजिक एवं धार्मिक प्रथाएँ जो समाज तथा देश की प्रगति के लिए हानिकारक हैं।

3. **संविधान की प्रस्तावना–**भारत का संविधान एक कानूनी दस्तावेज है। किसी भी पुस्तक की भाँति इसका भी प्रारंभ एक परिचय या भूमिका से होता है, जिसे 'प्रस्तावना' कहा जाता है। प्रस्तावना का शाब्दिक अर्थ है 'कानूनी दस्तावेज का परिचय।'

संविधान के 42वें संशोधन (1976 ई०) द्वारा संविधान की प्रस्तावना में कुछ परिवर्तन किए गए। संशोधित रूप में प्रस्तावना निम्नवत है–

हम, भारत के लोग, भारत को संपूर्ण प्रभुतासंपन्न, समाजवादी, पंथनिरपेक्ष, लोकतंत्रात्मक गणराज्य बनाने के लिए तथा उसके समस्त नागरिकों को सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय, विचार अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता, प्रतिष्ठा और अवसर की समता प्राप्त कराने के लिए तथा उन सबसे व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता और अखंडता सुनिश्चित करने वाली

बंधुता बढ़ाने के लिए दृढ़संकल्पित होकर अपनी इस संविधान सभा में आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई० में एतद्वारा इस संविधान को अधिनियमित, अंगीकृत और आत्मसमर्पित करते हैं।

समाजवादी राज्य–एक समाजवादी राज्य वह होता है, जिसमें सभी को देश की संपदा पर समान अधिकार तथा उससे लाभ प्राप्त करने के समान अवसर प्राप्त हों। हमारे देश में अपार आर्थिक विषमताएँ विद्यमान हैं।

संपूर्ण प्रभुत्वसंपन्न राज्य–स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद भारत एक स्वतंत्र देश बना। इसका अर्थ यह है कि भारत अब ब्रिटिश साम्राज्य के अधीन नहीं रह गया अर्थात इस पर किसी बाह्य शक्ति का प्रभाव नहीं रह गया। अतः अब यह अपने सभी आंतरिक तथा बाह्य मामलों में निर्णय लेने के लिए स्वतंत्र है।

धर्मनिरपेक्ष राज्य–भारत के लोग विभिन्न धर्मों, यथा इस्लाम, हिंदू, ईसाई, बौद्ध, जैन, सिक्ख आदि के अनुयायी हैं। सांप्रदायिक सौहार्द्र बनाने तथा देश की एकता को कायम करने के लिए भारतीय संविधान की प्रस्तावना में स्पष्ट लिखा गया है कि भारत एक 'धर्मनिरपेक्ष राज्य' है।

गणराज्य–गणराज्य एक ऐसा राज्य होता है, जिसमें सामान्यतया राज्य का प्रधान (राष्ट्रपति) चयनित व्यक्ति होता है। गणतंत्र राजतंत्र से भिन्न होता है। राजतंत्र में राजा वंशानुगत शासक होता है।

लोकतांत्रिक राज्य–परिणाम के अनुसार लोकतंत्र एक ऐसी सरकार है, जो ''लोगों की, लोगों के द्वारा तथा लोगों के लिए'' होती है।

राज्य के समक्ष उद्देश्य–स्वतंत्रता के समय भारत अनेक सामाजिक-आर्थिक समस्याओं से ग्रस्त होने के कारण एक पिछड़ा देश था। देश के सर्वांगीण विकास के लिए लोगों को न्याय, स्वतंत्रता, समानता तथा बंधुत्व प्रदान करना आवश्यक समझा गया। अतः ये सभी उद्देश्य संविधान की प्रस्तावना में उल्लिखित हैं।

न्याय–हमारा समाज अनेक सामाजिक विषमताओं से ग्रस्त है। हमारा संविधान इन सभी विषमताओं को हटाने तथा समाज में कमजोर वर्गों को विभिन्न सुविधाएँ दिलाकर उनके लिए सामाजिक न्याय को सुनिश्चित

करने हेतु प्रतिबद्ध है।

समानता–कानून की दृष्टि में सभी नागरिक समान हैं। धर्म, जाति, लिंग या संपत्ति के आधार पर किसी से कोई भेदभाव नहीं किया जा सकता। सभी व्यक्तियों को समान स्तर, समान अधिकार तथा समान अवसर प्राप्त हैं।

स्वतंत्रता–स्वतंत्रता का सिद्धांत लोकतंत्र का अभिन्न अंग है। भारत के सभी नागरिकों को अपनी इच्छानुसार जीवन-शैली अपनाने की स्वतंत्रता उपलब्ध है।

बंधुत्व–भारत भूमि सांस्कृतिक विविधता से पूर्ण है। विभिन्न प्रदेशों के विभिन्न लोगों के समूहों की अपनी परंपराएँ, भाषाएँ, धर्म तथा संस्कृतियाँ हैं। देश की एकता तथा अखंडता को बनाए रखने के लिए विभिन्न समूहों में बंधुत्व (भाई-चारे) की भावना होना अति आवश्यक है।

4. **कानून एवं विरोध–**अधिकांश कानून अच्छे होते हैं, क्योंकि वे लोगों के कल्याण के लिए होते हैं, किंतु अच्छे कानूनों के साथ-साथ कुछ बुरे कानून भी होते हैं। लोग ऐसे सभी बुरे कानूनों का विरोध करते हैं। अतः इस प्रकार एक अच्छे कानून की स्वीकृति के साथ-साथ एक बुरे कानून का विरोध भी पाया जाता है।

   ब्रिटिश शासन-काल में सरकार ने अनेक अन्यायपूर्ण कानून पारित किए। उदाहरणार्थ 'वर्नाक्युलर प्रेस ऐक्ट' (1878 ई०) ने प्रादेशिक भाषाओं के समाचार-पत्रों पर प्रतिबंध लगाए। सन् 1905 ई० में बंगाल का विभाजन किया गया। सन् 1930 ई० में अन्यायपूर्ण 'नमक कानून' पारित किया गया। गांधी जी ने इसके विरोध में सत्याग्रह किया। नमक का कानून तोड़ने के लिए उन्होंने साबरमती आश्रम से गुजरात के तट पर स्थित डांडी नामक स्थान के लिए यात्रा प्रारंभ की। इसे ही 'डांडी मार्च' के नाम से जाना जाता है। गांधी जी ने डांडी पर समुद्री जल से नमक बनाकर नमक कानून तोड़ा। उनके आह्वान पर लोग सरकार के कानूनों तथा आदेशों का उल्लंघन करने लगे। देश भर में हड़तालें तथा प्रदर्शन हुए। लोगों ने विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार किया तथा कर अदा करने से मना कर दिया। शीघ्र ही यह आंदोलन मजबूत हो गया। सरकार ने आंदोलन तोड़ने के लिए

दमनात्मक नीति अपनाई और कांग्रेस को अवैध घोषित कर दिया गया तथा गांधी जी एवं जवाहरलाल नेहरू सहित सभी प्रमुख कांग्रेसीजन जेल में बंद कर दिए गए। बंदी बनाना, लाठीचार्ज तथा भारी जुर्माना लगाना प्रतिदिन की बात हो गई, किंतु इन दमनकारी उपायों से भी आंदोलन को दबाया नहीं जा सका।

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. धर्म-निरपेक्षता का अर्थ है किसी धर्म विशेष के प्रति झुकाव नहीं रखते हुए सभी धर्मों को समान समझना। दूसरे शब्दों में कहा जाए, यदि कोई राज्य अपनी शासन व्यवस्था में किसी धर्म विशेष के नियमों को स्थान नहीं देता है और न ही धार्मिक व्यक्तियों को देश का शासन चलाने की अनुमति होती है। अतः ऐसा राज्य धर्म निरपेक्ष राज्य कहलाएगा।

2. भारत का संविधान एक कानूनी दस्तावेज है। किसी भी पुस्तक की भाँति इसका भी प्रारंभ एक परिचय या भूमिका से होता है। जिसे 'प्रस्तावना' कहा जाता है।

3. गणतंत्र राज्य एक ऐसा राज्य है जहाँ पर प्रजा का राज होता है। प्रजातंत्र में मताधिकार द्वारा ही राजनीतिक नेता चुना जाता है।

4. एक समाजवादी राज्य वह राज्य होता है, जिसमें सभी को देश की संपदा पर समान अधिकार तथा उससे लाभ प्राप्त करने के सभी को समान अवसर प्राप्त होते हैं।

(ग) अतिलघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. संविधान के निर्माण में 2 साल 11 महीने 18 दिन का समय लगा था।

2. मौलिक अधिकारों वाला खंड भारतीय संविधान की आत्मा कहलाता है।

3. भारत का संविधान एक लिखित और लोकतांत्रिक संविधान है।

(घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

I. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

उत्तर– 1. (iv) इन सभी का 2. (iv) (i) व (ii) दोनों

3. (i) सुनिश्चित तथा स्थाई 4. (i) 1905 ई० में

5. (ii) 1878 ई० में 6. (iii) नमक कानून

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

उत्तर– 1. भारत का संविधान एक कानूनी **दस्तावेज** है।

2. संविधान फ्रांस के संविधान की भाँति **लिखित** भी हो सकता है।

3. संविधान के **1976** संशोधन द्वारा संविधान में कुछ परिवर्तन किए गए।

4. **संविधान** की दृष्टि में सभी नागरिक समान हैं।

5. **संविधान** कानूनी रूप से बाध्यकारी दस्तावेज नहीं है।

III. सही कथन के सामने (✓) तथा गलत के सामने (✗) का चिह्न लगाइए–

उत्तर– 1. (✓) 2. (✓) 3. (✗) 4. (✓) 5. (✗)

परियोजना कार्य

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

2 भारत की विदेश नीति एवं पड़ोसी देशों से संबंध

अभ्यास

(क) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. **भारत और पाकिस्तान के बीच विवाद का मुख्य कारण–**सन् 1947 में ब्रिटिश भारत का विभाजन होने के कारण भारत और पाकिस्तान दो पृथक् राष्ट्र बने। यह विभाजन सांप्रदायिक आधार पर हुआ था। भारत और पाकिस्तान के बीच कटुता का मुख्य कारण कश्मीर समस्या है। पिछले पाँच दशकों में भारत और पाकिस्तान के बीच तीन बार युद्ध हो चुके हैं, परंतु कश्मीर की समस्या हल नहीं हो पाई है। अक्टूबर 1947 में कुछ सशस्त्र जनजातियों ने कश्मीर पर आक्रमण कर दिया। कश्मीर के महाराजा ने भारत से सहायता माँगी और बाद में कश्मीर के महाराजा हरि सिंह ने भारत के साथ कश्मीर के विलय पत्र पर हस्ताक्षर कर दिए। इस प्रकार कश्मीर वैधानिक रूप से भारत का अंग बन गया।

कश्मीर के विवाद को लेकर भारत और पाकिस्तान के बीच पहले 1965 में तथा फिर 1971 में युद्ध हुआ। 1965 के युद्ध में दोनों देशों के

जान-माल की काफी हानि हुई। बाद में संयुक्त राष्ट्र के प्रयास से युद्ध बंद हुआ। इसके बाद भारत और पाकिस्तान के बीच 11 जनवरी, 1966 को ताशकंद समझौता हुआ। जिस पर भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री तथा पाकिस्तान के तत्कालीन राष्ट्रपति अयूब खाँ ने हस्ताक्षर किए। इस समझौते के आधार पर दोनों देशों ने शांतिपूर्ण तरीके से अपने विवादों को निपटाने के लिए सहमति प्रकट की।

2. **गुट-निरपेक्ष आंदोलन–**गुट-निरपेक्षता का अर्थ है 'सैन्य समझौतों और संधि से अपने को दूर रखना'। हालाँकि निर्गुट नीति केवल एक नकारात्मक नीति नहीं है इसमें सार्थक बिंदु भी अंतर्विष्ट हैं। इसका अर्थ है कि सैन्य संधियों पर आपत्ति उठाने वाले राष्ट्र शांति का पक्ष लेना चाहते हैं। द्वितीय विश्व-युद्ध के पश्चात् अमेरिका और सोवियत संघ (अब रूस) दो विश्व की महाशक्तियों के रूप में उभरे। इन महाशक्तियों के बीच शीत युद्ध हुआ। मार्च 1957 में पं० जवाहरलाल नेहरू ने एशिया तथा अफ्रीका के उस समय स्वतंत्र देशों की सामान्य अभिवृत्तियों के लिए अपने गुट-निरपेक्ष सिद्धांत को दिया। उनका समर्थन मार्शल टीटो (यूगोस्लाविया के राष्ट्रपति), सुकर्नो (इंडोनेशिया के राष्ट्रपति) और जी० ए० नासिर (मिस्र के राष्ट्रपति) ने किया। अप्रैल 1955 में इंडोनेशिया (बेबडंग) में एक सम्मेलन आयोजित किया गया तथा एक गुट-निरपेक्ष आंदोलन (NAM) को जन्म देने वाला एक मंच बना। यह गुट-निरपेक्ष आंदोलन के पहले सम्मेलन में अर्थात् सितंबर 1961 में अस्तित्व में आया। यह सम्मेलन बेल्ग्रेड (यूगोस्लाविया) में आयोजित किया गया। इस सम्मेलन में पच्चीस देशों ने भाग लिया तथा पंचशील को स्वीकार किया।

   इस समय 120 देश गुट-निरपेक्ष के सदस्य बन चुके हैं। इसकी सातवीं बैठक बहुत महत्त्वपूर्ण रही है। इस वार्ता को 1983 में नई दिल्ली में श्रीमती इंदिरा गांधी के प्रधानमंत्री काल में आयोजित किया गया। इस शिखर वार्ता में निःशस्त्रीकरण और अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक पद्धति के पुनर्निर्माण पर विशेष बल दिया गया।

3. भारत की विदेश नीति की जड़ों को भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन, गांधीवाद और नेहरू के व्यक्तित्व के प्रभाव में खोजा जा सकता है। भारत की विदेश नीति विश्व की घटनाओं तथा परिस्थितियों के प्रयुत्तर में विकसित हुई है।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के 1938 ई॰ में हुए हरिपुरा अधिवेशन में पड़ोसी देशों के साथ शांति तथा मित्रता की आकांक्षा प्रकट की गई थी। महात्मा गांधी ने अहिंसा, शांति और परस्पर सहयोग के आदर्शों का प्रतिपादन किया। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् पं॰ जवाहरलाल नेहरू 17 वर्षों तक भारत के प्रधानमंत्री एवं विदेश मंत्री रहे, इसलिए उन्हें भारत की विदेश नीति का निर्माता कहा जाता है। उन्होंने अपनी विदेश नीति के पाँच सिद्धांत निश्चित किए, जिन्हें 'पंचशील' के नाम से जाना जाता है।

ये पाँच सिद्धांत हैं–

(i) शांतिपूर्ण सहअस्तित्व की भावना।

(ii) एक-दूसरे के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप न करना।

(iii) अनाक्रमण अर्थात् एक-दूसरे के भू-भाग पर आक्रमण न करना।

(iv) समानता एवं पारस्परिक लाभ।

(v) क्षेत्रीय अखंडता एवं प्रभुसत्ता का सम्मान।

भारत की विदेश नीति इन्हीं सिद्धांतों को ध्यान में रखकर बनाई गई है। ये सिद्धांत सभी विकासशील देशों के लिए मार्गदर्शक सिद्ध हुए। इन सिद्धांतों को अफ्रीका और एशिया के देशों के अप्रैल 1955 में हुए इंडोनेशिया में बांडुंग सम्मेलन में अपनाया गया।

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. गुटनिरपेक्षता के अग्रणी नेताओं के नाम निम्नलिखित हैं–

(i) यूगोस्लाविया के राष्ट्रपति (मार्शल टीटो)

(ii) इंडोनेशिया के राष्ट्रपति (सुकर्नो)

(iii) मिस्र के राष्ट्रपति (जी॰ ए॰ नासिर)

2. कश्मीर के विवाद को लेकर भारत और पाकिस्तान के बीच पहले 1965 में तथा फिर 1971 में युद्ध हुआ। 1965 के युद्ध में दोनों देशों के जान-माल की काफी हानि हुई। बाद में संयुक्त राष्ट्र के प्रयास से युद्ध बंद हुआ। इसके बाद भारत और पाकिस्तान के बीच

11 जनवरी, 1966 ई॰ को ताशकंद समझौता हुआ। जिस पर भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री तथा पाकिस्तान के तत्कालीन राष्ट्रपति अयूब खाँ ने हस्ताक्षर किए।

3. भारत के उत्तर में स्थित नेपाल एक हिमालयी देश है, जहाँ संवैधानिक राजतंत्र स्थापित है। नेपाल का समुद्री व्यापार भारत से होता है। नेपाल एक हिंदू बहुल जनसंख्या वाला देश है अतः इसकी संस्कृति तथा धर्म का भारत से घनिष्ठ संबंध है।

   भूटान एक बहुत छोटा-सा पर्वतीय देश है, जो सिक्किम के पूर्व में स्थित है। भारत भूटान के आंतरिक मामलों में कोई दखलअंदाजी नहीं करेगा, परंतु भारत भूटान को अपने विदेशी मामलों में परामर्श देगा। दोनों के बीच स्वतंत्र व्यापार होगा। भूटानी और भारतीय नागरिकों को एक-दूसरे देश में बराबर सम्मान मिलेगा। नेपाल और भूटान के आर्थिक विकास में भारत पूर्ण सहयोग दे रहा है।

(ग) अतिलघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. नंवबर 2008 में मुंबई में आतंकवादी हमला हुआ।

2. भारत और चीन के बीच 20 अक्टूबर, 1962 ई॰ को युद्ध आरंभ हुआ।
3. भारत और बांग्लादेश के बहुत ही मैत्रीपूर्ण संबंध हैं।

(घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

I. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

उत्तर– 1. (ii) मुक्तिवाहिनी 2. (i) बेलग्रेड में

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

उत्तर– 1. अरुणाचल प्रदेश को पहले **नेफा** प्रांत कहते थे।

2. श्रीलंका में दो जाति वर्ग समूह **सिंहली** और **तमिल** हैं।
3. गुट निरपेक्ष आंदोलन की सबसे पहली बैठक **बेलग्रेड** में **1961** में हुई।
4. भारत और चीन के बीच की सीमा रेखा को **मैकमोहन** रेखा कहते हैं।

(ग) सही कथन के सामने (✓) और गलत के सामने (✗) का चिह्न लगाइए–

उत्तर– 1. (✓) 2. (✗) 3. (✓) 4. (✗) 5. (✓)

परियोजना कार्य

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

3 संयुक्त राष्ट्र संघ

अभ्यास

(क) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. **संयुक्त राष्ट्र संघ–**'संयुक्त राष्ट्र' लीग ऑफ नेशंस का उत्तराधिकारी है। लीग ऑफ नेशंस को 1919 में स्थापित किया गया था लेकिन वह अपने उन लक्ष्यों और उद्देश्यों को प्राप्त करने में असफल रहा, जिसके लिए इसका गठन किया गया था।

संयुक्त राष्ट्र विश्व का एक शीर्ष निकाय है। इसको द्वितीय विश्व-युद्ध के तुरंत बाद गठित किया गया था। इसने 24 अक्टूबर, 1945 में अपना कार्य करना आरंभ किया। संयुक्त राष्ट्र के बारे में जानने से पहले लीग ऑफ नेशंस के बारे में जानना आवश्यक है। लीग ऑफ नेशंस को अंतर्राष्ट्रीय शांति स्थापना के लिए प्रथम विश्व-युद्ध (1914-18) के बाद गठित किया गया था। समूह और शक्ति की राजनीति के कारण यह विश्व के परिदृश्य में शांति कायम रखने में असफल रहा।

संयुक्त राष्ट्र संघ की विशेष संस्थाएँ–संयुक्त राष्ट्र संघ का उद्देश्य वैश्विक शांति एवं सुरक्षा व्यवस्था कायम रखने के साथ-साथ सदस्य राष्ट्रों का आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास करना भी है। इसके लिए कई विशेष संस्थाएँ बनाई गई हैं–

	संस्था का नाम	मुख्यालय
(i)	संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को)	पेरिस
(ii)	अंतर्राष्ट्रीय बाल आपातकालीन कोष (यूनिसेफ)	न्यूयॉर्क
(iii)	विश्व स्वास्थ्य संगठन	जेनेवा
(iv)	खाद्य एवं कृषि संगठन	रोम
(v)	अंतर्राष्ट्रीय मुद्राकोष	वाशिंगटन

(vi)	अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन	जेनेवा
(vii)	पुनर्निर्माण एवं निर्माण का अंतर्राष्ट्रीय बैंक (विश्व बैंक)	वाशिंगटन

2. **भारत में संयुक्त राष्ट्र का योगदान–**भारत, संयुक्त राष्ट्र के खाद्य और कृषि संगठन, यूनेस्को, विश्व स्वास्थ्य संगठन, यू॰ एन॰ डी॰ पी॰, यूनीसेफ, विश्व बैंक जैसे बहुत-से निकायों से अधिक मूल्यवान एवं उपयोगी सहायता प्राप्त कर रहा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने चेचक, हैजा, मलेरिया, क्षयरोग जैसी बीमारियों का उन्मूलन करने में भारत की सहायता की है। खाद्य एवं कृषि संगठन ने उत्तराखंड के कुमाऊँ क्षेत्र में कृषि का विस्तार और राजस्थान में भेड़ तथा मत्स्य संस्थान को भी सहायता दी है। यूनेस्को शिक्षा, विज्ञान, जनसंख्या-नियंत्रण सहित बहुत-सी परियोजनाओं के लिए संयुक्त राष्ट्र विकास कार्य (UNDP) से वित्तीय सहायता प्राप्त कर रहा है।
3. **संयुक्त राष्ट्र संघ के उद्देश्य–**संयुक्त राष्ट्र चार्टर इसका संविधान है। इसमें 10,000 शब्द, 111 धाराएँ तथा 19 अध्याय हैं। इसमें संघ के उद्देश्यों, सिद्धांतों तथा नियमों का उल्लेख है। अनुच्छेद में निम्नलिखित उद्देश्य दिए गए हैं।

   (i) अंतर्राष्ट्रीय शांति तथा सुरक्षा बनाए रखना।

   (ii) राष्ट्रों के मध्य उनके सम्मान, अधिकार और आत्मनिर्णय के आधार पर मैत्रीपूर्ण संबंध बनाए रखना।

   (iii) सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा मानवीय समस्याओं के निवारण एवं मानवीय अधिकारों तथा मानवीय स्वतंत्रताओं को बिना जाति, लिंग, भाषा अथवा धर्म के भेदभाव को प्रोत्साहित करना।

   (iv) उपर्युक्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए, राष्ट्रों के कार्यों में समन्वय रखने के लिए संयुक्त राष्ट्र को केंद्र बनाना।

   अनुच्छेद 2 के अनुसार संस्था तथा उसके सदस्य अनुच्छेद में वर्णित उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु निम्नलिखित सिद्धांतों पर कार्य करेंगे।

   (i) सभी सदस्य देशों की प्रभुता समानता पर आधारित है।

   (ii) सभी सदस्य राष्ट्र घोषणा-पत्र में वर्णित अपने कर्त्तव्यों का निर्वाह करेंगे।

(iii) ये अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा एवं न्याय को खतरे में डाले बगैर अपने अंतर्राष्ट्रीय विवादों के शांतिपूर्ण समाधान खोजने के प्रयास करेंगे।

(iv) सदस्य देश, घोषणा पत्र के अनुरूप ही संयुक्त राष्ट्र संघ को हरसंभव सहायता देंगे।

(v) संयुक्त राष्ट्र किसी सदस्य राष्ट्र के घरेलू मामलों में हस्तक्षेप नहीं करेगा।

(vi) यू॰ एन॰ चार्टर के अनुसार ही अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों को सुलझाने का प्रयास किया जाएगा।

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. संयुक्त राष्ट्र चार्टर के चौथे अध्याय में संयुक्त राष्ट्र महासभा का वर्णन किया गया है। यह एक प्रकार की संसद है जो संयुक्त राष्ट्र का केंद्रीय अंग है। महासभा में संयुक्त राष्ट्र संघ के सभी सदस्य राष्ट्र भाग लेते हैं। प्रत्येक सदस्य राष्ट्र महासभा में अपने पाँच प्रतिनिधि भेज सकता है। सभी प्रतिनिधि संयुक्त राष्ट्र संघ की कार्यवाही में भाग ले सकते हैं किंतु जब मतदान की बात होती है, तो प्रत्येक राष्ट्र केवल एक मत का प्रयोग कर सकता है।

2. सुरक्षा परिषद् में 15 सदस्य होते हैं, जिनमें 5 स्थायी एवं 10 अस्थायी हैं। स्थायी सदस्यों में संयुक्त राज्य अमेरिका, ग्रेट-ब्रिटेन, फ्रांस, रूस एवं चीन शामिल हैं। स्थायी सदस्यों को वीटो पावर मिली हुई है। इसका तात्पर्य है कि यदि एक स्थायी सदस्य किसी प्रस्ताव पर सहमत नहीं है तो यह प्रस्ताव पास नहीं हो सकता। अस्थायी सदस्य प्रति दो वर्ष बाद बदल जाते हैं।

3. **संयुक्त राष्ट्र संघ के विभिन्न अंग–**संयुक्त राष्ट्र संघ के छह प्रमुख अंग हैं–

1. महासभा
2. सुरक्षा परिषद्
3. आर्थिक एवं सामाजिक परिषद्
4. अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय
5. सचिवालय
6. न्याय (संरक्षण) परिषद् और संयुक्त राष्ट्र संघ की संस्थाएँ

4. **अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय–**राष्ट्र संघ के सदस्य देशों के आपसी मतभेदों

को सुलझाने हेतु, अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय की व्यवस्था की गई है। न्यायालय में 15 न्यायाधीश होते हैं, जिनका कार्यकाल नौ वर्ष का होता है। यह न्यायालय हेग (नीदरलैंड) में स्थित है।

सचिवालय–यह संयुक्त राष्ट्र का प्रशासनिक अंग है। यहीं संयुक्त राष्ट्र का दैनिक कार्य संपन्न होता है। इसका प्रमुख अधिकारी महासचिव होता है, जिसे सुरक्षा परिषद् की सिफारिश पर महासभा 5 वर्ष के लिए चुनती है।

(ग) अतिलघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. संयुक्त राष्ट्र संघ के प्रमुख 6 अंग हैं।

2. संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना विश्व स्तर पर सामाजिक राजनैतिक और आर्थिक सहयोग बनाने के लिए की गई।

(घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

I. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

उत्तर– 1. (iii) न्याय परिषद् 2. (ii) जापान

3. (i) विजयलक्ष्मी पंडित 4. (iii) 24 अक्टूबर, 1945 ई॰ को

5. (ii) पाँच

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

उत्तर– 1. मानवाधिकार दिवस **10** दिसंबर को मनाया जाता है।

2. आर्थिक एवं सामाजिक परिषद् में कुल **15** सदस्य होते हैं।

3. वर्तमान में संयुक्त राष्ट्र संघ के सदस्यों की संख्या **192** है।

4. सुरक्षा परिषद् में कुल **15** सदस्य होते हैं।

5. द्वितीय विश्वयुद्ध **(1939-1945)** ईसवी के मध्य लड़ा गया।

III. सही के सामने (✓) और गलत के सामने (✗) का चिह्न लगाइए–

उत्तर– 1. (✗) 2. (✓) 3. (✓) 4. (✗) 5. (✓)

परियोजना कार्य

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

मानचित्र कार्य

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

4 आतंकवाद

अभ्यास

(क) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. भारत के स्वतंत्रता सेनानियों को आतंकवादी कहना अनुचित है, क्योंकि

क्रांतिकारी

(i) इसका उद्देश्य साम्राज्यवाद के विरुद्ध अघोषित युद्ध था।

(ii) इनकी गतिविधियों से निरीह जनता को भयभीत होने की आवश्यकता नहीं होती थी।

(iii) क्रांतिकारी गतिविधियों से सामान्य जन-धन की हानि कम होती थी।

आतंकवादी

(i) इनका उद्देश्य चुनी हुई सरकार को उखाड़ फेंकना होता है। इनका लक्ष्य सामूहिक हित से जुड़ा नहीं होता है।

(ii) अब आतंक पैदा करके निरीह जनता को मारना आतंकवाद का पर्याय बन गया है।

(iii) आतंकवादी हिंसा फैलाकर जन-धन का नुकसान सर्वाधिक करते हैं। ये जनता, राष्ट्रीय संपत्ति को मुख्य निशाना बनाते हैं।

2. **आतंकवाद–**आज का विश्व जिस बड़ी समस्या से जूझ रहा है, वह आतंकवाद की समस्या है। आतंकवाद आज एक भूमंडलीय समस्या बन गया है। कोई भी देश आतंकवाद के भय से मुक्त नहीं है। आतंकवाद का अर्थ है, अपने राजनैतिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए किसी व्यक्ति या सरकार को आतंकित करने के लिए हिंसात्मक कार्यवाही करना। विश्व में सैकड़ों की संख्या में ऐसे आतंकवादी संगठन सक्रिय हैं, जो दुनिया के लगभग सभी भागों में आतंकवादी गतिविधियाँ चलाते हैं। एक प्रकार से यह 21वीं सदी का नया विश्व-युद्ध है। यह ऐसा युद्ध है जो मानवता के विरुद्ध है। आतंकवाद में लोगों को भयभीत करने तथा उनमें डर या खतरे की भावना उत्पन्न करने के उद्देश्य से किसी व्यक्ति विशेष द्वारा की जाने वाली हिंसात्मक कार्यवाही या व्यक्तियों के समूह द्वारा सरकार पर अपनी

माँगें मनवाने के लिए दबाव डालना आदि गतिविधियाँ शामिल होती हैं। आतंकवादी या वे व्यक्ति जो आतंकवादी गतिविधियों को अंजाम देते हैं वे मानवीय जीवन, यहाँ तक कि अपने जीवन की भी पूर्णतः अवहेलना करते हैं। वे निर्दयी, हृदयविहीन एवं भावविहीन किस्म के अपराधी होते हैं। वे गंभीर अपराधों को अंजाम देते हैं तथा बिना किसी प्रकार की आत्मग्लानि की भावना के खून बहाते हैं।

वर्तमान समय के आतंकवाद की परिभाषा इस प्रकार दी जा सकती है, ''आतंकवाद कुछ राजनैतिक फायदों को लेने या सरकार को विशेष प्रयोजन वाले कुछ कदम उठाने को विवश करने के लिए हिंसा, लूट-पाट, अपहरण, कानून और व्यवस्था में बाधा उत्पन्न करना तथा जनशांति में बाधा खड़ी करना है।'' सरल शब्दों में, यह कहा जा सकता है कि आतंकवाद सरकारी नीतियों का विरोध करता है।

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. **नक्सलवादी आतंकवाद–**भारत के कई राज्यों में यह एक गंभीर समस्या है। इसका उद्भव पश्चिम बंगाल से हुआ। वस्तुतः नक्सलवाद एक आंदोलन, एक मिशन है, जिसका मकसद शुरुआती दौर में अपराधों के विरुद्ध आवाज उठाना था। शुरुआत में ये आदिवासियों के द्वारा भू-स्वामियों के विरुद्ध उठाई गई आवाज से जानी जाती है। इससे इनकी आतंकवादी गतिविधियों में कमी आई है, लेकिन आज ये अपने मिशन में भटक गए हैं और जनता में आतंक का वातावरण पैदा कर रहे हैं। इनकी गतिविधियों के बारे में आए दिन हम समाचार-पत्रों में पढ़ते रहते हैं। इनके द्वारा आंध्र प्रदेश के कई इलाकों में की गई आतंकवादी कार्यवाही, छत्तीसगढ़ में 78 जवानों की निर्मम हत्या, जहानाबाद जेल ब्रेक, झारखंड में रेलगाड़ी अपहरण कांड, छत्तीसगढ़ में वाड़ा जेल ब्रेक आदि की घटनाएँ दिल दहला देने वाली हैं। नक्सली आतंक से देश के 16 राज्यों के 182 जिले प्रभावित हैं। बिहार, झारखंड, आंध्र प्रदेश और छत्तीसगढ़ नक्सली आतंक से अति प्रभावित राज्य हैं।

2. वर्तमान समय के आतंकवाद की परिभाषा इस प्रकार दी जा सकती है, ''आतंकवाद कुछ राजनैतिक फायदों को लेने या सरकार को विशेष प्रयोजन वाले कुछ कदम उठाने को विवश करने के लिए हिंसा,

लूट-पाट, अपहरण, कानून और व्यवस्था में बाधा उत्पन्न करना तथा जनशांति में बाधा खड़ी करना है।'' सरल शब्दों में, यह कहा जा सकता है कि आतंकवाद सरकारी नीतियों का विरोध करता है। दबाव गुट की तरह आतंकवादी अपना लक्ष्य पाने के लिए हिंसा के तरीके अपनाते हैं। आतंकवादी कभी-कभी समाज के कुछ वर्गों द्वारा किए जाने वाले कल्याणकारी कार्यों की अवहेलना भी करते हैं।

उदाहरण–जम्मू कश्मीर में होने वाले आतंकवादी हमलों का एक सटीक उदाहरण है।

3. भारत में नक्सलवाद पश्चिम बंगाल से आरंभ हुआ। वस्तुतः नक्सलवाद एक आंदोलन, एक मिशन है, जिसका मकसद शुरुआती दौर में अपराधों के विरुद्ध आवाज उठाना था।

(ग) अतिलघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. भारत में तीन प्रकार की आतंकवादी गतिविधियों को देखा जा सकता है–जातीय विद्रोह, नक्सलवादी आतंकवादी, सांप्रदायिक आतंकवाद।

2. **क्रांतिकारी–**इनकी गतिविधियों से निरीह जनता को भयभीत होने की आवश्यकता नहीं होती थी।

आतंकवादी–अब आतंक पैदा करके निरीह जनता को मारना आतंकवाद का पर्याय बन गया है।

3. आतंकवाद का अर्थ है, अपने राजनैतिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए किसी व्यक्ति या सरकार को आतंकित करने के लिए हिंसात्मक कार्यवाही करना।

(घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

I. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

उत्तर– 1. (ii) ज्वलंत 2. (i) समर्थन 3. (ii) दो दिन तक

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

उत्तर– 1. मुंबई घटना के बाद भारत में **अभिसूचना** एजेंसी की स्थापना की गई।

2. **ब्लैंक टोरंटो** ऑपरेशन के द्वारा मुंबई में आतंकवादियों द्वारा बनाए गए बंधकों को छुड़ाया गया था।

3. भारतीय संसद पर हमला **2001** में किया गया था।

4. नागा समस्या **1985 के** दशक में प्रारम्भ हुई।

III. अंतर स्पष्ट कीजिए–

उत्तर– 1.

जातीय विद्रोह	सांप्रदायिक आतंक
(क) जनजातिय विद्रोह में अपनी पहचान बनाए रखने की प्रवृत्ति होती है।	(क) यह एक प्रकार से सांप्रदायिक अथवा धार्मिक आतंकवाद है।
(ख) ये जनजातियाँ राज्यों की सीमा को लेकर विद्रोह करती हैं।	(ख) धर्म के नाम पर घृणा एवं हिंसा फैलाने वाला यह एक प्रायोजित आतंकवाद है।
(ग) इस प्रकार के जातीय विद्रोह असम, अरुणाचल प्रदेश, त्रिपुरा, नागालैंड, मणिपुर, मिजोरम आदि राज्यों में होते हैं।	(ग) इसका विस्तार समस्त विश्व में है।

2.

क्रांतिकारी	आतंकवादी
(क) इसका उद्देश्य साम्राज्यवाद के विरुद्ध अघोषित युद्ध था।	(क) इनका उद्देश्य चुनी हुई सरकार को उखाड़ फेंकना होता है। इनका लक्ष्य सामूहिक हित से जुड़ा नहीं होता है।
(ख) इनकी गतिविधियों से निरीह जनता को भयभीत होने की आवश्यकता नहीं होती थी।	(ख) अब आतंक पैदा करके निरीह जनता को मारना आतंकवाद का पर्याय बन गया है।
(ग) क्रांतिकारी गतिविधियों से सामान्य जन-धन की हानि कम होती थी।	(ग) आतंकवादी हिंसा फैलाकर जन-धन का नुकसान सर्वाधिक करते हैं। ये जनता, राष्ट्रीय संपत्ति को मुख्य निशाना बनाते हैं।

3.

विद्रोह	आतंकवाद
(क) विद्रोह राष्ट्र की सीमा के अंदर तथा निर्वाचित सरकार के खिलाफ होता है।	(क) आतंकवाद राष्ट्र की सीमा पार कर अन्य देशों के विरुद्ध ही एकता है।
(ख) विद्रोह से राज्य के अंदर ही असुरक्षा का वातावरण उत्पन्न होता है।	(ख) आतंकवाद देश में असुरक्षा का वातावरण उत्पन्न करता है।

परियोजना कार्य

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

इकाई-4 : पर्यावरण

1 मानव पर्यावरण : बस्तियाँ, परिवहन एवं संचार

अभ्यास

(क) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. **प्रारंभिक बस्तियाँ–**मानव बस्तियाँ सर्वप्रथम नदियों के किनारे पाई गई हैं। इन बस्तियों को कभी-कभी 'वेट-प्वाइंट सेटिलमेंट्स' भी कहते हैं, क्योंकि इन्हें लोगों ने जल स्रोतों के आस-पास ही बनाया।

प्राचीन मानव ने नदी घाटियों में ही अपनी बस्तियाँ बनाईं, क्योंकि फसलों की सिंचाई के लिए जल की आवश्यकता होती थी और नदी घाटी के समीप की मिट्टी भी उपजाऊ होती थी। ये लोग यातायात के लिए भी नदी का प्रयोग करते थे। प्राचीन बस्तियाँ छोटे-छोटे गाँवों के रूप में थीं।

बस्तियों का विकास–समय व्यतीत होने के साथ-साथ उन्होंने मिट्टी, बाँस, लकड़ी और घास-फूस की झोपड़ियाँ बनानी प्रारंभ कर दीं। इस प्रकार के घर प्राकृतिक आपदाओं को सहन नहीं कर सकते थे। तेज हवा या वर्षा आने पर इन घरों की छतें उड़ जाती थीं अथवा टूट जाती थीं। कई शताब्दियों के पश्चात् जब मानव ने आग की तथा धातु की खोज की तो उनमें ईंटों, पत्थरों, लकड़ी, सीमेंट और लोहे के पक्के घरों का निर्माण करना प्रारंभ कर दिया। इसके कारण बड़ी बस्तियों

का निर्माण हुआ, जिन्हें 'शहर' या 'नगर' कहा जाता है। पक्के घरों में कई कमरे होते हैं; जैसे–सोने का कमरा, मेहमानों का कमरा, स्नानघर, खाना पकाने के लिए तथा सामान रखने के लिए भंडार-गृह इत्यादि।

2. **सड़क–**सड़कें पक्की ईंटों, सीमेंट और तारकोल से बनाई जाती हैं। ये सभी मौसमों में उपयुक्त होती हैं। भारत के सभी शहर, नगर तथा कई गाँव इन्हीं सड़कों के कारण एक-दूसरे से जुड़े हैं।

   सड़क यातायात सबसे लोकप्रिय यातायात का साधन है। इससे घरों तक पहुँचने की सुविधा है। सड़कों का निर्माण रेलमार्ग की तुलना में कम खर्चीला तथा आसान है। सड़कें पहाड़ी क्षेत्रों में भी बनाई जा सकती हैं परंतु अधिक दूरी के लिए सड़क यातायात इतना सुविधाजनक नहीं है जितना रेल यातायात।

   अधिक चौड़ी सड़कें जिन पर एक साथ कई वाहन तेजगति से दौड़ सकते हैं 'महामार्ग' या 'एक्सप्रेस हाई-वे' कहलाते हैं। भारत के बड़े शहर; जैसे–मुंबई, कोलकाता, दिल्ली, चेन्नई आदि महामार्गों द्वारा आपस में जुड़े हैं।

   रेलमार्ग–यह भूमि पर यातायात का दूसरा प्रमुख साधन है। रेलगाड़ी एक साथ हजारों लोगों को यात्रा करवाती है। यह सड़क मार्ग से अधिक तेज और सस्ती है। इसके द्वारा लंबी दूरी तक यात्रा करना सरल है। रेलगाड़ी करोड़ों टन सामान एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाती है। रेलमार्गों के निर्माण में अधिक व्यय आता है तथा रेल की पटरी बिछाने में अधिक कुशलता की भी आवश्यकता होती है। इससे घरों तक पहुँचने की सुविधा नहीं प्राप्त हो सकती, क्योंकि रेलगाड़ी केवल रेलवे स्टेशन पर ही रुकती है। आजकल कई देशों में अब तो भारत (दिल्ली ओर कोलकाता) में भी भूमिगत रेलगाड़ी चलनी प्रारंभ हो गई है, जिसे 'मैट्रो' कहते हैं। भूमिगत रेलगाड़ी का उपयोग यह है कि यह शहर के प्रदूषणरहित वातावरण तथा भीड़-भाड़ से दूर होती है। यह रेलगाड़ी बिजली से चलती है। पहले रेलगाड़ी को चलाने के लिए कोयले का प्रयोग किया जाता था, परंतु अब डीजल इंजन ने कोयला इंजन का स्थान ले लिया है।

3. **जल परिवहन–**जल यातायात का सबसे सस्ता साधन है, क्योंकि इसके लिए पानी में पटरियाँ नहीं बिछानी पड़तीं और न ही सड़कें बनानी पड़ती हैं। नदी, नहर, झील, सागर का प्रयोग जल यातायात के लिए होता है। जल परिवहन सबसे प्राचीन यातायात का साधन है। आजकल नाव, स्टीमर और जहाज बहुत-से यात्रियों तथा सामान को ले जाते हैं। इनमें से अधिकतर इंजन से चलते हैं; अतः उनकी गति काफी तेज होती है। बहुत-से जहाज व्यापारिक सामान को एक देश से दूसरे देश तक ले जाते हैं। अधिकतर अंतर्राष्ट्रीय व्यापार जलमार्ग से होकर जहाजों द्वारा होता है।

   वायुमार्ग–यातायात के साधनों के क्षेत्र में यह सबसे आधुनिक साधन है। मानव पक्षी की तरह आकाश में उड़ना चाहता था; अतः उसने पक्षी की तरह उड़ने के लिए किसी वस्तु का आविष्कार करना चाहा। हवाई जहाज के आविष्कार ने सारे संसार को समीप कर दिया। आप हवाई जहाज से कुछ घंटों में ही कई हजारों किलोमीटर की दूरी तय कर सकते हैं। आप 24 घंटों में पूरा संसार घूम सकते हैं, परंतु यह सबसे महँगा यातायात का साधन है क्योंकि इसके लिए अत्यधिक मात्रा में तेल (ईंधन) का प्रयोग होता है और यह तेल बहुत महँगा होता है। दूसरा यह कि हवाई यात्रा के दौरान अन्य सुविधाएँ; जैसे–भोजन, पेय-पदार्थ तथा आने-जाने के दौरान होटल में रहना मुफ्त होता है। हवाई जहाज में सामान भी ढोया जाता है। इनको सामान वाहक जहाज कहते हैं।

4. **संचार के साधन–**यातायात के साधनों द्वारा लोगों तथा सामान को एक स्थान से दूसरे स्थान तक या एक देश से दूसरे देश तक भेजा जाता है। जबकि संचार के साधनों; जैसे–पत्र, टेलीफोन, टेलीग्राफ, बेतार, रेडियो, टेलीविजन और अखबारों द्वारा संदेश एक व्यक्ति से अन्य व्यक्तियों तक भेजा जाता है। संदेश कभी-कभी एक व्यक्ति या कभी-कभी बहुत सारे व्यक्तियों को एक-साथ भेजा जाता है।

   संचार के साधनों को दो वर्गों में बाँटा जा सकता है–

   (i) व्यक्तिगत संचार के साधन,

   (ii) जनसंचार के साधन।

पत्र, टेलीफोन और टेलीग्राम इत्यादि व्यक्तिगत संचार के साधन हैं। आजकल फैक्स मशीन और इंटरनेट (कंप्यूटर) का प्रयोग भी व्यक्तिगत संचार के साधनों के रूप में किया जाता है। रेडियो, टेलीविजन और अखबार जनसंचार के साधन हैं। सिनेमा सबसे महत्त्वपूर्ण जनसंचार का साधन है, क्योंकि यह देश की संस्कृति को दर्शाता है।

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. प्राचीन काल में मानव ने मिट्टी, बाँस, लकड़ी और घास-फूस की झोपड़ियाँ बनानी प्रारंभ कर दीं। इस प्रकार के घर प्राकृतिक आपदाओं को सहन नहीं कर सकते थे। तेज हवा या वर्षा आने पर इन घरों की छतें उड़ जाती थीं या टूट जाती थीं।

2. बहुमंजिला इमारतों के बनाने का मुख्य कारण स्थान की कमी होना है। कुछ बड़े घरों को 'बंगला' भी कहा जाता है। इनमें घर के सामने के भाग में बड़े-बड़े बगीचे 'लान' होते हैं।

3. भूमिगत रेलगाड़ी का उपयोग यह है कि यह शहर के प्रदूषणरहित वातावरण तथा भीड़-भाड़ से दूर होती है। यह रेलगाड़ी बिजली से चलती है। पहले रेलगाड़ी को चलाने के लिए कोयले का प्रयोग किया जाता है, परंतु अब डीजल इंजन ने कोयला इंजन का स्थान ले लिया है।

4. पत्र, टेलीफोन और टेलीग्राम इत्यादि व्यक्तिगत संचार के साधन हैं, और रेडियो, टेलीविजन तथा अखबार जनसंचार के सामूहिक साधन हैं।

(ग) अतिलघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. मानव बस्तियों को कभी-कभी 'प्वाइंट सेटिलमेंट्स' भी कहते हैं।

2. बस्तियों से हमारा आशय यह है कि जहाँ पर एक साथ लोगों का एक समूह रहता है, बस्तियाँ कहलाती हैं।

3. राफ्ट एक प्रकार का बेड़ा होता है, जिसका प्रयोग जलमार्ग को पार करने के लिए होता है।

(घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

I. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

उत्तर– 1. (iv) उपर्युक्त सभी 2. (ii) भूमिगत रेलवे

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

उत्तर– 1. पाइपलाइन का प्रयोग **तेल** और **प्राकृतिक गैस** के परिवहन के लिए किया जाता है।

2. सामान ले जाने वाले जहाज को **मालवाहक** जहाज कहते हैं।

3. भारत में भूमिगत रेलमार्ग **दिल्ली** और **कोलकाता** में बनाए गए हैं।

4. **रेल** परिवहन का सबसे सस्ता साधन है।

III. सही कथन के सामने (✓) तथा गलत कथन के सामने (✗) का चिह्न लगाइए–

उत्तर– 1. (✗) 2. (✗) 3. (✗) 4. (✓)

परियोजना कार्य

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

2 पर्यावरण का ह्रास

अभ्यास

(क) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. **पर्यावरण–**सौरमंडल में पृथ्वी ही एक ऐसा ग्रह है, जिस पर जीवन है। जैवमंडल, स्थलमंडल, जलमंडल एवं वायुमंडल से बने संकीर्ण क्षेत्र में पाया जाता है। जीवधारियों एवं पेड़-पौधों के लिए भूमि, जल और वायु की आवश्यकता होती है। जिन परिस्थितियों में विभिन्न जीवधारी एवं पेड़-पौधे रहते हैं, उन्हें पर्यावरण कहा जाता है। पर्यावरण प्राकृतिक एवं मानव-निर्मित होता है। प्राकृतिक पर्यावरण के अंतर्गत भूमि, जल, वायु, चट्टानों, मृदा, सूर्य का प्रकाश, प्राकृतिक वनस्पति तथा जंगली जीव-जंतु आते हैं।

अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए मानव प्राकृतिक पर्यावरण में परिवर्तन करता रहता है। कभी-कभी ये परिवर्तन पर्यावरण को हानि पहुँचाते हैं। उदाहरण के लिए खनिज ऊर्जा के अधिक प्रयोग से वायु प्रदूषण होता है। वाहनों एवं फैक्ट्रियों की चिमनियों से निकलने वाले

धुएँ से वायु में कार्बन डाइ-ऑक्साइड की मात्रा बढ़ जाती है, जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।

2. **प्राकृतिक संसाधनों का ह्रास–**प्रकृति ने जो संसाधन हमें दिए हैं, उनमें से कुछ संसाधन ऐसे हैं जिनका नवीनीकरण नहीं किया जा सकता; जैसे–सभी प्रकार के खनिज अनवीकरणीय संसाधन हैं। इनकी मात्रा भूमि में सीमित है।

   नवीकरणीय संसाधनों जैसे जल, मृदा, प्राकृतिक वनस्पति का प्रयोग भी सावधानी से करना चाहिए क्योंकि ये भी हमें सीमित मात्रा में उपलब्ध हैं। उदाहरण के लिए जलाने के लिए जंगलों से लकड़ी काटना पेड़ों का दुरुपयोग है। खेती के गलत तरीके अपनाना मृदा का दुरुपयोग है। जल का भी हमें सावधानी से प्रयोग करना चाहिए क्योंकि जल की माँग दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है, परंतु इसकी मात्रा सीमित है।

   खनिज एवं ऊर्जा संसाधन का ह्रास–खनिज एवं ऊर्जा के अधिकतर संसाधन अनवीकरणीय होते हैं। औद्योगिक उन्नति के लिए खनिज एवं ऊर्जा के संसाधनों का अधिक-से-अधिक उपयोग किया जाता है। खनिजों के ज्ञात भंडार एवं उनके उपयोग के आधार पर विभिन्न धात्विक अयस्कों का जीवनकाल निश्चित है। उदाहरण के लिए एल्युमीनियम 330 वर्ष, लोहा 120 वर्ष, निकिल 75 वर्ष, क्रोमियम 75 वर्ष, मैंगनीज 70 वर्ष, ताँबा 65 वर्ष, कोबाल्ट 50 वर्ष, प्लैटिनम 45 वर्ष, सोना 30 वर्ष, जस्ता 30 वर्ष तथा सीसा 20 वर्ष आदि का जीवनकाल निश्चित है। उनके विवेकपूर्ण उपयोग खनिजों की आयु में वृद्धि और पुनर्चक्रण आदि के द्वारा संभव है। ऐसा करने से ये खनिज भावी पीढ़ियों को भी मिल सकेंगे वरन् ये समाप्त हो जाएँगे।

   वन एवं जंगली जीव-जंतु–अब भूमि के लगभग एक-तिहाई भाग पर वन हैं, परंतु एक समय था जब भूमि का लगभग इससे दुगुना भाग वनों से आच्छादित था। वनों के अंतर्गत भूमि का क्षेत्र कम होने का मुख्य कारण जनसंख्या वृद्धि है, क्योंकि जनसंख्या की वृद्धि के कारण जंगलों को साफ करके भूमि का प्रयोग खेती करने, मकान बनाने तथा सड़क एवं रेलमार्ग बनाने के लिए किया जा रहा है।

3. **पर्यावरण के ह्रास को नियंत्रित करने के उपाय–**

(i) कृषि एवं औद्योगिक कूड़े-कचरे का पुनः प्रयोग करना। इस कूड़े-कचरे से ऊर्जा उत्पन्न की जा सकती है।

(ii) अनवीकरणीय संसाधनों के स्थान पर जितना अधिक संभव हो, नवीकरणीय संसाधन का प्रयोग करना।

(iii) वाहनों में प्रयोग होने वाले पेट्रोल से हानिकारक गैस निकालकर उसका प्रयोग करना।

(iv) ऊर्जा के परंपरागत स्रोतों; जैसे–कोयला, खनिज आदि के स्थान पर गैर-परंपरागत स्रोतों; जैसे–सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, जल ऊर्जा आदि का प्रयोग करना।

(v) प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करना और उनके दुरुपयोग को रोकना।

(vi) गंदे पानी एवं कूड़े कचरे के निवारण की उचित व्यवस्था करना।

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. आजकल कहीं-कहीं खेती में मल-जल द्वारा सिंचाई की जाती है। मल-जल के अत्यधिक प्रयोग से मृदा के छिद्रों की संख्या लगातार घटती चली जा रही है, जिससे एक समय में मृदा पूर्णरूप से लुप्त हो जाएगी। लोग अपने घरों की गंदगी इसी में मिला देते हैं, जिससे भूमि पर मृदा प्रदूषण बढ़ता जा रहा है।

2. कूड़ा-कचरा फेंकने से भूमि प्रदूषण होता है। यह कूड़ा-कचरा मकानों, व्यापारिक केन्द्रों तथा उद्योंगों से निकलता है। कीटनाशकों, पीड़ानाशकों के निर्माण में प्रयुक्त विषैले रासायनिक पदार्थ भी भूमि की गुणवत्ता को हानि पहुँचाते हैं तथा मानव के लिए परोक्ष रूप से हानिकारक हैं। ऐसे पदार्थ भोजन के साथ मिलकर मानव शरीर में पहुँच जाते हैं और उसके स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव डालते हैं।

3. वायु प्रदूषण का मुख्य कारण उद्योगों एवं वाहनों से निकले हुए हानिकारक तत्व हैं जो वायु में मिलकर वायु को प्रदूषित करते हैं। इससे साँस संबंधी रोग हो जाते हैं। वायुमंडल की ओजोन पर्त जो सूर्य की हानिकारक किरणों से हमारी रक्षा करती है, वायु प्रदूषण से उसका रिक्तिकरण हो रहा है। वायु प्रदूषण से हमारे नेत्र एवं खाल

प्रभावित होते हैं।

(ग) अतिलघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. जिन परिस्थितियों में जीवधारी तथा पेड़-पौधे रहते हैं, उन्हें उनका पर्यावरण कहा जाता है।

2. अंधाधुंध मानवीय कार्यकलाप, निर्वनीकरण, भूमि की अधिक चराई, अधिक जुताई, खनन व भवनों तथा परिवहन मार्गों का निर्माण आदि मृदा अपक्षय के कारण हैं।

3. समुद्रों के प्रदूषण का एक गंभीर कारण है तेल। तेल समुद्र के पानी पर एक तह बना लेता है, जिससे पक्षी, जलीय वनस्पति एवं जलीय जीव-जंतु मर जाते हैं तथा तटों पर फैलकर उन्हें गंदा करता है। अधिकतर पवित्र नदियाँ अब नगर की नालियों द्वारा छोड़े जा रहे प्रदूषकों की इतनी अधिक मात्रा को साफ करने की स्थिति में नहीं रही हैं।

(घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

I. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

उत्तर– 1. (i) 90 2. (ii) जल

3. (i) अनवीकरणीय

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

उत्तर– 1. हमें पर्यावरण के ह्रास एवं प्रदूषण को रोकने के लिए विभिन्न **प्रयास** करने चाहिए।

2. **वायु प्रदूषण** के कारण साँस संबंधी रोग हो जाते हैं।

3. वायु में **कार्बन डाइ-ऑक्साइड** गैस की मात्रा बढ़ जाने से प्रदूषण होता है।

III. सही कथन के सामने (✓) और गलत के सामने (✗) का चिह्न लगाइए–

उत्तर– 1. (✓) 2. (✗) 3. (✗) 4. (✓)

परियोजना कार्य

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

Notes

Notes

Notes